सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 45, नई दिल्ली । शुक्रवार, 25 अप्रैल 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सत्य बोलकर मित्र बनाना अच्छा है, परन्तु झूठ बेलकर मित्र बनाने से सत्य बोलकर शत्रु बनाना अधिक अच्छा है, क्योंकि आप संसार में सबको एक साथ प्रसन्न नहीं कर सकते।

03 पहलगाम आतंकी हमला: राजनीति करने का अवसर नहीं

06 बदलती जीवन शैली से संकटमय पशु आबादी

08 अपने जीवन में स्वर्ग का अनुभव करो : प्रेम रावत

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र के द्वितीय सम्मान समारोह में सम्मान प्राप्त करने के लिए नीचे दिए गए गूगल फार्म को भरकर जमा करे। आपके फार्म जमा करने के बाद जूरी द्वारा जांच कर आपको ईमेल/व्हाट्सएप से सम्मान समारोह का निमंत्रण भेजा जाएगा।

https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSeK5Go2e5KD4m1v82E-oGAISA7BAXqX5hTm31j9OLZG4fifCA/viewform?usp=dialog

सम्मान हेतु योग्यता।।

परिवहन, सड़क सुरक्षा, प्रदुषण नियंत्रण, महिला सुरक्षा एवं अन्य किसी भी श्रेणी/क्षेत्र में आप जनहित में कार्य कर रहे है या करते है तो आप परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र के द्वितीय सम्मान समारोह में अपना सम्मान प्राप्त करने के लिए ... अपना परिचय, कार्य शैली, कार्य क्षेत्र एवं किस आधार पर सम्मान प्राप्त करने में योग्य हैं।

transportvisheshcontent@gmail.com Switch account

The name, email, and photo associated with your Google account will be recorded when you upload files and submit this form

* Indicates required question

अधिकृत मानदंड *

- नाम
- संस्था
- ट्रस्ट
- अन्य
- Other:

आपका या संस्थान परिचय *

Your answer

सम्मान श्रेणियां *

- परिवहन
- महिला सुरक्षा
- सड़क सुरक्षा
- प्रदूषण नियंत्रण
- लेखाकार
- कवि
- कवित्री
- प्रदूषण मुक्त वाहन निर्माता (इलेक्ट्रिक वाहन)
- सुरक्षा नियंत्रित उपकरण निर्माता
- वाहन स्क्रैप डीलर
- उग्रवाद सुरक्षा जागृति
- पत्रकार
- ऐंकर
- Other:

परिचय पत्र (आधार अंक या पंजीकरण प्रमाण पत्र) *

Upload 1 supported file. Max 10 MB.

Add file

आपके द्वारा लागू किया जा रहे मानदंडों को साबित करने के लिए साक्ष्य *

Upload 1 supported file. Max 10 MB.

Add file

परिवहन सम्मान श्रेणियां *

- सार्वजनिक सेवा
- छात्र वाहन सेवा
- यात्री बस सेवा
- यात्री कार सेवा
- लॉजिस्टिक सेवा
- ड्राइवर कल्याण सेवा
- बस कल्याण सेवा
- लॉजिस्टिक्स कल्याण सेवा
- N.A. (अगर आप किसी ओर श्रेणी से भाग ले रहे हैं)
- Other:

Submit Clear form

1 नवंबर से राजधानी दिल्ली में बीएस-6 से कम मानक वाले वाणिज्यिक वाहनों का प्रवेश होगा प्रतिबंधित

संजय बाटला

वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग ने दिल्ली में बाहरी राज्यों के डीजल वाहनों के प्रवेश पर सख्ती बढ़ा दी है। 1 नवंबर से बीएस-6 से कम मानक वाले वाणिज्यिक वाहनों का प्रवेश प्रतिबंधित होगा। बीएस-4 सीएनजी एलएनजी या इलेक्ट्रिक वाहनों को ही अनुमति मिलेगी। आवश्यक सेवाओं में लगे वाहनों को छूट मिलेगी लेकिन 2026 के बाद उन्हें भी बीएस-4 मानकों का पालन करना होगा।

नईदिल्ली। वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) ने दिल्ली के बाहर पंजीकृत वाणिज्यिक वाहनों के दिल्ली में प्रवेश पर प्रतिबंध कड़े कर दिए हैं। इसने एक नवंबर से दिल्ली में बीएस-6 डीजल मानक से नीचे के सभी परिवहन और वाणिज्यिक माल वाहनों के प्रवेश पर सख्त प्रतिबंध लगाने का आदेश दिया है।

इन वाहनों को मिलेगी प्रवेश की अनुमति

आयोग ने कहा है कि एक नवंबर से केवल ऐसे हल्के, मध्यम और भारी माल और सेवा वाहनों को ही दिल्ली में प्रवेश की अनुमति होगी जो बीएस-4 मानक के साथ सीएनजी, एलएनजी या इलेक्ट्रिक से संचालित होंगे।

आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं में लगे ऐसे वाहनों को थोड़े समय के लिए छूट दी जाएगी। लेकिन, 31 अक्तूबर 2026 के बाद इन आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं में लगे वाहनों को भी दिल्ली में तभी प्रवेश की अनुमति मिलेगी जब वे बीएस फोर सीएनजी, एलएनजी या इलेक्ट्रिक से चलेंगे।

इन वाहनों को नहीं मिलेगी ईंधन

आयोग ने एक जुलाई से दिल्ली में अपनी उम्र पूरी कर चुके वाहनों के ईंधन पर भी रोक लगा दी है। आयोग ने अपने आदेश में कहा कि इसके अलावा बीएस-6 डीजल, सीएनजी, एलएनजी और इलेक्ट्रिक माल वाहनों को अनुमति दी जाएगी। इन वाहनों में हल्के माल वाहन (एलजीवी), मध्यम माल वाहन (एमजीवी) और भारी माल वाहन (एचजीवी) शामिल हैं, सिर्फ इन्हीं को दिल्ली में प्रवेश की अनुमति होगी।

यातायात पुलिस को निर्देश

आयोग ने दिल्ली और पड़ोसी राज्यों के परिवहन विभागों और यातायात पुलिस को निर्देश दिया है कि वे सभी 126 सीमा प्रवेश बिंदुओं और स्वचालित नंबर प्लेट पहचान कैमरों से लैस 52 टोल प्लाजा पर इस आदेश का कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित करें। सीएक्यूएम ने कहा कि सभी कार्यान्वयन एजेंसियों को तिमाही अनुपालन रिपोर्ट प्रस्तुत करनी होगी।

इसी तरह एक जुलाई से दिल्ली में अपनी आयु पूरी कर चुके वाहनों को ईंधन नहीं मिलेगा। आयोग ने 30 जून तक दिल्ली के सभी पेट्रोल पंपों पर ऐसे विशेष क्षमता वाले कैमरे लगाने के निर्देश दिए हैं। इन कैमरों के जरिए ऐसे वाहनों की पहचान की जाएगी जो निर्धारित समय अवधि पूरी कर चुके हैं।

ऐसे वाहनों को ईंधन नहीं दिया जाएगा। आयोग ने दिल्ली के अलावा एनसीआर के जिलों के लिए भी इसी तरह के निर्देश के लिए अलग-अलग समय अवधि तय की है। आयोग के मुताबिक दिल्ली से सटे पांच जिलों गुरुग्राम, फरीदाबाद, गाजियाबाद, गौतमबुद्ध नगर और सोनीपत, जहां वाहनों की संख्या ज्यादा है, वहां 31 अक्टूबर तक ऐसे कैमरे लगा दिए जाएं और एक नवंबर से यहां ऐसे वाहनों को ईंधन न दिया जाए।

जबकि एनसीआर के अन्य जिलों में 31 मार्च 2026 तक ऐसे कैमरे लगा दिए जाएं और एक अप्रैल 2026 से ईंधन देने पर रोक लगा दी जाएगी।

आयोग ने अपने निर्देश में कहा है कि मार्च 2025 में दिल्ली में निर्धारित समय अवधि पूरी करने वाले वाहनों की संख्या 61 लाख 14 हजार 728 थी। जबकि, हरियाणा के एनसीआर जिलों में ऐसे वाहनों की संख्या 27 लाख 50 हजार 152 थी। इसी तरह, उत्तर प्रदेश के एनसीआर जिलों में 12 लाख 69 हजार 598 और राजस्थान में छह लाख 20 हजार 962 वाहन थे।

इन वाहनों के संचालन पर रोक लगाने की कार्रवाई काफी हल्की रही है। जैसे, दिल्ली में वर्ष 2023 में 22 हजार 397 और वर्ष 2024 में 39 हजार 273 वाहनों के खिलाफ कार्रवाई की गई। अन्य राज्यों में भी ऐसे वाहनों के खिलाफ कार्रवाई धीमी है। इसे देखते हुए आयोग ने अब इन वाहनों को ईंधन की आपूर्ति रोकने की प्रक्रिया शुरू कर दी है।

गर्मी में बस यात्रियों का बुरा हाल

1,400 बस स्टॉप पर कब मिलेगी ये सुविधा?

दिल्ली के 1400 बस स्टॉप पर यात्रियों को गर्मी और बारिश से बचने के लिए शेल्टर नहीं हैं। इस कारण यात्रियों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है। सरकार चाहती है कि इस योजना पर पीपीपी (पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप) मोड में काम किया जाए मगर इस व्यवस्था के तहत निजी कंपनियां आने को तैयार नहीं हैं।

नईदिल्ली। दिल्ली के 1,400 बस स्टॉप पर शेल्टर बनाकर उनके रखरखाव की योजना पिछले 10 साल से ठंडे बस्ते में है। इस कारण यात्रियों को गर्मी में तेज धूप और मानसून सीजन में वर्षा से परेशानी झेलनी पड़ती है। सरकार चाहती है कि इस योजना पर पीपीपी (पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप) मोड में काम किया जाए, मगर इस व्यवस्था के तहत निजी कंपनियां आने को तैयार नहीं हैं।

यही कारण है कि पूर्व की आप सरकार में योजना आगे नहीं बढ़ सकी। इसे दिल्ली परिवहन विभाग के तहत दिल्ली परिवहन ढांचागत विकास निगम लिमिटेड (डीटीआइडीसी) देखता है। इस बारे में परिवहन मंत्री डा. पंकज सिंह से बात करने की कोशिश की गई, मगर संपर्क नहीं हो सका।

क्या बोले वरिष्ठ अधिकारी?

परिवहन विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी का कहना है कि इस परियोजना पर काम तभी हो सकता है, जब सरकार इसके लिए राशि दे। उन्होंने कहा कि इसे लेकर सरकार के सामने बात रखी जाएगी। पिछली आप सरकार की बात करें, तो पिछले 10 वर्षों में इस प्रस्ताव को सरकार के पास से कई बार लौटाया गया।

रखरखाव करने को तैयार नहीं

उनकी मानें तो आप सरकार चाहती थी कि पीपीपी मोड से इन बस स्टॉप पर शेल्टर बनाए जाएं, निजी कंपनियां अपना पैसा लगाएं और इनका रखरखाव करें और सरकार को भी कुछ राजस्व दें, मगर अधिकतर बस स्टॉप ऐसे स्थान पर हैं, जो ग्रामीण या पिछड़े इलाकों में है। निजी कंपनियां ऐसे स्टॉप पर शेल्टर लगाकर उनका रखरखाव करने को तैयार नहीं हैं। उनकी नजर में यह घाटे का सौदा हो सकता है।

नई सरकार को हुए अभी दो महीने

सूत्रों की मानें, तो इन्हें बनाने का तरीका यही है कि सरकार ग्रामीण और पिछडे.इलाकों के शेल्टर को तैयार करे। अगर ऐसा नहीं किया जाता है, तो आने वाले समय में भी जनता को बस के लिए सड़क के किनारे धूप और वर्षा में खड़े होकर ही बस का इंतजार करना पड़ सकता है। अब देखना यह है कि वर्तमान सरकार इस बारे में अभी कितनी रुचि दिखाती है। अभी सरकार को दो महीने का समय हुआ है और ऐसे में एकाएक बहुत सी जिम्मेदारियां भी सरकार पर आई हैं, मगर आने वाले दिनों में इस बारे में यह देखना जरूरी होगा कि सरकार इस ओर और कितना ध्यान देती है।

178 बस स्टाप पर शेल्टर बनाने का टेंडर निकाला

डीटीआइडीसी ने फिलहाल 178 बस स्टाप पर शेल्टर बनाने व चलाने के लिए टेंडर जारी किए हैं। ये वे बस स्टाप हैं, जहां पर शेल्टर बने हुए हैं। कुछ के टेंडर का समय समाप्त हो गया है या कुछ टूट-फूट गए हैं। कंपनियां बस स्टाप पर शेल्टर लगाने के साथ प्रय उनके रखरखाव का भी काम करेंगी। कंपनिया विज्ञापन से खर्च निकालेंगी और सरकार को राजस्व भी देंगी।

क्या है पीपीपी

मोड पीपीपी मोड एक व्यवस्था है, जिसमें सरकार और निजी क्षेत्र की कंपनियां मिलकर सार्वजनिक बुनियादी ढांचे और सेवाओं का निर्माण व संचालन करते हैं। यह एक समझौता है, जिसके तहत निजी क्षेत्र सरकार की परियोजनाओं में निवेश करता है और बदले में परियोजनाओं से होने वाली आय का एक हिस्सा प्राप्त करता है।

जम्मू-कश्मीर में फंसे यात्रियों के लिए खास इंतजाम, रेलवे ने उठाया अहम कदम; हर कोई सुरक्षित पहुंचेगा घर

नई दिल्ली। पहलगाम में आतंकी हमले के बाद जम्मू-कश्मीर में फंसे हुए यात्रियों को गंतव्य तक पहुंचाने के लिए रेलवे ने कई कदम उठाए गए हैं। रेलवे स्टेशनों पर हेल्पलाइन नंबर जारी करने के साथ ही स्पेशल ट्रेनें चलाई जा रही है। श्री माता वैष्णों देवी कटड़ा व जम्मू तवी रेलवे स्टेशन पर वार रूम स्थापित किया गया है। यात्रियों की मदद के लिए रेलवे स्टेशनों पर अतिरिक्त रेलवे कर्मियों को तैनात किया गया है। जम्मू तवी रेलवे स्टेशन पर टिकट चेकिंग स्टाफ ने विभिन्न ट्रेनों में 165 फंसे हुए पर्यटकों को स्थान उपलब्ध कराया है। ठहराकर असाधारण कार्य किया। बलिदानी कैप्टन तुषार महाजन ऊधमपुर रेलवे स्टेशन से भी फंसे हुए यात्रियों को गंतव्य तक भेजा रहा है। यहां पहुंचे 170 यात्रियों को अलग-अलग ट्रेनों के माध्यम से गंतव्य के लिए रवाना किया गया। विशेष ट्रेनें चलाकर लगभग आठ सौ यात्रियों को जम्मू कश्मीर के रेलवे स्टेशनों से दिल्ली पहुंचाया गया। श्री माता वैष्णों देवी कटड़ा से एक अन्य विशेष ट्रेन बृहस्पतिवार को चलाई जा रही है।

संदेश

पहलगाम की घटना ने हमें झकझोर दिया है।
आतंकवाद के खिलाफ हमें एकजुट होना होगा।
हमें अपने त्योहारों और धार्मिक स्थलों की रक्षा करनी होगी।
हमें शांति और सौहार्द की दिशा में काम करना होगा।

श्रद्धांजलि

हम उन लोगों को श्रद्धांजलि देते हैं जिन्होंने अपनी जान गंवाई है।
हम उनके परिवारों के साथ संवेदना व्यक्त करते हैं।
हमें उम्मीद है कि सरकार और सुरक्षा एजेंसियां इस घटना की जांच करेंगी और दोषियों को सजा दिलाएंगी।

एकता की अपील

हमें अपने मतभेदों को भूलकर एकजुट होना होगा।
हमें शांति और सौहार्द की दिशा में काम करना होगा।
हमें अपने देश और समाज की रक्षा करनी होगी।

प्रार्थना

हम प्रार्थना करते हैं कि भगवान हमें शक्ति और साहस दे।
हम प्रार्थना करते हैं कि भगवान उन लोगों को शांति दे जिन्होंने अपनी जान गंवाई है।
हमें उम्मीद है कि यह घटना हमें एकजुट करेगी और हमें शांति और सौहार्द की दिशा में काम करने के लिए प्रेरित करेगी।

भगवान शंकर को अपनी बारात के बाराती रत्ती भर भी बुरे नहीं लग रहे थे

अब आप भी स्वाभाविक रुप से यह कल्पना कीजिए, कि आपके समक्ष कोई बिना नेत्र वाला व्यक्ति आ जाये, तो आप उसे सुंदर व आकर्षक मानेंगे, या उससे भयग्रसित होंगे? किंतु भोलेनाथ को इससे कोई समस्या नहीं, कि उनका गण एक आँख वाला है, अथवा कोई आँख है ही नहीं।

भगवान शंकर की सुंदर बारात सज चुकी है। बारात सुंदर है, अथवा नहीं, यह तो देखने वाले की दृष्टि पर निर्भर करता है। क्योंकि जो भी शिवगण भोलेनाथ की बारात में सम्मिलित हैं, वे सभी मन के तो कुंदन से भी खरे व सुंदर हैं, किंतु बाहर से वे इतने कुरुप हैं, कि उन्हें कोई देखना तक नहीं चाहता। प्रत्यक्ष देखने की बात तो छोड़ ही दीजिए, कोई उन्हें स्वपन में भी नहीं देखना चाहता। क्यों? क्योंकि उनका सामाजिक स्तर अत्यंत हीन व निम्न है, कि उन्हें भूत पिशाच जैसे नामों से पुकारा जाता है। ऐसा हमारा विचार नहीं है, अपितु ऐसा दूसरे समाजों को लगता है। जैसे भगवान विष्णु व ब्रह्मा जी के दल में सभी सुंदर, श्रेष्ठ व आकर्षक प्रतीत होते हैं। उन्हें तो सुंदर होना ही था, उनके वाहन इत्यादि भी महान सुंदरता की गवाही दे रहे थे। किंतु एक हमारे भोलेनाथ हैं, वे स्वयं तो प्रत्येक रीति से विलग व हट कर थे ही, साथ में उनके बारातीयों के भी भयँकर रीति विरुद्ध लक्षण थे। जैसे किसी के अनेकों सिर थे, तो किसीके एक भी सिर नहीं था। किसी के मुख पर या तो एक ही आँख थी, या फिर एक भी आँख नहीं थी।

अब आप भी स्वाभाविक रुप से यह कल्पना कीजिए, कि आपके समक्ष कोई बिना नेत्र वाला व्यक्ति आ जाये, तो आप उसे सुंदर व आकर्षक मानेंगे, या उससे भयग्रसित होंगे? किंतु भोलेनाथ को इससे कोई समस्या नहीं, कि उनका गण एक आँख वाला है, अथवा कोई आँख है ही नहीं। क्योंकि समाज में समस्या यह नहीं, कि किसी की एक आँख है। अपितु समस्या यह है, कि लोगों के पास पल-पल बदलती हुई दूसरी आँख है। प्रत्येक क्षण आँख बदलने से, उन्हें प्रतिपल दृष्य भी बदलता ही दिखाई पड़ता है। जो उन्हें अभी अभी धर्मात्मा दिखाई पड़ रहा था, दूसरे ही क्षण उन्हें वह व्यक्ति, धूर्त या दुष्ट दिखाई देने लग जाता है। जिससे भ्रम की स्थिती उत्पन्न होती है। भ्रम की स्थिति जितनी गहन होगी, जीव ब्रह्म से उतना ही दूर होगा। जो कि मनुष्य जीवन के लिए महान हानि का विषय है। ऐसे मानवों को उस श्रेणी में रखा जाता है, जिसमें उन्होंने हाथ तो इसलिए आगे बढ़ाया होता है, कि उनके हाथ हीरे पन्ने लगेंगे। किंतु दुर्भाग्यवश उनके हाथ केवल कंकड़ पत्थरों के सिवा कुछ नहीं लगता। इसलिए भोलेनाथ को एक नेत्र ही पसंद है, बजाये इसके कि जीव अनेकों दृष्टि वाले, अनेकों नेत्र पाल कर रखे।

भगवान शंकर को वे भी रत्ती भर बुरे नहीं लग रहे, जिनके मुख संसारी जीवों की भाँति अनेकों आँखों वाले हैं। कारण यह है, कि मायावी जीव के दो नेत्र होने के पश्चात भी, उसके द्वारा धारण किए गए, अनेकों नेत्रें का वर्णन है। जिस कारण उसकी दृष्टि पल प्रतिपल भिन्न ही रहती है। अब क्योंकि शिवजी के गणों की तो वास्तव में ही कई कई आँखें हैं, तो क्या वे भी सबको भिन्न-भिन्न दृष्टि से देखते हैं? जी नहीं! वे सबको एक ही दृष्टि से ही देखते हैं। वह इसलिए, क्योंकि शिवगणों के अनेकों नेत्र केवल इसलिए हैं, क्योंकि उन्हें तो सदा भोलेनाथ जी को देखकर ही जीना है। भोले का दर्शन ही उनकी जीवन आधारशिला है। अब एक नेत्र से किया दर्शन तो उन्हें पूरा नहीं पड़ता। इसलिए वे तो सदा यही कामना करते हैं, कि उन्हें प्रभु पूरे सरीर पर नेत्र ही नेत्र प्रदान कर दे। जिससे वे सतत अपने प्रभु का दर्शन करते रहें। क्योंकि एक नेत्र अगर झपकने के लिए बंद भी हो, तो दूसरे खुले नेत्र से वे, अपने प्रभु का दर्शन करते रहें। सच्चे अर्थों में यही शिवगणों के विचित्र आकारों का रहस्य था। एक मुख था, तो यह दिखाने के लिए, कि हम बात-बात पर अपनी बात नहीं बदलते। और अगर उनके अनेकों मुख हैं, तो वे इसलिए हैं, क्योंकि उनके अपने प्रभु के यशगाण गाने के लिए, अनेकों मुखों की आवश्यक्ता है।

भोलेनाथ की विचित्र बारात का चारों ओर क्या प्रभाव पड़ता है, जानेंगे अगले अंकों में---!

भगवान गणेश के आठ अवतारों की कथा !!!

पुराणों के अनुसार हर युग में असुरी शक्ति को खत्म करने के लिए उन्होंने 8 अवतार लिए थे।

गणेश जी ने अधर्म का नाश करने के लिए हर युग में समय-समय पर अवतार लिए। इन्हीं अवतारों के अनुसार उनकी पूजा होती है। पुराणों के अनुसार हर युग में असुरी शक्ति को खत्म करने के लिए उन्होंने विकट, महोदर, विघ्नेश्वर जैसे आठ अलग-अलग नामों के अवतार लिए हैं। ये आठ अवतार मनुष्य के आठ तरह के दोष दूर करते हैं। इन आठ दोषों का नाम काम, क्रोध, मद, लोभ, ईर्ष्या, मोह, अहंकार और अज्ञान है। गणपति जी का कौन सा अवतार किस दोष को खत्म करता है ये उनकी कथाओं में बताया गया है।

1. वक्रतुंड - श्रीगणेश ने इस रुप में राक्षस मत्सरासुर के पुत्रों को मारा था। ये राक्षस शिव भक्त था और उसने शिवजी की तपस्या करके वरदान पा लिया था कि उसे किसी से भय नहीं रहेगा। मत्सरासुर ने देवगुरु शुक्राचार्य की आज्ञा से देवताओं को प्रताड़ित करना शुरू कर दिया। उसके दो पुत्र भी थे सुंदरप्रिय और विषयप्रिय, ये दोनों भी बहुत अत्याचारी थे।

सारे देवता शिव की शरण में पहुंच गए। शिव ने उन्हें आश्वासन दिया कि वे गणेश का आह्वान करें, गणपति वक्रतुंड अवतार लेकर आएंगे। देवताओं ने आराधना की और गणपति ने वक्रतुंड के रुप में मत्सरासुर के दोनों पुत्रों का संहार किया और मत्सरासुर को भी पराजित कर दिया। वही मत्सरासुर बाद में गणपति का भक्त हो गया।

2. एकदंत : - महर्षि च्यवन ने अपने तपोबल से मद नाम के राक्षस की रचना की। वह च्यवन का पुत्र कहलाया। मद ने दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य से दीक्षा ली। शुक्राचार्य ने उसे हर तरह की विद्या में निपुण बनाया। शिक्षा होने पर उसने देवताओं का विरोध शुरू कर दिया। सारे देवता उससे प्रताड़ित रहने लगे।

सारे देवताओं ने मिलकर गणपति की आराधना की। तब भगवान गणेश एकदंत रूप में प्रकट हुए। उनकी चार भुजाएं, एक दांत, बड़ा पेट और उनका सिर हाथी के समान था। उनके हाथ में पाश, परशु, अंकुश और एक खिला हुआ कमल था। एकदंत ने देवताओं को अभय वरदान दिया और मदासुर को युद्ध में पराजित किया।

3. महोदर - जब कार्तिकेय ने तारकासुर का वध कर दिया तो दैत्य गुरु शुक्राचार्य ने मोहासुर नाम के दैत्य को देवताओं के खिलाफ खड़ा किया। मोहासुर से मुक्ति के लिए देवताओं ने गणेश की उपासना की। तब गणेश ने महोदर अवतार लिया। महोदर यानी बड़े पेट वाले। वे मूषक पर सवार होकर मोहासुर के नगर में पहुंचे तो मोहासुर ने बिना युद्ध किये ही गणपति को अपना इष्ट बना लिया।

4. विकट - भगवान विष्णु ने जलंधर नाम के राक्षस के विनाश के लिए उसकी पत्नी वृंदा का सतीत्व भंग किया। उससे एक दैत्य उत्पन्न हुआ, उसका नाम था कामासुर। कामासुर ने शिव की आराधना करके त्रिलोक विजय का वरदान पा लिया। इसके बाद उसने अन्य दैत्यों की तरह ही देवताओं पर अत्याचार करने शुरू कर दिए।

तब सारे देवताओं ने भगवान गणेश का ध्यान किया। तब भगवान गणपति ने विकट रूप में अवतार लिया। विकट रूप में भगवान मोर पर विराजित होकर अवतरित हुए। उन्होंने देवताओं को अभय वरदान देकर कामासुर को पराजित किया।

5. गजानन - धनराज कुबेर से लोभासुर का जन्म हुआ। वह शुक्राचार्य की शरण में गया और उसने शुक्राचार्य के आदेश पर शिवजी की उपासना शुरू की। शिव लोभासुर से प्रसन्न हो गए। उन्होंने उसे निर्भय होने का वरदान दिया।

इसके बाद लोभासुर ने सारे लोकों पर कब्जा कर लिया। तब देवगुरु ने सारे देवताओं को गणेश की उपासना करने की सलाह दी। गणेश ने गजानन रूप में दर्शन दिए और देवताओं को वरदान दिया कि मैं लोभासुर को पराजित करूंगा। गणेशजी ने लोभासुर को युद्ध के लिए संदेश भेजा। शुक्राचार्य की सलाह पर लोभासुर ने बिना युद्ध किए ही अपनी पराजय स्वीकार कर ली।

6. लंबोदर - क्रोधासुर नाम के दैत्य ने ने सूर्यदेव की उपासना करके उनसे ब्रह्माण्ड विजय का वरदान ले लिया। क्रोधासुर के इस वरदान के कारण सारे देवता भयभीत हो गए।

वो युद्ध करने निकल पड़ा। तब गणपति ने लंबोदर रूप धरकर उसे रोक लिया। क्रोधासुर को समझाया और उसे ये आभास दिलाया कि वो संसार में कभी अजेय योद्धा नहीं हो सकता। क्रोधासुर ने अपना विजयी अभियान रोक दिया और सब छोड़कर पाताल लोक में चला गया।

7. विघ्नराज - एक बार पार्वती अपनी सखियों के साथ बातचीत के दौरान जोर से हंस पड़ीं। उनकी हंसी से एक विशाल पुरुष की उत्पत्ति हुई। पार्वती ने उसका नाम मम (ममता) रख दिया। वह माता पार्वती से मिलने के बाद वन में तप के लिए चला गया। वहीं वो शंबरासुर से मिला। शम्बरासुर ने उसे कई आसुरी शक्तियां सीखा दीं। उसने मम को गणेश की उपासना करने को कहा। मम ने गणपति को प्रसन्न कर ब्रह्माण्ड का राज मांग लिया।

शम्बर ने उसका विवाह अपनी पुत्री मोहिनी के साथ कर दिया। शुक्राचार्य ने मम के तप के बारे में सुना तो उसे दैत्यराज के पद पर विभूषित कर दिया। ममासुर ने भी अत्याचार शुरू कर दिए और सारे देवताओं को बंदी बनाकर कारागार में डाल दिया। तब देवताओं ने गणेश की उपासना की। गणेश विघ्नेश्वर के रूप में अवतरित हुए। उन्होंने ममासुर का मान मर्दन कर देवताओं को छुड़वाया।

8. धूम्रवर्ण - एक बार सूर्यदेव को छींक आ गई और उनकी छींक से एक दैत्य की उत्पत्ति हुई। उसका नाम था अहम। वो शुक्राचार्य के समीप गया और उन्हें गुरु बना लिया। वह अहम से अहंतासुर हो गया। उसने खुद का एक राज्य बसा लिया और भगवान गणेश को तप से प्रसन्न करके वरदान प्राप्त कर लिए।

उसने भी बहुत अत्याचार और अनाचार फैलाया। तब गणेश ने धूम्रवर्ण के रूप में अवतार लिया। उनका रंग धुंए जैसा था। वे विकराल थे। उनके हाथ में भीषण पाश था जिससे बहुत ज्वालाएं निकलती थीं। धूम्रवर्ण के रुप में गणेश जी ने अहंतासुर को हरा दिया। उसे युद्ध में हराकर अपनी भक्ति प्रदान की।

हम बड़े बड़े महल बनवाने में लगें हैं। कुबेर का धन इकट्ठा करना चाहतें हैं। सारे संसार के भौतिक सुख-संसाधन बटोरना चाहतें हैं

लेकिन यह नहीं देख रहे कि जिनके पास यह सब है वह सब क्या सुखी/संतुष्ट हैं? हम अपना समस्त जीवन इसी भागदौड़ में हैं कि दूसरे से ज्यादा सुख-साधन हमारे पास हों ताकि हम यह सब दिखाकर, संसार में सम्मानित हो सकें। हमारे लिए केवल यही महत्वपूर्ण हो गया है, कुछ ऐश्वर्य पूर्ण संसाधन और भागदौड़ का जीवन। इसके अतिरिक्त हमारे भीतर क्या हो रहा है? या आसपास क्या हो रहा है? इससे हम पूरी तरह से अनभिज्ञ/अनजान या कहें कि बेहोश हैं। एक बार सोचकर देखिए 'हमसे सुखी इस संसार में कोई नहीं है। मन ही मन प्रसन्न होइए, आह्लादित होइए। लेकिन एक दिन अचानक एक भीड़ आएगी और कुछ मिनटों में सारा धन, संपत्ति, महल, हमें और हमारे परिवार को समाप्त कर देगी। हमारे वर्षों के संघर्ष से कमाए धन को लूट लेगी। ऐसे में या तो हम जीवित नहीं रहेंगे और यदि जीवित रह भी गए तो अपने सामने सब कुछ लुटते-पिटते/बर्बाद होते हुए देखने के अतिरिक्त कोई चारा नहीं होगा। और यह सब करने वाले हमारे अपने सगे/साथी/नौकर/पड़ौसी भी हो सकते हैं। जैसा कि अभी बंगाल में हुआ और फिर काश्मीर में हुआ। अभी देखा कि पचास एकड़ के एक शानदार फ़ार्म-हाउस में सब पेड़ उजाड़ दिए गये, सारे जानवर लूट लिए गए। सब शेड/स्ट्रक्चर तोड़ दिए गए। लोगों की जान से ऐसे खेला गया जैसे कोई रबड़ के खिलौनों से खेलता है और अपना भीतरी आक्रोश निकालता है। और कोई कुछ भी रोक/सम्भाल नहीं सका। जिस तरह के समभाव/सैकुलरवाद को इस देश में अमृत समझा, वहीं जहर बन गया। जब तक यह एकतरफा समभाव रहेगा, तब तक यहां शांति कभी स्थापित नहीं हो सकती। ध्यान रहे कि हमें केवल धन/सम्पदा ही एकत्रित नहीं करनी, आत्मरक्षा/देश रक्षा/जनजीवन रक्षा सूत्र भी स्थापित करने हैं।

भगवान शिव ने नंदी तो मां पार्वती ने बाघ को अपना वाहन क्यों चुना, जानिए इसका रहस्य

मूषक : - हमारे प्रथम पूजनीय श्री गणेश जो तर्क वितर्क करने और समस्याओं की जड़ तक जाकर उनका समाधान करने में सबसे आगे रहते हैं उनकी सवारी एक चूहा है जो उनके शरीर से बिल्कुल ही विपरीत है। गणेश जी के मूषक पर सवारी करने का अर्थ है उन्होंने स्वार्थ पर विजय पाई है।एक कथा के अनुसार गजमुखासुर नामक एक असुर को वरदान प्राप्त था कि उसका वध किसी भी अस्त्र से नहीं हो सकता। तब गणेश जी ने उसका अंत करने के लिए अपना एक दांत तोड़कर उस पर वार कर दिया। भगवान के इस वार से भयभीत होकर वह असुर चूहा बनकर इधर उधर भागने लगा। गजानन ने उसे अपने पाश में बाँध लिया जिसके बाद वह भगवान से क्षमा याचना करने लगा। जिसके बाद गणेश जी ने उसे जीवनदान प्रदान कर अपना वाहन बना लिया।

गरुड़ : - भगवान विष्णु का वाहन गरुड़ है गिद्धों की एक ऐसी प्रजाति जो अपनी बुद्धिमानी के लिए जानी जाती थी। इनका काम एक जगह से सन्देश दूसरी जगह पहुंचाना था। प्रजापति कश्यप और उनकी पत्नी विनता के दो पुत्रों गरुड़ और अरुण में से गरुड़ देव विष्णु जी के वाहन बन गए और अरुण देव सूर्य भगवान के पास चले गए। सम्पाती और जटायु अरुण के पुत्र थे।

ऐसी मान्यता है की जब रावण और जटायु का युद्ध हुआ था तब जटायु के शरीर के कुछ अंग दंडकारण्य में आकर गिरे था। दंडकारण्य में गिद्धराज जटायु का मंदिर है। कहते हैं सम्पाती और जटायु भी इसी क्षेत्र में रहते थे। मध्यप्रदेश के देवास जिले की तहसील बागली में 'जटाशंकर' नाम का एक स्थान है कहा जाता है कि जटायु वहां तपस्या किया करते थे। जटायु ने रावण से माता सीता को बचाने के लिए अपने प्राणो की आहुति दे दी थी। जटायु की मृत्यु दंडकारण्य में हुई थी।

उल्लू : - एक कथा के अनुसार एक बार जब सभी देवी देवता धरती पर घूमने आये तो यूं ही उन्हें घूमता देख पशु पक्षियों को बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा। सारे पशु पक्षी देवताओं के समीप पहुंचे और उनसे प्रार्थना करने लगी कि वे सभी उन्हीं में से किसी न किसी को अपना वाहन चुन लें। तब सभी देवी देवताओं ने अपना अपना वाहन चुनना आरम्भ कर दिया। जब लक्ष्मी जी की बारी आयी तो वे असमंजस में पड़ गई की किसे अपना वाहन बनाए क्यूंकि सभी पशु पक्षी उनका वाहन बनने के लिए आपस में लड़ रहे थे।

तब देवी लक्ष्मी ने उन्हें शांत करते हुए कहा कि कार्तिक अमावस्या के दिन वे पुनः धरती पर आएंगी और अपना वाहन चुनेंगी। सभी पशु पक्षी कार्तिक अमावस्या के दिन लक्ष्मी जी की राह देखने लगे। जब लक्ष्मी जी आयीं तब उल्लू ने अपनी तेज़ आंखों से अंधेरे में ही उन्हें देख लिया और फ़ौरन उनके पास चला गया। लक्ष्मी जी को भी अन्य जानवर वहां दिखयी नहीं दिए इसलिए वे उल्लू पर विराजमान हो गयीं। उल्लू को सबसे बुद्धिमान पक्षी कहा जाता है। कहते हैं इसे भूत और भविष्य का ज्ञान पहले से ही हो जाता है। रात्रि में उड़ते समय न तो इसके पंख से आवाज़ निकलती है और न ही इसकी आंख झपकती है। इतना ही नहीं यह अपनी गर्दन को 170 अंश तक घुमा लेता है। माना जाता है इसके मुख से हु हु हु शब्द एक मंत्र है।

हंसः - ज्ञान और कला की देवी सरस्वती सबसे साधारण देवी के रूप में जानी जाती हैं इसलिए माता सरस्वती के लिए हंस से बेहतर और कोई वाहन नहीं हो सकता था। हंस सबसे पवित्र और समझदार पक्षी माना जाता है। इसे प्रेम और एकता का प्रतीक माना जाता है। कहते हैं हंस अपना स्थान खुद ही चुनता है यह अन्य पक्षियों की अपेक्षा लंबी दूरी तय करता है।

बैलः - प्राचीनकाल शिलाद नाम के एक ऋषि थे। उन्होंने कठोर तपस्या करके शिव जी को प्रसन्न किया और उनसे वरदान के रूप में एक पुत्र मांगा। शिव जी के आशीर्वाद से शिलाद को नंदी पुत्र के रूप में प्राप्त हुए। एक दिन ऋषि के आश्रम में दो दिव्य संत पधारे वरुण और मित्र। नंदी ने उन दोनों की खूब सेवा की जब वे दोनों संत जाने लगे तब उन्होंने शिलाद को लम्बी आयु और खुश रहने का आशीर्वाद दिया किन्तु नंदी को उन्होंने आशीर्वाद नहीं दिया। तब शिलाद ने उनसे पूछा कि उन्होंने उसके पुत्र को कोई आशीर्वाद क्यों नहीं दिया तब उन दोनों संतों ने बतया कि नंदी अल्पायु है।

यह सुनकर शिलाद बहुत दुखी हो गए जब नंदी को इस बात का पता चला तो वे मुस्कुराए और अपने पिता से कहा कि वे स्वयं शिव जी का वरदान हैं तो उनकी रक्षा भी महादेव ही करेंगे। इतना कहकर नंदी भुवन नदी के तटपर तपस्या करने चले गए। उन्होंने अपनी तपस्या से भोलेनाथ को प्रसन्न किया और उनसे आशीर्वाद मांगा कि वह अपने पूरे जीवन उनकी सेवा करना चाहते हैं तब शिव जी ने नंदी को अपने गले से लगा लिया और उन्हें बैल का सिर देकर अपना वाहन बना लिया। इतना ही नहीं शंकर जी ने नंदी को वेदादि ज्ञान सहित अन्य ज्ञान भी प्रदान किये।

नंदी शिव जी के गणों में सर्वोत्तम माने जाते हैं। शिव का वाहन बैल है नंदी। जिस प्रकार गायों में कामधेनु श्रेष्ठ है उसी प्रकार बैलों में नंदी श्रेष्ठ है। बैल का चरित्र उत्तम और समर्पण भाव वाला बताया गया है। इसके अलावा वह बल और शक्ति का भी प्रतीक है। किन्तु जब इसे क्रोध आता है तो उससे बचना मुश्किल हो जाता है। कहते हैं शिवजी का चरित्र भी बैल समान ही है इसलिए उन्होंने इसे अपना वाहन चुना था।

बाघः - माता पार्वती का वाहन बाघ है यह बल और शक्ति का प्रतीक है। एक कथा के अनुसार एक बार शिव जी ने मज़ाक में माता पार्वती को काली कह दिया था। यह बात उन्हें बहुत बुरी लगी और वह कैलाश छोड़कर वन में तपस्या करने चली गयीं। जब माता ध्यान में लीन थी तब वहां पर एक भूखा बाघ आया किन्तु माता को देखकर वह बाघ वहीं उनके समीप बैठ गया। माता की यह ज़िद थी कि जब तक वह गोरी नहीं हो जाती वह तपस्या में ही लीन रहेंगी। कहते हैं जितने वर्षों तक माता ने तपस्या की वह बाघ उनके पास ही बैठा रहा। अंत में शिव जी प्रकट हुए और उन्होंने माता पार्वती को गोरा होने का आशीर्वाद दिया, तब जाकर माता की तपस्या खत्म हुई इसके बाद देवी पार्वती नदी में स्नान करने गयी। तभी उन्हें वहां बैठा बाघ दिखाई दिया जब उन्हें इस बात का पता चला कि वह भी उनके साथ इतने वर्षों तक यहीं बैठा रहा तब माता ने प्रसन्न होकर उसे अपना वाहन बना लिया।

मोर : - मोर भगवान कार्तिकेय का वाहन है। कहा जाता है कि भगवान विष्णु ने कार्तिकेय की सादक क्षमता को देखकर उन्हें भेंट स्वरुप मयूर दिया था। दक्षिण भारत में कार्तिकेय को इनका वाहन मोर होने की वजह से मुरुगन भी कहा जाता है। इनकी पूजा वहां अधिक होती है। कार्तिकेय भगवान शिव के ज्येष्ठ पुत्र हैं।

पहलगाम को लेकर भारी आक्रोश, दिल्ली में पाक हाई कमीशन पर प्रदर्शन; जमकर हुई नारेबाजी

पहलगाम आतंकी हमले के विरोध में दिल्ली में पाकिस्तान उच्चायोग के पास प्रदर्शन हुआ। भाजपा कार्यकर्ताओं ने जमकर नारेबाजी की। भाजपा नेता डॉ. हर्षवर्धन ने कहा कि हम पीएम मोदी के साथ खड़े हैं। संयुक्त राष्ट्र और अंतरराष्ट्रीय समुदाय से हमारी मांग है कि पाकिस्तान को आतंकवाद का समर्थन करने वाला देश घोषित किया जाए।

नईदिल्ली। आतंकवाद विरोधी कार्यमंच और भाजपा सदस्यों ने दिल्ली में पाकिस्तान उच्चायोग के पास पहलगाम आतंकी हमले के खिलाफ प्रदर्शन किया। इस दौरान भाजपा कार्यकर्ताओं ने पाकिस्तान मुर्दाबाद के जमकर नारे लगाए। वहीं, महिलाओं के हाथों में पाकिस्तान मुर्दाबाद के पोस्टर भी देखे गए। वहीं, भाजपा नेता डॉ. हर्षवर्धन ने कहा कि दिल्ली में भाजपा आज भारत के 140 करोड़ लोगों के दिलों में जो भावनाएं हैं, उन्हें व्यक्त कर रही है। हम पीएम मोदी को भरोसा दिलाते हैं कि हम उनके साथ खड़े हैं। संयुक्त राष्ट्र और अंतरराष्ट्रीय समुदाय से हमारी मांग है कि पाकिस्तान को आतंकवाद का समर्थन करने वाला देश घोषित किया जाए।

भारत सरकार इस घटना का बदला लेगी

उधर, भाजपा विधायक सतीश उपाध्याय ने कहा कि भारत के लोगों के दिलों में गुस्सा है। पाकिस्तान को बर्दाश्त नहीं हुआ कि कश्मीर मुख्यधारा में कैसे शामिल हो गया। कल मोदी सरकार ने पाकिस्तान पर कूटनीतिक सर्जिकल स्ट्राइक की। भारत सरकार इस घटना का बदला लेगी।

उन्होंने कहा हम पाकिस्तान को बताना चाहते हैं कि अब वह सीमा पार आतंकवाद को जारी नहीं रख सकता। भारत सरकार और हमारी सेना पाकिस्तान को मुंहतोड़ जवाब देगी।

शादी समारोह में आप एमएलए ने बीजेपी के पूर्व विधायक को धमकाया, हमला करने का भी आरोप; पुलिस ने दर्ज किया केस

दिल्ली कैंट के पूर्व विधायक सुरेंद्र सिंह ने आप विधायक वीरेंद्र सिंह कादियान पर विवाह समारोह में धमकाने और हमला करने का आरोप लगाया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। सिंह का आरोप है कि कादियान ने उनके बेटे के खिलाफ मामले को लेकर धमकी दी और साथियों संग हमला किया। कादियान की ओर से तत्काल कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है।

दिल्ली। दिल्ली कैंट से दो बार विधायक रह चुके सुरेंद्र सिंह ने आम आदमी पार्टी के मौजूदा विधायक वीरेंद्र सिंह कादियान पर उन्हें धमकाने और हमला करने का आरोप लगाया है। सिंह की शिकायत पर अलीपुर थाना पुलिस ने पुलिस ने बीएनएस की धारा 115(2) (जानबूझकर किसी को चोट पहुंचाने), 126(2) (गलत तरीके से रोकना), 351(3) (आपराधिक धमकी) और 3(5) (संयुक्त दायित्व) के तहत मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस अधिकारी ने बताया कि मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। हालांकि इस मामले में कादियान या उनके कार्यालय की ओर से तत्काल कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली।

कादियान पर सुरेंद्र सिंह को धमकी देने का आरोप

सिंह ने अपनी शिकायत में आरोप लगाया कि कादियान ने उनके बेटे के खिलाफ मामले को लेकर धमकी दी और अपने साथियों के साथ मिलकर उन पर हमला किया। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने कहा कि कादियान ने कथित तौर पर अपने बेटे से जुड़े एक मामले को लेकर सुरेंद्र सिंह को धमकी दी और अपने साथियों के साथ मिलकर सिंह पर कथित तौर पर हमला किया।

शादी समारोह में पहुंचे थे सुरेंद्र सिंह

बाहरी-उत्तरी जिला के एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि यह घटना 20 अप्रैल को पल्ला बख्तावरपुर रोड स्थित ब्रिस्टल फार्महाउस में हुई। यहां भाजपा के पूर्व विधायक सुरेंद्र सिंह एक शादी में शामिल होने गए थे। सिंह द्वारा पुलिस में दर्ज कराई गई शिकायत के अनुसार, दिल्ली कैंट से आम आदमी पार्टी (आप) के वर्तमान विधायक कादियान ने पिछले वर्ष नवंबर में उनके बेटे के खिलाफ दर्ज मामले को लेकर उनसे बहस की। गौरतलब है कि कादियान के बेटे और उसके तीन दोस्तों के खिलाफ पिछले साल नवंबर में एक युवक पर कथित तौर पर हमला करने का मामला दर्ज किया गया था।

50 लाख फर्जी राशन कार्ड हैं, लेकिन क्या भाग गया; अरुण साहू

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर: मुख्यमंत्री ने 6 लाख राशन कार्ड वितरित किये। यह कार्ड सभी तक पहुंचेगा। जबकि यह प्रक्रिया जारी है, खाद्य आपूर्ति मंत्री कृष्ण पात्रा ने अपने भाषण में कहा कि आने वाले दिनों में और अधिक लोगों को राशन कार्ड वितरित किए जाएंगे।

मुख्यमंत्री ने राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस के अवसर पर राशन कार्ड वितरित किए। इस बीच, विपक्ष के नेता अरुण साहू ने राशन कार्ड की आलोचना की है। सरकार ने विधानसभा में कहा कि उसने 50 लाख फर्जी राशन कार्ड जब्त किये हैं। कहां गया फर्जी राशन कार्ड? सरकार बस झूठ बोल रही है। उन्होंने यह भी कहा कि सरकार ने डीजे बजाकर कहा कि 50 लाख फर्जी राशन कार्ड हैं। लेकिन अभी तक न तो भूत और न ही चुड़ैल बाहर आई है। बाहर के लोग EQ नहीं कर पाए हैं। अरुण ने कहा कि ये लोग फर्जी हैं, इनकी सारी बातें फर्जी हैं।

दिल्ली में प्रदूषण पर बड़ी चोट, औद्योगिक क्षेत्रों में एंटी-स्मॉग गन लगाएगी बीजेपी सरकार

दिल्ली सरकार प्रदूषण पर लगाम लगाने के लिए औद्योगिक क्षेत्रों में एंटी-स्मॉग गन तैनात करेगी। आठ मोबाइल एंटी-स्मॉग गन किराए पर लेने की प्रक्रिया शुरू हो गई है। ये गन दो शिफ्टों में काम करेंगी और सड़कों पर पानी का छिड़काव करेंगी। छिड़काव के लिए गैर-पेयजल का उपयोग किया जाएगा। इस कार्य पर लगभग 2 करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान है।

नई दिल्ली। औद्योगिक क्षेत्रों में धूल और अन्य प्रदूषकों पर लगाम लगाने के लिए दिल्ली सरकार वाहनों पर लगी मोबाइल एंटी-स्मॉग गन तैनात करेगी। एक अधिकारी ने बताया कि आठ मोबाइल एंटी-स्मॉग गन किराए पर लेने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है और सरकारी एजेंसी के साथ पंजीकृत उपयुक्त ठेकेदार को काम पर रखने के बाद इन्हें औद्योगिक क्षेत्रों में तैनात किए जाने की संभावना है।

सभी सड़कों पर पानी का छिड़काव करेंगे

शहर के विभिन्न हिस्सों में 24 पंजीकृत औद्योगिक क्षेत्र हैं, जहां औद्योगिक गतिविधियों और परिवहन वाहनों की आवाजाही से धूल और अन्य प्रदूषक उत्पन्न होते हैं। ट्रकों पर लगे स्मॉग गन दो शिफ्टों में काम करेंगे, जो सुबह तीन बजे से शुरू होकर इन क्षेत्रों की सभी सड़कों पर पानी का छिड़काव करेंगे।

स्मॉग गन सुबह तीन बजे से सुबह सात बजे तक और हर कार्य दिवस पर चार गैर-व्यस्त घंटों के लिए चालू रहेंगी। अधिकारियों ने बताया कि आठ स्मॉग गन में से दो को रिजर्व में रखा जाएगा।

छिड़काव के दौरान पानी भरने की व्यवस्था खुद करेगा

संबंधित ठेकेदार औद्योगिक क्षेत्रों में पानी के टैंकरों के माध्यम से छिड़काव के दौरान पानी भरने की व्यवस्था खुद करेगा। अधिकारियों ने बताया कि ट्रक पर लगे एंटी-स्मॉग गन शिफ्ट के दौरान पानी भरने के लिए साइट से बाहर नहीं जाएंगे। उन्होंने बताया कि जिन ट्रकों पर एंटी-स्मॉग गन लगाई जाएंगी, वे जीपीएस से लैस होंगे, ताकि उनकी गतिविधियों पर नज़र रखी जा सके। उद्योग विभाग के इंजीनियरों के पास जीपीएस से लैस साफ्टवेयर तक पहुंच होगी, जबकि उन्हें साप्ताहिक आधार पर डेटा उपलब्ध कराया जाएगा।

छिड़काव के लिए केवल गैर-पेयजल का उपयोग किया जाएगा

छिड़काव के लिए केवल गैर-पेयजल का उपयोग किया जाएगा, जैसे कि सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट और औद्योगिक क्षेत्रों में स्थापित केंद्रीयकृत अपशिष्ट उपचार संयंत्रों में उपलब्ध पानी।

कार्य करने के लिए 10 महीने का समय दिया जाएगा (मानसून के दो महीने को छोड़कर)। ठेकेदार की नियुक्ति औपचारिक रूप से होने के एक सप्ताह बाद काम शुरू हो जाएगा। इस काम पर करीब 2 करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान है।

पाक प्रायोजित आतंक के खिलाफ अब चुप्पी नहीं चलेगी!

पहलगाम में निर्दोष हिंदुस्तानियों की हत्या ने पूरे देश को झकझोर दिया है। अब वक्त आ गया है कि पाकिस्तान को उसके नापाक हरकतों का करारा जवाब दिया जाएगा

Anti Terror Action Forum के आह्वान पर प्रचंड विरोध प्रदर्शन कर हम 3 मूर्ति पर एकजुट होकर ये संदेश दें रहे—

"भारत अब सिर्फ रोएगा नहीं, दहाड़ेगा!"

अब खून का बदला सिर्फ आँसू से नहीं —

सुनियोजित प्रतिरोध और कठोर कदमों से होगा।

जो पाकिस्तान के साथ खड़े हैं, वे भारत के खिलाफ खड़े हैं!

पाकिस्तान हाय हाय

आतंकवाद के आगे नहीं झुकेंगे..राजेश भाटिया

दिल्ली-एनसीआर में 26 अप्रैल तक हीटवेव का साया, 43 डिग्री तक पहुंचेगा तापमान; लू से बचाव के लिए करें ये उपाय

मौसम विभाग (IMD) ने शुक्रवार और शनिवार को राष्ट्रीय राजधानी में लू चलने के लिए येलो अलर्ट जारी किया है। राजधानी में बुधवार को अधिकतम तापमान 39 .6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया जो पिछले दिन से 0 .3 डिग्री सेल्सियस कम है। अधिकारियों ने पूर्वानुमान लगाया है कि शुक्रवार और शनिवार को तापमान और बढ़ेगा जो 40 से 43 डिग्री सेल्सियस के बीच पहुंच सकता है।

दिल्ली। दिल्ली-एनसीआर में भीषण गर्मी के कहर से लोग परेशान हैं। इस बीच, गर्म हवाएं लोगों की परेशानी को और बढ़ाएंगी। राष्ट्रीय राजधानी में शुक्रवार से फिर लू चलने की संभावना है। तापमान 43 डिग्री तक जाएगा। उधर दिल्ली की वायु गुणवत्ता अभी खराब श्रेणी में बनी हुई है। बृहस्पतिवार को दिल्ली का न्यूनतम तापमान 20.0 डिग्री दर्ज किया गया। दिन का तापमान 40 से 41 डिग्री सेल्सियस के आसपास रह सकता है। दिन में आसमान साफ रहेगा। तेज धूप भी खिली रहेगी, लेकिन 10 से 20 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से हवा भी चलेगी।

गाजियाबाद जिला प्रशासन ने जारी की एडवाइजरी

गाजियाबाद सहित एनसीआर में 24 से 26 अप्रैल तक हीटवेव का साया रहेगा। मौसम विभाग की चेतावनी मिलने पर जिला प्रशासन अलर्ट हो गया है। शहरी क्षेत्रों में तापमान अधिक हो जाने से अर्बन हीट आइलैंड की स्थिति बन जाती है। ऐसे में हीटव वैव से मौत होने की आंशका रहती है। ऐसे में सौरभ भट्ट अपर जिलाधिकारी ने एडवाइजरी जारी की है। वर्तमान में जनपद का अधिकतम तापमान 40 डिग्री सेल्सियस से ऊपर जा रहा है। मौसम विज्ञान विभाग द्वारा जनपद गाजियाबाद में 44.48 डिग्री सेल्सियस तापमान होने पर हीटवेव घोषित किया गया है। लू लगने पर शरीर में पानी की कमी (डिहाईड्रेशन) एवं ऐठन की शिकायत आती है। कभी-कभी इसके कारण मौत भी हो जाती है। लू से वृद्ध, बच्चे, गर्भवती महिलायें, बीमार, मजदूर, दुर्बल लोग अधिक प्रभावित होते है। जिला आपदा विशेषज्ञ व जिला आपदा प्रधंन प्राधिकरण की सलाह पर एडवाइजरी जारी की गई है।

गुरुग्राम में गर्मी ने अपना असर दिखाना शुरू कर दिया है। बुधवार को अधिकतम तापमान 37.6 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया, जबकि न्यूनतम तापमान 16.9 डिग्री सेल्सियस रहा। मौसम विभाग के अनुसार आने वाले दिनों में गर्मी और तेज होने वाली है। अनुमान है कि 26 अप्रैल तक दिन का तापमान 43 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच सकता है।

बढ़ते तापमान के साथ ही लू चलने की आशंका भी जताई जा रही है। ऐसे में खासतौर पर बुजुर्गों और बच्चों को अतिरिक्त सावधानी बरतने की सलाह दी गई है। 29 अप्रैल तक मौसम साफ रहने की संभावना है।

पहलगाम आतंकी हमला: राजनीति करने का अवसर नहीं.....

-संदीप सृजन

पहलगाम की बैसरन घाटी, जिसे 'मिनी स्विट्जरलैंड' के नाम से जाना जाता है, एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है। यहाँ पर हमले की टाइमिंग कई मायनों में महत्वपूर्ण थी। सबसे पहले, यह हमला तब हुआ जब अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस भारत के दौरे पर थे। दूसरा, यह अमरनाथ यात्रा के शुरू होने से ठीक पहले हुआ, जो कश्मीर में पर्यटन और धार्मिक गतिविधियों का प्रमुख समय होता है। तीसरा, पाकिस्तान के सेना प्रमुख जनरल आसिम मुनीर के हालिया बयान जिसमें उन्होंने कश्मीर को पाकिस्तान की 'जुगुलर वेन' (जीवन रेखा) बताया था, ने इस हमले को एक सुनियोजित भू-राजनीतिक कदम के रूप में देखने का आधार दिया। इस हमले का तरीका भी चिंताजनक था। आतंकियों ने पर्यटकों को निशाना बनाया, उनकी धार्मिक पहचान पूछी, और हिंदू नामों वाले लोगों पर गोलियां चलाईं। यह रणनीति न केवल सांप्रदायिक तनाव को भड़काने की कोशिश थी, बल्कि कश्मीर के पर्यटन उद्योग को नुकसान पहुंचाने और भारत की छवि को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर धूमिल करने का प्रयास भी था। यह हमला 2000 के छत्तीसिंहपुरा नरसंहार और 2023 में हमास द्वारा इजरायल पर किए गए हमले की याद दिलाता है, जिससे अंतरराष्ट्रीय आतंकी गठजोड़ की आशंका बढ़ी है।

सराय काले खां नमो भारत स्टेशन से निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन जाने में होगी सुविधा, 280 मीटर लंबा फुट ओवर ब्रिज बना

सराय काले खां नमो भारत स्टेशन को हजरत निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन से जोड़ने वाला 280 मीटर लंबा फुट ओवर ब्रिज (एफओबी) बनकर तैयार हो गया है। एनसीआरटीसी ने इस पर छह ट्रैवेलेटर लगाए हैं। इससे यात्रियों को दोनों स्टेशनों के बीच आसानी से आने-जाने में सुविधा होगी खासकर महिलाओं बुजुर्गों और विकलांग लोगों को। स्टेशन की ओर जाने वाली सड़क भी अब आम जनता के लिए खोल दी गई है।

नई दिल्ली। सराय काले खां नमो भारत स्टेशन को हजरत निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन से जोड़ने वाले फुट ओवर ब्रिज (एफओबी) का निर्माण पूरा हो गया है। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम (एनसीआरटीसी) ने 280 मीटर लंबे इस एफओबी पर छह ट्रैवेलेटर लगाए हैं। यह एफओबी इन दोनों परिवहन साधनों के बीच यात्रियों की सुगम और आसान आवाजाही को सक्षम बनाएगा।

दूरी करीब 300 मीटर

सराय काले खां नमो भारत स्टेशन और हजरत निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन के बीच की दूरी करीब 300 मीटर है। इस दूरी को देखते हुए पैदल यात्रियों के लिए एक फुटओवर ब्रिज की जरूरत महसूस की गई ताकि यात्री इन दोनों परिवहन साधनों के बीच आसानी से यात्रा कर सकें।

इसके अलावा, यह भी महसूस किया गया कि इस तरह की सुविधा महिलाओं, बुजुर्गों, बच्चों और विशेष रूप से विकलांग लोगों सहित उन यात्रियों के लिए बेहद फायदेमंद होगी जो भारी सामान के साथ हजरत निजामुद्दीन स्टेशन आते-जाते हैं।

इस एफओबी का निर्माण पूरा होने के साथ ही राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम (एनसीआरटीसी) ने रेलवे स्टेशन की ओर जाने वाली सड़क से बैरिकेडिंग हटा दी है और पूरी सड़क को आम जनता के लिए खोल दिया है।

इस सड़क की लाइफ साइकिल बढ़ जाएगी

लोगों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए एनसीआरटीसी ने सड़क पर काले तारकोल की परत चढ़ाकर उसे बेहतर भी बनाया है। सराय काले खां का यह इलाका काफी भीड़भाड़ वाला है और इस सड़क पर यातायात का भी काफी दबाव रहता है। एनसीआरटीसी की इस पहल से इस सड़क की लाइफ साइकिल बढ़ जाएगी।

दिल्ली-गाजियाबाद-मेरठ नमो भारत कॉरिडोर के सबसे बड़े स्टेशनों में से एक, सराय काले खां स्टेशन एक प्रमुख परिवहन केंद्र बनने के लिए तैयार है, क्योंकि यह जल्द ही डीएमआरसी की पिंक लाइन, हजरत निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन और वीर हकीकत राय आईएसबीटी के साथ निर्बाध कनेक्टिविटी प्रदान करेगा।

डिजिटल रेप झेला दंश...!

अस्पताल का आई.सी.यू और जीवन संघर्ष,
वो यौन उत्पीडन या डिजिटल रेप झेला दंश।
सामान्य रेप से अतिरिक्त यहाँ भी न छोड़ोगे,
क्यों? नहीं काँपते तुम्हारे हाथ क्या? मोड़ोगे।
ये अवचेतन अवस्था में एयरलाइन कर्मचारी,
क्या से क्या सह रहीं थीं वो बिस्तर पे बेचारी।

अस्पताल का आई.सी.यू और जीवन संघर्ष,
वो यौन उत्पीडन या डिजिटल रेप झेला दंश।
वासना का घिनौना कर्म किसने हैं सिखाया,
बिन सहमति गुप्तांग में अंगूठा प्रवेश कराया।
न कोई शर्म, न हया कुछ भी ना रहा हैं बाकी,
हवस की पराकाष्ठा ने घृणित बन हुआ दागी।

अस्पताल का आई.सी.यू और जीवन संघर्ष,
वो यौन उत्पीडन या डिजिटल रेप झेला दंश।
ऐसा विकृत करते अपनों के खयाल ना आते,
वहशियों माँ,बहन,बेटी के मुख नज़र न आते।
अस्पताल को यहाँ जीवनदायी कहा जाता हैं,
तुम दीपक थे सभी को दरिंदा नज़र आता हैं।
(संदर्भ-डिजिटल रेप की घटना 6 अप्रैल, 2025 को हुई थी।)

संजय एम तराणेकर

जम्मू-कश्मीर के पहलगांव में हिन्दुओं के नरसंहार पर फूटा आक्रोश – विश्व हिन्दू राष्ट्र परिषद् ने राष्ट्रपति से की कठोरतम कार्रवाई की मांग

परिवहन विशेष न्यूज

पाकिस्तान के खिलाफ तत्काल और कठोर कूटनीतिक, आर्थिक व सामरिक कार्यवाही की जाए

जम्मू-कश्मीर सरकार को बर्खास्त कर राष्ट्रपति शासन लागू किया जाए

आगरा, पंकज जैन। 22 अप्रैल 2025 को जम्मू-कश्मीर के पहलगांव में घटित धर्म आधारित सामूहिक हत्याकांड ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया है। विश्व हिन्दू राष्ट्र परिषद – उत्तर प्रदेश ने इस कायरतापूर्ण आतंकी घटना की कड़ी निंदा करते हुए महामहिम राष्ट्रपति को संबोधित ज्ञापन के माध्यम से तत्काल कठोर कार्रवाई की मांग की है।

प्रेस को संबोधित करते हुए परिषद् के पदाधिकारियों ने कहा कि जिस प्रकार हिन्दू तीर्थयात्रियों और स्थानीय नागरिकों को धर्म पूछकर निशाना बनाकर मौत के घाट उतारा गया, वह भारत जैसे लोकतांत्रिक देश के लिए अत्यंत शर्मनाक और खतरनाक संकेत है। यह हमला न केवल मानवता के विरुद्ध अपराध है, बल्कि देश की अखंडता, आस्था और सामाजिक समरसता पर सीधा प्रहार है।

परिषद् के अनुसार, यह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है कि भारत में अब हिन्दू पहचान मृत्यु का कारण बन रही है, और जम्मू-कश्मीर सरकार की चुप्पी और ढीलापन कहीं न कहीं पाकिस्तान-समर्थक रुख का संकेत देता है। परिषद् ने इस घटना को आतंकी हमला बताते हुए राज्य सरकार की बर्खास्तगी और राष्ट्रपति शासन लागू करने की पुरजोर मांग की है।

विश्व हिन्दू राष्ट्र परिषद् की 5 प्रमुख मांगें:

1. पाकिस्तान के खिलाफ तत्काल और कठोर कूटनीतिक, आर्थिक व सामरिक कार्यवाही की जाए।
2. जम्मू-कश्मीर सरकार को बर्खास्त कर राष्ट्रपति शासन लागू किया जाए।
3. हिन्दू नागरिकों एवं पर्यटकों की सुरक्षा हेतु स्थायी व प्रभावी सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित की जाए।
4. इस हमले में संलिप्त सभी आतंकियों को तत्काल चिन्हित कर कठोरतम दंड दिया जाए।
5. उन राजनीतिक तत्वों की जांच व पहचान की जाए जो इस हमले के बाद भी तुष्टिकरण की राजनीति में लिप्त हैं।

परिषद् ने चेतावनी दी है कि यदि इस प्रकार की घटनाओं पर अब भी सरकार मूकदर्शक बनी रही, तो यह देश के करोड़ों हिन्दुओं की सुरक्षा और विश्वास को गहरा आघात पहुंचाएगा। परिषद् ने महामहिम राष्ट्रपति से शीघ्र संज्ञान लेने और निर्णायक कार्रवाई करने की अपील की है।

इस दौरान धर्मा दिवाकर,

भारत वर्मा, दीपक जैन, आकाश जैन, पंकज जैन, सचिन राजपूत, संजय ठाकुर, सौरभ ठाकुर, गोल्डी जैन, दीपक चौहान, रवि अरोड़ा, चौ. राजवीर सोनकर, सुरेन्द्र सिंह चौहान, मुकेश चौधरी, किशन बघेल, सचिन सोनी, रोहित सोनी, ठा. गौरव बाकरे, कमल किशोर (राहुल) पं. राजकुमार त्रिवेदी, अविनाश राणा, अमित सिंह, राजेश वर्मा, प्रदीप दुबे आदि उपस्थित रहे।

पंचतत्व में विलीन हुए शुभम ,सीएम योगी ने कानपुर पहुंच दी श्रद्धांजलि, बंधाया परिजनों को ढांढस

सुनील बाजपेई

कानपुर। यूपी के सीएम योगी आदित्य नाथ ने आज जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में कायरतापूर्ण आतंकी हमले में 25 अन्य लोगों के साथ गोली मारकर असमय मौत के घाट उतारे गये श्री शुभम द्विवेदी के कानपुर के महराजपुर स्थित हाथी गांव के पैतृक आवास पर पहुंचकर उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने के साथ ही शोकाकुल परिजनों से भेंट कर उन्हें ढांढस भी बंधाया।

सीएम योगी ने कहा कि प्रभु श्री राम से प्रार्थना है कि दिवंगत पुण्यात्मा को अपने श्री चरणों में स्थान तथा शोक संतप्त परिजनों को यह अथाह दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।हम पीड़ित परिवारों के साथ खड़े हैं।

उन्होंने यह भी भरोसा दिलाया कि जिस तरीके से आतंकवादियों ने मां-बहनों के सिन्दूर के साथ बर्बरता की है। उसी प्रकार से आतंकवादियों और उनके आकाओं को सजा जरूर मिलेगी। सीएम योगी ने यह भी कहा कि पहलगाम की घटना बताती है कि आतंकवाद अब अपनी अंतिम सांस ले रहा है। उन्होंने कहा कि जाति और धर्म पूछकर बहन-बेटियों के सामने उनके सिंदूर को उजाड़ा जाए, भारत के अंदर यह कतई स्वीकार्य नहीं ह।

मुख्य मंत्री ने कहा किपहलगाम की घटना बताती है कि आतंकवाद अब अपनी अंतिम सांस ले रहा ह लेकिन जाति और धर्म पूछकर बहन-बेटियों के सामने उनके सिंदूर को उजाड़ा जाए, भारत के अंदर यह कतई स्वीकार्य नहीं है। यहां उनके साथ विधान सभाध्यक्ष सतीश महाना , मंत्री राकेश सचान, सांसद रमेश अवस्थी सहित भाजपा के सभी विधायक नेता और पदाधिकारियों के साथ सैकड़ों लोगं मौजूद रहे।

चाचा ने दी चिता को मुखाग्नि

आज यहां गुरुवार को जम्मू काश्मीर के पहलगाम में आतंकियों द्वारा 25 अन्य के साथ गोलीमार कर मौत के घाट उतारे गये शुभम को सैकड़ों लोगों ने अश्रुपूरित नेत्रों के साथ अतिम विधाई दी। शुभम का अंतिम संस्कार आज यहां महराजपुर के ड्योढी घाट पर किया गया। शुभम की चिता को मुखाग्नि उनके चाचा मनोज द्विवेदी ने दी और क्रिया कर्म श्रवण कुमार पंडा द्वारा कराया गया।

इस मौके पर शासन, प्रशासन और लोगों को तांता लगा रहा। इससे पहले सीएम योगी, कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष अजय राय, सांसद रमेश अवस्थी समेत अन्य लोगों ने श्रद्धांजलि दी। शुभम का नाम हर जुबान पर था। राजनेता हों या नौकरशाह, व्यापारी, छात्र, संगठन, सभी शुभम की असामयिक मौत से गुस्से में हैं। एक ही बात जुबां पर थी, मौत का बदला लो।

विश्व मलेरिया दिवस आज

विश्व मलेरिया दिवस एक वैश्विक स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम है जो प्रतिवर्ष 25 अप्रैल को मनाया जाता है , यह विभिन्न स्थानीय और सरकारी स्वास्थ्य अधिकारियों और नीति निर्माताओं से मलेरिया से लड़ने और उन्मूलन के लिए आवश्यक कार्रवाई को बढ़ावा देने का एक वैश्विक आह्वान है।

मलेरिया नामक परजीवी संक्रमण मादा (एनोफिलीज) मच्छर द्वारा फैलता है और यह गंभीर, कभी-कभी घातक बीमारी का कारण बन सकता है। मलेरिया से हर साल 200 करोड़ लोगों को खतरा होता है, जिसमें 90 स्थानिक देशों के निवासी और 12.5 करोड़ अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक शामिल हैं। प्लास्मोडियम परजीवी एक जटिल जीवन चक्र प्राप्त करते हैं जिसके परिणामस्वरूप समय-समय पर बुखार होता है। अधिकांश रोगी उपचार के बाद मलेरिया के लक्षणों से जल्दी ठीक हो जाते हैं, लेकिन उपचार में देरी होने पर गंभीर मलेरिया संबंधी एनीमिया, सेरेब्रल मलेरिया, कोमा या मृत्यु जैसी गंभीर जटिलताएँ हो सकती हैं।

विश्व मलेरिया दिवस (WMD) का महत्व

मलेरिया दुनिया में सबसे घातक परजीवी रोगों में से एक है, जिसके कारण 2017 में वैश्विक स्तर पर 21.9 करोड़ से अधिक मामले सामने आए और 4.35 लाख मौतें हुईं। इस संख्या को कम करने के लिए, इस बीमारी और इसकी रोकथाम के बारे में जागरूकता बढ़ाना सर्वोच्च प्राथमिकता है, जिसमें शुरुआती लक्षणों, सावधानियों और उपचार विकल्पों के बारे में जनता को शिक्षित करना शामिल है। शोध अध्ययनों से पता चला है कि मलेरिया का शीघ्र निदान और उपचार मलेरिया के लक्षणों और इसकी रोकथाम के बारे में जागरूकता बढ़ाकर मृत्यु दर को कम कर सकता है।

विश्व मलेरिया दिवस वैश्विक ध्यान आकर्षित करने और लोगों के प्रभावित होने के जोखिम को कम करने में सहायता करने का एक मंच है। यह वर्ष 2020 में स्पष्ट हुआ, जहां COVID-19 महामारी के कारण, विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा जागरूकता सेवाओं में व्यवधान आया, जिसके कारण प्रति 1000 लोगों पर मलेरिया के मामलों में वृद्धि हुई (2000 में 81/1000 लोगों से 2019 में 56/1000 लोगों तक और उसके बाद 2020 में 59/1000 लोगों तक)। 2019 की तुलना में 2020 में मृत्यु दर (मृत्यु) बढ़कर 12% हो गई है। दुनिया भर में, यह अनुमान लगाया गया था कि 2000 और 2020 के बीच, 106 लाख मलेरिया से मौतें हुईं और 170 करोड़ मलेरिया के मामलों को रोका गया। WHO अफ्रीकी क्षेत्र में मामलों का सबसे बड़ा प्रतिशत (82%) और मौतों (95%) को रोका गया, इसके बाद WHO दक्षिण-पूर्व एशिया क्षेत्र (मामले 10% और मौतें 2%) का स्थान रहा।

विश्व मलेरिया दिवस (WMD) का इतिहास

विश्व मलेरिया दिवस, जिसे पहली बार 2008 में मनाया गया था, अफ्रीका मलेरिया दिवस से विकसित हुआ था, जिसे 2001 से अफ्रीकी देशों द्वारा सम्मानित किया गया था। स्मरणोत्सव ने मलेरिया को रोकने और अफ्रीकी देशों में इसकी मृत्यु दर को कम करने के लिए लक्षित उद्देश्यों की स्थिति का मूल्यांकन करने का अवसर प्रदान किया। 2007 में, यह प्रस्ताव रखा गया था कि दुनिया भर में मलेरिया के प्रसार को स्वीकार करने और बीमारी को खत्म करने के वैश्विक अभियान के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए विश्व स्वास्थ्य सभा (विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा आयोजित एक सभा) के 60वें सत्र में अफ्रीका मलेरिया दिवस का नाम बदलकर विश्व मलेरिया दिवस कर दिया जाए।

मलेरिया रोग की रोकथाम

निम्नलिखित उपाय मच्छरों के काटने के जोखिम को कम करने में मदद कर सकते हैं

शरीर पर 20-35% एन, एन-डाइएथिल-मेटा-टोलुमाइड कीट विकर्षक लगाएं।

रात में बाहर जाते समय लंबी आस्तीन वाली पोशाक और लंबी पैंट पहनें।

रात में बिस्तर पर मच्छरदानी का प्रयोग करें।

बिस्तर पर जाने से पहले, बेडरूम में पाइरेथ्रिन या संबंधित कीटनाशक का छिड़काव करें।

घर के आस-पास कभी भी पानी जमा न होने दें।

गणित के मंदिर का दीप: रामानुजन और उनकी अमर ज्योति

संख्याओं के ऋषि, सूत्रों के साधक रामानुजन: जिसकी सोच ने अनंत को आकार दिया

जब संख्याएँ गूँज उठती हैं और समीकरण आत्मा के साथ नृत्य करते हैं, तब एक नाम सृष्टि के कण-कण में बस जाता है —श्रीनिवास रामानुजन। 26 अप्रैल, 1920, वह काला दिन जब भारत की धरती ने अपने इस अनमोल रत्न को खो दिया, पर उनकी गणितीय चेतना ने अनंत काल के लिए विश्व को रोशन कर दिया। यह पुण्यतिथि नहीं, एक महान तपस्वी की साधना का उत्सव है, जिसने गणित को न केवल विज्ञान, बल्कि काव्य, दर्शन और ईश्वर से जोड़ दिया। रामानुजन कोई साधारण गणितज्ञ नहीं थे; वे थे संख्याओं के संत, सूत्रों के साधक, और ब्रह्मांड के रहस्यों के द्रष्टा। उनकी कहानी वह चिंगारी है जो हर असंभव को संभव में बदल देती है।

तमिलनाडु के छोटे से शहर इरोड में 22 दिसंबर, 1887 को जन्मे रामानुजन का जीवन किसी परीकथा से कम नहीं। एक साधारण ब्राह्मण परिवार, आर्थिक तंगी, और औपचारिक शिक्षा का अभाव — ये सब उनके सामने दीवारें थीं, पर उनकी प्रतिभा ऐसी तूफानी लहर थी जो हर बाधा को चूर कर देती थी। बचपन से ही संख्याएँ उनकी सखी थीं, उनके सपने थीं। जहाँ बच्चे मिट्टी के खिलौनों में खोए रहते, वहीं रामानुजन संख्याओं के जादुई संसार में गोते लगाते। स्कूल की किताबें उनके लिए छोटी पड़ गईं; उन्होंने स्वयं गणित के गहन समुद्र में डुबकी लगाई। 15 वर्ष की उम्र में जब उनके हाथ जी.एस. कार की 'ए सिनॉप्सिस ऑफ एलिमेंट्री रिजल्ट्स इन प्योर मैथमैटिक्स' लगी, तो यह उनके लिए किसी वेद की तरह थी। इस किताब ने उनकी प्रतिभा को पंख दिए, और उनकी नोटबुक्स में सूत्रों का अमृत उमड़ने लगा।

रामानुजन का गणित केवल गणनाओं का खेल नहीं था; वह एक आध्यात्मिक यात्रा थी। उनकी कुलदेवी नमगिरी उनके लिए प्रेरणा की स्रोत थीं। वे कहते थे, "हर सूत्र जो मेरे मन में आता है, वह देवी की कृपा है।" उनके लिए गणित और ईश्वर एक ही सत्य के दो रूप थे। उनकी रचनाएँ — चाहे वह अनंत श्रृंखलाएँ हों, निरंतर भिन्न हों, या विभाजन फलन — मानो ब्रह्मांड की गूढ़ भाषा में लिखी गई कविताएँ थीं। उनकी पाई (Π) की गणना के लिए दी गई श्रृंखलाएँ इतनी सुंदर और सटीक थीं कि आज भी सुपरकंप्यूटर उनकी मदद लेते हैं। रामानुजन का विभाजन फलन, जो यह बताता है कि किसी संख्या को कितने तरीकों से छोटी संख्याओं के योग के रूप में लिखा जा सकता है, गणित में क्रांति ला गया। उनके थीटा फलन और मॉड्यूलर समीकरणों ने आधुनिक भौतिकी, क्रिप्टोग्राफी, और ब्लैक होल सिद्धांत तक में अपनी जगह बनाई।

उनकी प्रतिभा तब विश्व के सामने आई, जब उन्होंने 1913 में कैम्ब्रिज के प्रख्यात गणितज्ञ जी.एच. हार्डी को पत्र लिखा। उस पत्र में दर्जनों सूत्र थे, जिन्हें देख हार्डी स्तब्ध रह गए। पहले तो उन्हें विश्वास ही नहीं हुआ कि कोई स्वशिक्षित भारतीय इतने गहन और मौलिक सूत्र लिख सकता है। पर जब उन्होंने रामानुजन से मुलाकात की, तो उनकी प्रतिभा के सामने नतमस्तक हो गए। हार्डी ने कहा, "रामानुजन का गणित मानव मस्तिष्क से परे है; यह ईश्वर की प्रेरणा है।" रामानुजन को कैम्ब्रिज बुलाया गया, और वहाँ हार्डी के साथ उनकी जोड़ी ने गणित की दुनिया में तहलका मचा दिया। हार्डी-रामानुजन फॉर्मूला, जो प्राइम नंबर्स की गणना से संबंधित है, और उनकी संयुक्त शोध पत्रिकाएँ आज भी गणित के स्वर्णिम पन्नों में दर्ज हैं।

रामानुजन की नोटबुक्स उनकी सबसे बड़ी विरासत हैं। इनमें हजारों सूत्र और प्रमेय हैं, जिनमें से कई को समझने में गणितज्ञों को दशकों लग गए। उनकी मॉक थीटा फलन, जिन्हें उन्होंने मृत्युशैया पर लिखा, गणित का एक ऐसा रहस्य है जिसे 21वीं सदी में पूरी तरह समझा गया। ये फलन आज क्वांटम भौतिकी और स्ट्रिंग सिद्धांत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनकी रीमान जेटा फलन से संबंधित खोजें आज भी गणित के सबसे बड़े अनसुलझे सवालों में से एक, रीमान हाइपोथेसिस, को समझने में मदद करती हैं।

पर रामानुजन का जीवन केवल गणित की कहानी नहीं; यह संघर्ष, विश्वास, और बलिदान की गाथा भी है। कैम्ब्रिज में उन्हें न केवल सांस्कृतिक और सामाजिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा, बल्कि उनकी शाकाहारी जीवनशैली और इंग्लैंड की ठंडी जलवायु ने उनके स्वास्थ्य को भी प्रभावित किया। 1917 में उन्हें टीबी का पता चला, और 1919 में जब वे भारत लौटे, उनकी हालत और बिगड़ गई। 32 वर्ष की अल्पायु में, 26 अप्रैल, 1920 को कुंभकोणम में उनका नश्वर शरीर इस संसार से चला गया। पर उनकी आत्मा, उनके सूत्र, और उनकी प्रेरणा आज भी जीवित हैं। उनकी मृत्यु के बाद भी उनकी नोटबुक्स ने गणितज्ञों को नई दिशाएँ दीं। 1976 में उनकी एक खोई हुई नोटबुक, जिसे 'लॉस्ट नोटबुक' कहा जाता है, की खोज ने गणित की दुनिया में सनसनी मचा दी।

रामानुजन का प्रभाव केवल गणित तक सीमित नहीं। उनकी कहानी हर उस व्यक्ति को प्रेरित करती है जो बाधाओं के बीच अपने सपनों को जीता है। भारत में उनकी जन्मशती पर 1987 में राष्ट्रीय गणित वर्ष घोषित किया गया। उनकी नोटबुक्स का अध्ययन आज भी विश्व के शीर्ष गणित संस्थानों में होता है। उनकी जीवनी पर आधारित किताबें, जैसे रॉबर्ट कैनिगल की 'द मैन हू न्यू इन्फिनिटी', और उस पर बनी फिल्म ने उनकी कहानी को विश्वभर में पहुँचाया। भारत सरकार ने उनके सम्मान में 22 दिसंबर को राष्ट्रीय गणित दिवस घोषित किया।

रामानुजन का जीवन हमें सिखाता है कि प्रतिभा किसी डिग्री, धन, या संसाधनों की मोहताज नहीं। उनकी कहानी उस जुनून की कहानी है जो बाधाओं को पार कर इतिहास रच देता है। वे हमें सिखाते हैं कि यदि विश्वास और समर्पण हो, तो एक साधारण इंसान भी असाधारण बन सकता है। उनकी गणितीय खोजें न केवल विज्ञान की उन्नति में योगदान देती हैं, बल्कि यह भी दिखाती हैं कि मानव मस्तिष्क की कोई सीमा नहीं।

आज, 26 अप्रैल को, जब हम उनकी पुण्यतिथि पर सिर झुकाते हैं, यह केवल श्रद्धांजलि नहीं, बल्कि एक संकल्प है — कि हम भी अपने भीतर की चिंगारी को पहचानें और उसे प्रज्वलित करें। रामानुजन की तरह, हमें भी अपने सपनों को साधना में बदलना होगा। संख्याएँ बदलेंगी, प्रमेय सिद्ध होंगे, पर रामानुजन जैसा कोई फिर न होगा। वे हैं गणित के मंदिर के अनंत दीप, जो सदा प्रज्वलित रहेंगे। उनकी विरासत न केवल भारत की, बल्कि समस्त मानवता की धरोहर है। जब तक संख्याएँ बोलेंगी, जब तक समीकरण गूँजेंगे, रामानुजन अमर रहेंगे — एक ऐसी आत्मा, जिसने अनंत को छुआ और उसे दुनिया को सौंप दिया।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

मैच्योरिटी के बाद पीपीएफ खाते का क्या करें?

संजय अग्रवाला, जलपाईगुड़ी, पश्चिम बंगाल

[लेखक पिछले 18 वर्षों से वाणिज्य-अर्थशास्त्र के शिक्षक, वित्तीय एवं कर सलाहकार हैं]

पब्लिक प्रोविडेंट फंड (PPF) खाता न केवल कर बचत का एक लोकप्रिय माध्यम है, बल्कि लंबी अवधि में सुरक्षित और सुनिश्चित रिटर्न देने वाला निवेश भी है। जब PPF खाता मैच्योर होता है, यानी 15 वर्षों की अवधि पूरी हो जाती है, तब निवेशक के सामने कई विकल्प होते हैं। बहुत से लोग इस मोड़ पर भ्रमित हो जाते हैं कि आगे क्या किया जाए। क्या पैसे निकाल लिए जाएं? क्या खाते को बढ़ाया जाए? यदि बढ़ाएं तो पैसे डालते रहें या नहीं? PPF की विशेषता यह है कि इसमें किया गया निवेश, उस पर मिलने वाला ब्याज और मैच्योरिटी पर मिलने वाली पूरी राशि – तीनों ही कर मुक्त होती हैं। यही कारण है कि लोग इसे रिटायरमेंट प्लानिंग के लिए भी उपयुक्त मानते हैं। लेकिन 15 साल बाद जब खाता मैच्योर होता है, तब निर्णय लेना थोड़ा रणनीतिक बन जाता है। मैच्योरिटी के बाद पहला विकल्प यह है कि आप पूरा पैसा निकाल सकते हैं और खाता बंद कर सकते हैं। यह विकल्प उन लोगों के लिए उपयुक्त है जिन्हें उस समय राशि की ज़रूरत हो – जैसे बच्चों की उच्च शिक्षा, शादी, घर बनवाना या कोई बड़ा निवेश। इस स्थिति में खाता बंद हो जाएगा और आगे उस पर ब्याज नहीं मिलेगा। यदि किसी की उम्र अधिक हो गई है और निवेश के लिए लंबा समय शेष नहीं है, तो यह विकल्प उनके लिए उपयुक्त हो सकता है।

दूसरा विकल्प है – खाते को बिना किसी योगदान के आगे बढ़ाना। इसे 'Extend without Contribution' कहा जाता है। इस स्थिति में खाता हर पाँच वर्षों के ब्लॉक में आगे बढ़ता है और आप चाहें तो अगले ब्लॉक के लिए भी इसे ऐसे ही बढ़ा सकते हैं। इस स्थिति में भले ही आप नया पैसा जमा न करें, लेकिन पुराने बैलेंस पर सरकार ब्याज देती रहेगी। यह विकल्प उन लोगों के लिए उपयुक्त है जो चाहते हैं कि उनका पैसा सुरक्षित बना रहे और उस पर ब्याज मिलता रहे, लेकिन वे नई जमा नहीं करना चाहते। खास बात यह है कि इस दौरान आप हर वर्ष एक बार आंशिक निकासी कर सकते हैं, जिससे आपकी लिक्विडिटी भी बनी रहती है।

तीसरा विकल्प है – खाते को योगदान के साथ बढ़ाना, यानी 'Extend with Contribution'। यदि आप अब भी निवेश करते रहना चाहते हैं और आपको PPF की सुरक्षित ब्याज दर पसंद है, तो आप खाते को पांच वर्षों के लिए आगे बढ़ा सकते हैं और उसमें हर

साल अधिकतम ₹1.5 लाख तक का निवेश कर सकते हैं। यह विकल्प केवल तब उपलब्ध होता है जब आप मैच्योरिटी के एक साल के भीतर फॉर्म भरकर इसकी जानकारी PPF कार्यालय को दें। इस स्थिति में आपको नए निवेश पर भी ब्याज मिलेगा और टैक्स छूट भी जारी रहेगी। कई लोग इस विकल्प को चुनते हैं जब वे नौकरी में सक्रिय हैं और उन्हें टैक्स प्लानिंग करनी होती है। लेकिन यदि आप मैच्योरिटी के बाद समय रहते फॉर्म नहीं भरते हैं, तो मान लिया जाएगा कि आपने खाता बिना योगदान के ही बढ़ाया है और फिर आप उस ब्लॉक के दौरान कोई जमा नहीं कर पाएंगे। इसलिए समय पर निर्णय लेना ज़रूरी है।

अब प्रश्न उठता है कि क्या खाते को एक से अधिक बार बढ़ाया जा सकता है? इसका उत्तर है – हाँ। आप हर पाँच साल के ब्लॉक में खाते को तब तक बढ़ा सकते हैं जब तक आप चाहें। हर बार आपको नया विकल्प चुनने का मौका मिलता है – चाहे बिना निवेश के या निवेश के साथ। यही कारण है कि कई लोग अपने रिटायरमेंट के वर्षों में भी इस खाते को चालू रखते हैं। कई बार देखा गया है कि लोग मैच्योरिटी के बाद पैसे निकाल लेते हैं और उन पैसों को कहीं और निवेश कर देते हैं, जैसे फिक्स्ड डिपॉजिट या म्यूचुअल फंड में। यह तब उचित होता है जब आपको अधिक लिक्विड फंड की आवश्यकता हो या आप थोड़ी जोखिम के साथ उच्च रिटर्न की तलाश में हों। लेकिन ध्यान देने की बात है कि PPF जैसा टैक्स फ्री, सरकार द्वारा गारंटीड रिटर्न वाला विकल्प आपको कहीं और नहीं मिलेगा। इसलिए जब तक ज़रूरत न हो, उस पैसे को वहीं रहने देना एक सुरक्षित निर्णय हो सकता है। इसके अतिरिक्त एक और उपयोगी रणनीति यह है कि आप निकासी और योगदान को मिलाकर संतुलन बनाए रखें। उदाहरण के लिए, यदि आप योगदान के साथ आगे बढ़ा रहे हैं, तो आप हर वर्ष आंशिक निकासी भी कर सकते हैं। इससे आपकी टैक्स प्लानिंग भी होती रहेगी और आवश्यकता अनुसार धन भी मिलता रहेगा।

जो लोग रिटायर हो चुके हैं और अब टैक्स स्लैब में नहीं आते, उनके लिए बिना योगदान के विस्तार एक उत्तम विकल्प हो सकता है। इससे उन्हें हर साल ब्याज मिलता रहेगा जो उनके नियमित खर्चों में सहायक हो सकता है। कई बार निवेशक यह प्रश्न करते हैं कि क्या PPF के पैसे को अन्य जगह जैसे एन्यूटी प्लान, सीनियर सिटीजन सेविंग स्कीम या पोस्ट ऑफिस MIS में लगाया जाए? यह निर्णय आपकी उम्र, जोखिम सहनशीलता और वित्तीय ज़रूरतों पर निर्भर करता है। एक संयोजन रणनीति जिसमें कुछ राशि इन विकल्पों में और कुछ PPF में बनी रहे, वह बेहतर हो सकती है।

इस सबके बीच सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि निर्णय सोच-समझकर और समय रहते लिया जाए। यदि आप फॉर्म नहीं भरते हैं या निर्णय टालते हैं, तो आपके विकल्प सीमित हो सकते हैं। कई बार जानकारी के अभाव में लोग उस सुरक्षित निवेश से हाथ धो बैठते हैं जो वर्षों से उनका साथ दे रहा था। अंततः, PPF खाते की मैच्योरिटी एक अवसर है – एक नया पड़ाव, जहां आप अपने भविष्य को और भी सुरक्षित बना सकते हैं। समझदारी, योजना और जागरूकता से आप इस अवसर का सर्वोत्तम लाभ उठा सकते हैं। आपका PPF खाता केवल एक निवेश नहीं, बल्कि आपकी वित्तीय स्वतंत्रता की ओर एक स्थिर कदम है – और उसकी मैच्योरिटी वह मोड़ है जहां समझदारी से लिए गए निर्णय आपके वर्षों की मेहनत को फलदायी बना सकते हैं।

नई जनरेशन लेक्सस ईएस हुई शोकेस, पहली बार पूरी तरह से इलेक्ट्रिक पावरट्रेन में होगी लॉन्च

परिवहन विशेष न्यूज

चीन में हो रहे ऑटो शंघाई शो 2025 में लेक्सस ने नई जनरेशन Lexus ES को शोकेस किया है। इसे पहली बार पूरी तरह से इलेक्ट्रिक पावरट्रेन ऑप्शन के साथ पेश किया जाएगा। वहीं इसके ICE-पावर्ड वेरिएंट को 2.0-लीटर पेट्रोल इंजन या 2.5-लीटर पेट्रोल यूनिट इंजन के साथ लाया जा सकता है। इसमें पैसेंजर्स की सुरक्षा के लिए कई एडवांस फीचर्स दिए जा सकते हैं।

नई दिल्ली। हाल ही में चीन में ऑटो शंघाई शो 2025 चल रहा है। यहां पर लेक्सस ने नई जनरेशन की Lexus ES को शोकेस किया है। इसमें नया नया एक्सटीरियर और इंटीरियर देखने के लिए मिला है, जो लोगों को काफी आकर्षित करने वाला है। इसकी खास बात यह है कि पहली बार Lexus ES को पूरी तरह से इलेक्ट्रिक पावरट्रेन ऑप्शन के साथ पेश किया जाएगा। आइए जानते हैं कि Lexus ES की वो 5 खूबियां, जो इसे बेहतरीन लग्जरी सेडान बनाती है।

डिजाइन

मौजूदा जनरेशन की लेक्सस ES में बोल्ड फ्रंट दिया गया है, जो बड़ी ग्रिल के साथ आती है। नई जनरेशन में इसे हटा दिया गया है। नई जनरेशन Lexus ES में शार्प स्टाइलिंग के साथ एक शानदार मेकओवर दिया गया है। इसके फ्रंट प्रोफाइल में एक साफ-सुथरा लुक मिलता है, जिसके दोनों तरफ स्लीक LED DRLs दिए गए हैं। इसके इलेक्ट्रिक वर्जन में क्लोज्ड-ऑफ फ्रंट डिजाइन दिया गया है। इसमें रूफलाइन, फ्लश डोर हैंडल और नए डिजाइन किए गए एलॉय व्हील दिए गए हैं। पीछे की तरफ इसे पूरी तरह से नया डिजाइन दिया गया है, जिसमें कनेक्टेड LED लाइट बार और बीच में एक इल्यूमिनेटेड LEXUS लेटरमार्क मिलता है।

इंटीरियर

नई जनरेशन Lexus ES में टच-सेंसिटिव कंट्रोल के साथ ज्यादा बेहतरीन केबिन दी गई है। इसके डैशबोर्ड पर 14 इंच की बड़ी इंफोटेनमेंट स्क्रीन मिलती है, जबकि सेंटर कंसोल को सिंपल लुक और स्टेरेज स्पेस के साथ दिया गया है। इसमें प्रीमियम लेदरेट सीट अपहोल्स्ट्री और पूरे केबिन में बहुत सारे सॉफ्ट-टच मटीरियल के साथ केबिन को शानदार अनुभव मिलता है।

फीचर्स

नई-जनरेशन Lexus ES में 14 इंच के टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम के अलावा 12.3 इंच का डिजिटल ड्राइवर डिस्प्ले, मार्क लेविंसन साउंड सिस्टम, इलेक्ट्रोक्रोमैटिक पैनोरमिक ग्लास रूफ, वायरलेस फ़ोन चार्जिंग और पावर्ड सीट जैसे फीचर्स मिलते हैं। इसमें पैसेंजर की सेफ्टी के लिए एडाप्टिव क्रूज कंट्रोल, ड्राइवर मॉनिटरिंग सिस्टम, प्री-कोलिजन वार्निंग, लेन डिपार्चर अलर्ट और एडाप्टिव हाई बीम सिस्टम जैसे ADAS फीचर से लैस किया गया है।

पावरट्रेन ऑप्शन

नई-जनरेशन Lexus ES को हाइब्रिड तकनीक के साथ तीन पेट्रोल इंजन ऑप्शन के साथ पेश करेगी। इसके साथ ही दो इलेक्ट्रिक पावरट्रेन ऑप्शन भी मिलेगा। अभी तक इसके इलेक्ट्रिक वेरिएंट की बैटरी कैपेसिटी का खुलासा नहीं किया गया है। इसके ICE-पावर्ड वेरिएंट को 2.0-लीटर पेट्रोल इंजन या 2.5-लीटर पेट्रोल यूनिट इंजन के साथ पेश किया जा सकता है।

भारत में कब होगी लॉन्च?

नई-जनरेशन Lexus ES को भारत में लॉन्च करने को लेकर अभी तक एलान नहीं किया गया है। अगर यह भारत में लॉन्च होती है, तो इसकी एक्स-शोरुम कीमत 64 लाख रुपये के आसपास हो सकती है।

नए डिजाइन के साथ आ रही यीज़्दी एडवेंचर, 15 मई को भारत में होगी लॉन्च

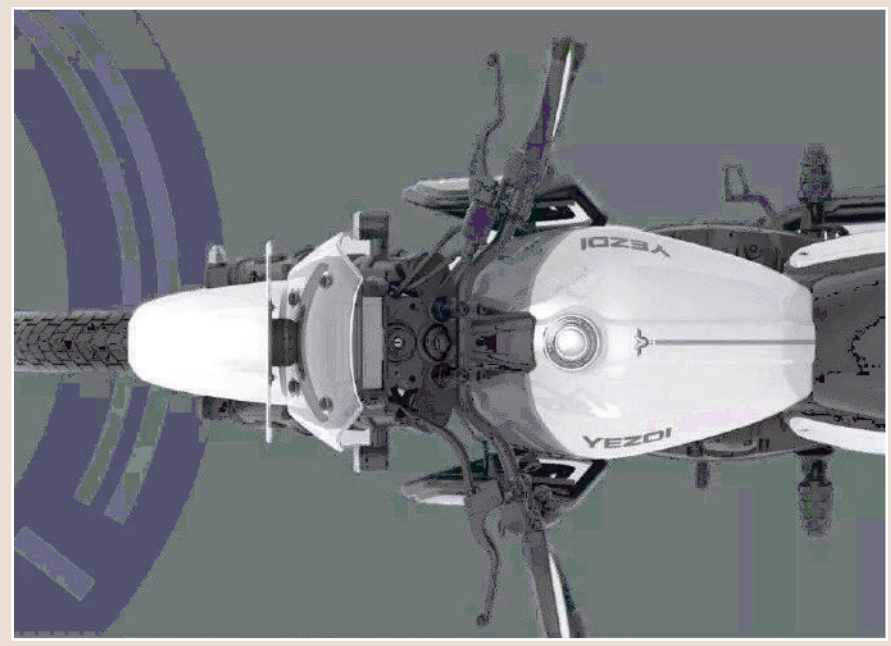

परिवहन विशेष न्यूज

क्लासिक लीजेंड्स येज़्दी एडवेंचर का अपडेटेड वर्जन भारत में 15 मई 2025 को लॉन्च होने वाली है। इसे नए डिजाइन के साथ लॉन्च किया जाएगा। इसे नया डिजाइन देने के साथ ही नए फीचर्स से भी लैस किया जा सकता है। इसका नया डिजाइन इसे अपने सेगमेंट में सबसे अलग दिखाने में मदद करेगा। आइए जानते हैं कि इसके बारे में।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में जल्द ही Classic Legends Yezdi Adventure लॉन्च होने वाली है। इसे अगले महीने 15 मई 2025 को लॉन्च किया जाएगा। इस बाइक को अपडेटेड डिजाइन के साथ ही कई बेहतरीन फीचर्स से लैस किया जा सकता है। इसके साथ ही इसका पहले से ज्यादा पावरफुल भी हो सकता है। आइए जानते हैं कि अगल महीने लॉन्च होने जा रही Classic Legends Yezdi Adventure में क्या कुछ नया दिया जा सकता है?

मिलेगा नया डिजाइन

साल 2024 में क्लासिक लीजेंड्स ने Yezdi Adventure का अपडेटेड वर्जन को लॉन्च किया था। इस अपडेट में काफी हद तक अपडेटेड इंजन और डिजाइन में बदलाव किया गया था। इसके फ्यूल टैंक के आसपास मेचट क्रैस केज के आसपास अपडेट देखने के लिए मिला था। इन अपडेट के बाद यह काफी बेहतरीन मोटरसाइकिल हो गई थी।

अब कंपनी फिर से इसके एडवेंचर बाइक को अपडेट करने जा रही है। इसके साथ ही कंपनी इसे नए अपडेट के साथ लॉन्च करने की तैयारी भी शुरू कर दी है। इसके डिजाइन में बदलाव देखने के लिए मिल सकता है, जिससे यह अपने सेगमेंट में सबसे अलग दिखाई देगी। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, इसके इंजन में किसी तरह का बदलाव देखने के लिए नहीं मिलेगा, लेकिन हमें उम्मीद है कि नए वर्जन में बाइक का इंजन को ज्यादा पावर के साथ आ सकती है।

कैसा है Yezdi Adventure का इंजन

मौजूदा Yezdi Adventure में 334cc, लिक्विड-कूल्ड, सिंगल-सिलिंडर 'अल्फा2' इंजन का इस्तेमाल किया जाता है, जो 29.6PS की पावर और 29.8Nm का टॉर्क जनरेट करेगा। इसके इंजन को 6-स्पीड गियरबॉक्स के साथ जोड़ा गया है।

Yezdi Adventure के फीचर्स

मौजूदा मॉडल में ऑल-एलईडी लाइटिंग मिलती है। इसमें ब्लूटूथ के जरिए स्मार्टफोन कनेक्टिविटी के साथ एक फुल-एलसीडी इंस्ट्रूमेंट कंसोल दिया जाता है, जो टर्न-बाय-टर्न नेविगेशन देताहै। इसके इंस्ट्रूमेंट कंसोल को राइडर अपनी सुविधा के अनुसार एडजस्ट कर सकता है। इसके अलावा, इंस्ट्रूमेंट कंसोल स्पीडोमीटर, ओडोमीटर टैकोमीटर, ट्रिप-मीटर, स्पीडोमीटर, गियर पोजिशन, फ्यूल लेवल, क्लॉक और बेसिक टेलटेल लाइट जैसे फीचर्स मिलते हैं।

Yezdi Adventure की कीमत

येजदी एडवेंचर की कीमत वर्तमान में कलर ऑप्शन के आधार पर 2.10 लाख रुपये से 2.16 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत के बीच है। नए अपडेट के बाद इसकी कीमत में बढ़ोतरी देखने के लिए मिल सकती है। भारत में इसका मुकाबला Hero Xpulse 210 and KTM 250 Adventure और Royal Enfield Himalayan 450 से देखने के लिए मिलता है।

यामाहा एमटी-09 बाइक का हाइब्रिड प्रोटोटाइप पेश, और भी ज्यादा पावरफुल हो जाएगी बाइक

परिवहन विशेष न्यूज

यामाहा एमटी-09 सब-1000cc सेगमेंट में सबसे आक्रामक स्ट्रीट नेकेड मोटरसाइकिलों में से एक है। इसे कंपनी ने अब हाइब्रिड तकनीक के साथ लेकर आने वाली है। यामाहा ने MT-09 प्लग-इन हाइब्रिड कॉन्सेप्ट को पेश किया है। इसमें हाइब्रिड तकनीक देने की वजह स इसका मिड-सेक्शन थोड़ा मोटा दिया गया है। वहीं इसमें एक छोटा सा एलसीडी कंसोल दिया गया है।

नई दिल्ली। स्पोर्ट्स बाइक बनाने वाली जापानी कंपनी यामाहा हमेशा ने अपनी मोटरसाइकिलों को नई तकनीक के साथ लाने के लिए जानी जाती है। हाल ही में कंपनी ने देश की पहली हाइब्रिड मोटरसाइकिल Yamaha FZ-S Fi Hybrid को लॉन्च किया था। अब कंपनी अपनी दूसरी पावरफुल बाइक को में नई SPHEV (सीरीज-पैरेलल हाइब्रिड इलेक्ट्रिक व्हीकल) सिस्टम का इस्तेमाल किया है। वह कोई और नहीं बल्कि नेकेड स्ट्रीट बाइक Yamaha MT-09 है। कंपनी ने इसके प्रोटोटाइप को पेश किया है। आइए जानते हैं कि Yamaha MT-09 Hybrid के बारे में।

बाइक में हाइब्रिड तकनीक का इस्तेमाल

कारों में लंबे समय से हाइब्रिड तकनीक का इस्तेमाल किया जा रहा है, लेकिन अब इसका इस्तेमाल मोटरसाइकिल के लिए भी किया जाने लगा है। हाइब्रिड MT-09 का डिजाइन रेगुलर Yamaha MT-09 की तरह ही है, लेकिन इसका मिड-सेक्शन थोड़ा मोटा दिया गया है। इसके पीछे का कारण इसमें लगा हुआ नया इलेक्ट्रिक मोटर है, जिसे इंजन के ठीक ऊपर लगाया गया है। इसके फ्यूल टैंक में एक ग्रिल दी गई है, जो मोटर के लिए कूलिंग वेंट का काम करता है। इसके हेडलाइट को थोड़ा अलग और ज्यादा स्लीक दिया गया है।

कैसे काम करता है हाइब्रिड तकनीक

जब हाइब्रिड MT-09 रुकती है, तो बाइक इलेक्ट्रिक मोड में चलती है और इलेक्ट्रिक मोटर से पावर लेती है। वहीं, जब आप थ्रॉटल को रोल करते हैं, तो बाइक इलेक्ट्रिक मोड में रहते हुए सड़क पर चलने लग जाती है। जब बाइक एक निश्चित स्पीड पर पहुंच जाती है, तो इंजन स्टार्ट हो जाता है और बाइक हाइब्रिड मोड में चली जाती है। जब बाइक हाइब्रिड मोड में चलती है, तो सिस्टम अपनी इलेक्ट्रिक मोटर से अतिरिक्त पावर के रूप में बूस्ट भी प्रदान करेगा।

फीचर्स

इसमें एक छोटा सा एलसीडी कंसोल दिया गया है, जिसे हैंडलबार पर लगाया गया है। इसमें आपको हाइब्रिड सिस्टम में बचा हुआ चार्ज दिखाई देता है। इसकी बैटरी को चार्जिंग पोर्ट के जरिए चार्ज किया जा सकता है, जिसे मोटरसाइकिल के टेल सेक्शन में दिया गया है।

MT-09 X-Max SPHEV कॉन्सेप्ट पर बेस्ड

MT-09 X-Max SPHEV कॉन्सेप्ट स्कूटर को इस साल के फरवरी में ही पेश किया गया है। इसमें जो तकनीक दी गई है, उस तकनीक पर ही MT-09 हाइब्रिड को डेवलप किया गया है। कंपनी ने अभी तक इसके फीचर्स के बारे में आधिकारिक रूप से घोषणा नहीं की है, लेकिन उम्मीद की जा रही है कि यह नियमित नॉन-हाइब्रिड वर्जन की तुलना में अधिक पावर और टॉर्क जनरेट करेगी।

एक बार फिर टेस्ला मॉडल वाई टेस्टिंग के दौरान स्पॉट, साल के अंत तक शुरु हो सकती है बुकिंग

परिवहन विशेष न्यूज

एक बार फिर से Tesla Model Y को भारत की सड़कों पर टेस्टिंग के दौरान स्पॉट किया गया है। इस बार इसके बाहर के कई फीचर्स देखने के लिए मिला है। जिस तरह की इसकी टेस्टिंग की जा रही है उसे देखते हुए उम्मीद है कि टेस्ला साल के अंत तक भारत में इसकी बुकिंग शुरू कर सकती है और 2026 के शुरुआत से डिलीवरी शुरू हो सकती है।

नई दिल्ली। जब से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इलेक्ट्रिक कार बनाने वाली कंपनी Tesla के मालिक Elon Musk से बात की है, तब से भारत की सड़कों पर टेस्ला की गाड़ियां टेस्टिंग दौरान कई बार स्पॉट हो चुकी है। अब एक बार फिर से Tesla Model Y को भारत की सड़कों पर टेस्टिंग के दौरान स्पॉट किया गया है। इसे पहली बार मुंबई-पुणे एक्सप्रेसवे पर स्पॉट किया गया था। आइए जानते हैं कि इस बार Tesla Model Y के क्या डिटेल्स देखने के लिए मिले हैं?

टेस्टिंग मॉडल में क्या दिखा नया?

जिगव्हील्स की एक रिपोर्ट के मुताबिक, इस बार टेस्टिंग के दौरान स्पॉट हुई Tesla Model Y के कई डिटेल्स देखने के लिए मिले हैं। देखने में इसकी हैडलाइट्स बहुत स्लीक लगती है और इसमें स्प्लिट एलईडी डिजाइन देखने के लिए मिला है, जो इसके फ्रंट फेसिया को एक शार्प और अधिक आधुनिक रूप देता है। ऐसा लगता है कि इसके फ्रंट बम्पर को फिर से डिजाइन किया गया है, जबकि अलॉय व्हील अपडेटेड डिजाइन के हैं। इसके पीछे की तरफ टेल-लैंप एक कनेक्टेड फुल-चौड़ाई लाइट बार देखने के लिए मिला है। इसमें कुछ एक्स्ट्रा विजुअल ड्रामा और साइबरपंक कूल का संकेत दिखाई दिया है।

बैटरी पैक और रेंज

ग्लोबल लेवल पर पेश की जाने वाली Tesla Model Y को दो वेरिएंट में पेश किया जाता है, जो रियर-व्हील-ड्राइव और लॉन्ग-रेंज डुअल-मोटर ऑल-व्हील-ड्राइव है। इसका RWD मॉडल 719 किमी तक की रेंज देने का दावा करता है, जबकि AWD लॉन्ग रेंज वेरिएंट लगभग 662 किमी तक दे सकती है।

इसका RWD मॉडल केवल 5.9 सेकंड में 0 से 100 किमी प्रति घंटे की स्पीड पकड़ सकती है और AWD वेरिएंट यह स्पीड 4.3 सेकंड में पकड़ लेती है। इसमें 250 kW DC फास्ट चार्जिंग मिलती है। इसकी मदद से यह महज 15 मिनट में लगभग 250 किमी की रेंज तक दे सकती है। यह फीचर्स भारत में लॉन्च होने वाले मॉडल में अपरिवर्तित रहने की संभावना है।

भारत में कब होगी लॉन्च?

भारत की सड़कों पर जिस तरह से टेस्ला की गाड़ियों की टेस्टिंग की जा रही है, इसे देखते हुए उम्मीद की जा रही है कि टेस्ला 2025 के अंत भारत में Tesla Model Y के लिए बुकिंग को खोल सकती है, जिसकी साल 2025 के शुरुआत से शुरू हो सकती है। भारत में इसकी कीमत 55 लाख रुपये से 70 लाख रुपये के बीच हो सकती है।

ई20 के अपडेट हुई जेएसडब्ल्यू एमजी हेक्टर, एसयूवी में मिलते हैं कई बेहतरीन फीचर्स, जानें कितनी है कीमत

परिवहन विशेष न्यूज

ब्रिटिश वाहन निर्माता JSW MG मोटर्स की ओर से मिड साइज एसयूवी के तौर पर MG Hector की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से हाल में ही इस एसयूवी को अपडेट किया गया है। किस तरह के अपडेट के साथ इसे ऑफर किया जा रहा है। किस तरह के फीचर्स एसयूवी में मिलते हैं। किस कीमत पर इसे खरीदा जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। ब्रिटिश वाहन निर्माता JSW MG मोटर्स की ओर से भारत में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से भारतीय बाजार में मिड साइज एसयूवी के तौर पर MG Hector की बिक्री की जाती है। JSW MG मोटर्स की ओर से हाल में इस एसयूवी के इंजन को अपडेट किया गया है। किस तरह के अपडेट के साथ इसे ऑफर किया गया है। किस कीमत पर इसे खरीदा जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

JSW MG Hector का इंजन हुआ अपडेट

JSW MG Hector के इंजन को अपडेट कर दिया गया है। निर्माता की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक अब यह E20 कम्प्लाइंट इंजन के साथ ऑफर की जा रही है। एमजी की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक इसके 1.5 लीटर पेट्रोल इंजन को मैनुअल और सीवीटी ट्रांसमिशन के साथ E20 अपडेट के साथ ऑफर किया जा रहा है।

अधिकारियों ने कही यह बात

JSW MG मोटर्स के सेल्स डायरेक्टर राकेश सेन ने कहा कि MG Hector की स्थायी लोकप्रियता इसकी बेहतरीन क्वालिटी और हमारे ग्राहकों की जरूरतों के साथ अलाइनमेंट को बताती है। E20-अनुरूप संस्करण की शुरूआत स्पष्ट रूप से हमारे द्वारा किए जाने वाले हर काम में नवाचार और स्थिरता के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करती है। हमारा लक्ष्य ऐसे वाहनों को ऑफर करना है जो न केवल ग्राहकों की अपेक्षाओं को पूरा करें बल्कि ज्यादा ग्रीन ऑटोमोटिव भविष्य को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं।

मिलते हैं बेहतरीन फीचर्स

JSW MG Hector SUV में 14 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, 75 से ज्यादा कनेक्टिड फीचर्स, पैनोरमिक सनरूफ, Level-2 ADAS, एलईडी लाइट्स, एलईडी डीआरएल, चारों पहियों में डिस्क ब्रेक, एंड्राइड ऑटो, एपल कार प्ले, वायरलेस चार्जर, एबीएस, ईबीडी, एयरबैग, हिल असिस्ट, 360 डिग्री कैमरा जैसे कई फीचर्स को ऑफर करती है।

कितना दमदार इंजन

एमजी हेक्टर एसयूवी को 1.5 लीटर टर्बो पेट्रोल और दो लीटर टर्बो डीजल इंजन के विकल्प में ऑफर किया जाता है। इस एसयूवी में मिलने वाले 1.5 लीटर टर्बो पेट्रोल इंजन के साथ मैनुअल और ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन को दिया जाता है, लेकिन डीजल इंजन के साथ सिर्फ मैनुअल ट्रांसमिशन मिलता है।

कितनी है कीमत

JSW MG Hector को भारतीय बाजार में 13.99 लाख रुपये की शुरुआती एक्स शोरूम कीमत पर ऑफर किया जाता है।

किनसे है मुकाबला

भारतीय बाजार में एमजी हेक्टर को पांच, छह और सात सीटों के विकल्प के साथ लाया जाता है। अपने सेगमेंट में इसे Hyundai Creta, Maruti Grand Vitara, Toyota Urban Cruiser Hyryder, Honda Elevate, Mahindra Scorpio, Mahindra XUV 700, Tata Harrier, Tata Safari जैसी एसयूवी से कड़ी चुनौती मिलती है।

कहानी: बुजदिल

विजय गर्ग

कलावती के पत्नी बन कर उस की जिंदगी में आने के बाद क्या उस की किस्मत ने भी करवट ली थी या सचाई कुछ और ही थी? सुंदर के मन में ऐसी कशमकश पहले शायद कभी भी नहीं हुई थी. वह अपने ही खयालों में उलझ कर रह गया था.

सुंदर बचपन से ही यह सुनता आ रहा था कि औरत घर की लक्ष्मी होती है. जब वह पत्नी बन कर किसी मर्द की जिंदगी में आती है, तो उस मर्द की किस्मत ही बदल जाती है.

सुंदर सोचता था कि क्या उस के साथ भी ऐसा ही हुआ था? कलावती के पत्नी बन कर उस की जिंदगी में आने के बाद क्या उस की किस्मत ने भी करवट ली थी या सचाई कुछ और ही थी?

खूब गोरीचिट्टी, तीखे नाकनक्श और देह के मामले में खूब गदराई कलावती से शादी करने के बाद सुंदर की जिंदगी में जबरदस्त बदलाव आया था. पर इस बदलाव के अंदर कोई ऐसी गांठ थी, जिस को खोलने की कोशिश में सुंदर हमेशा बेचैन हो जाता था.

एक फैक्टरी में क्लर्क के रूप में 8 हजार रुपए महीने की नौकरी करने वाला सुंदर अपनी माली हालत की वजह से खातेपीते दोस्तों से काफी दूर रहता था

सुंदर अपने दोस्तों की महफिल में बैठने से कतराता था. उस के कतराने की वजह थी पैसों के मामले में उस की हलकी जेब. सुंदर की जेब में आमतौर पर इतने पैसे ही नहीं होते थे कि वह दोस्तों के साथ बैठ कर किसी रैस्टोरैंट का मोटा बिल चुका सके.

लेकिन शादी हो जाने के बाद एकाएक ही सबकुछ बदल गया था. सुंदर की अहमियत उस के दोस्तों में बहुत बढ़ गई थी. बड़ीबड़ी महंगी पार्टियों से उस को न्योते आने लगे थे. बात दूरी की हो, तो एकाएक ही सुंदर पर बहुत मेहरबान हुए अमीर दोस्त उस को लाने के लिए अपनी चमचमाती गाड़ी भेज देते थे.

पर किसी भी दोस्त के यहां से आने वाला न्योता अकेले सुंदर के लिए कभी भी नहीं होता था. उस को पत्नी कलावती के साथ ही आने के लिए जोर दिया जाता था.

कई दोस्त तो बहाने से सुंदर के घर तक आने लगे थे और कलावती के हाथ की गरमागरम चाय पीने की फरमाइश भी कर देते थे. चाय पीने के बाद दोस्त कलावती की जम कर तारीफ करना नहीं भूलते थे.

एक दोस्त ने तो कलावती के हाथ की बनी चाय की तारीफ में यहां तक कह डाला था, ''कमाल दूध, चीनी या पत्ती में नहीं, भाभीजी के हाथों में है.''

कम पढ़ीलिखी और बड़े ही साधारण परिवार से आई कलावती अपनी तारीफ से फूली नहीं समाती थी. उस के गोरे गाल लाल हो जाते थे और जोश में वह तारीफ करने वाले दोस्त को फिर से चाय पीने के लिए आने का न्योता दे देती थी.

सुंदर अपने दोस्तों को घर आने के लिए मना भी नहीं कर सकता था. आखिर दोस्ती का मामला जो था. लेकिन वह उन दोस्तों से इतना तंग होने लगा था कि उसे अजीब सी घुटन महसूस होने लगती थी.

सुंदर का एक दोस्त हरीश विदेशी चीजों का कारोबार करता था. वह कारोबार के सिलसिले में अकसर दिल्ली और मुंबई जाता रहता था. वह उम्र में सुंदर से ज्यादा होने के बावजूद अभी भी कुंआरा था.

हरीश काफी शौकीन किस्म का इनसान था. दोस्तों की मंडली में सब से ज्यादा रुपए खर्च करने वाला भी. हरीश जब कभी सुंदर के घर उस से मिलने जाता था, तो कलावती के लिए विदेशी चीजें तोहफे में ले जाता था. हरीश के लाए तोहफों में महंगे परफ्यूम और लिपस्टिक शामिल रहती थीं.

ऐसे तोहफों को देख कर कलावती खिल जाती थी. इस तरह की चीजें औरतों की कमजोरी होती हैं और इस कमजोरी को हरीश पहचानता था.

सुंदर को अपनी बीवी कलावती पर हरीश की मेहरबानी और दरियादिली अखरती थी. वैसे तो शादी के बाद सभी दोस्त ही सुंदर पर मेहरबान नजर आने लगे थे, मगर हरीश की मेहरबानी जैसे एक खुली गुस्ताखी में बदल रही थी.

सुंदर को उस वक्त हरीश उस की मर्दानगी को ही चुनौती देता नजर आता, जब वह विदेशी लिपस्टिक कलावती को ताहफे में देते हुए साथ में एक गहरी मुसकराहट से कहता, ''मैं शर्त के साथ कहता हूं भाभीजी कि इस लिपस्टिक का रंग आप की पर्सनैलिटी से गजब का मैच करेगा.''

हरीश के तोहफे से खुश कलावती 'थैंक्यू' कह कर जब उस को स्वीकार करती, तो सुंदर को ऐसा लगता जैसे वह उस के हाथों से फिसलती जा रही है.

हरीश के पास अपनी गाड़ी भी थी. उस की गाड़ी में बैठते हुए कलावती की गरदन जैसे शान से तन जाती थी. कलावती को गाड़ी में ड्राइवर के साथ वाली सीट पर बैठना अच्छा लगता था, इसलिए वह गाड़ी की अगली सीट पर हरीश के पास ही बैठती थी. मजबूरन सुंदर को गाड़ी की पिछली सीट पर बैठ कर संतोष करना पड़ता था.

शहर में जब कोई नई फिल्म लगती थी, तो हरीश सुंदर से पूछे बिना ही 3 टिकटें ले आता था, इसलिए मना करने की गुंजाइश ही नहीं रहती थी.

जब कलावती फिल्म देखने के लिए तैयार होती थी, तो मेकअप के लिए उन्हीं चीजों को खासतौर पर इस्तेमाल करती, जो हरीश उसे तोहफे में देता रहता था.

सिनेमा जाने के लिए जब कलावती सजधज कर तैयार हो जाती, तो बड़े बिंदास अंदाज में हरीश उस की तारीफ करना नहीं भूलता था. वह कलावती के होंठों पर पुती लिपस्टिक के रंग की खासतौर पर तारीफ करता था.

यह देख कर सुंदर एक बार तो जैसे अंदर से उबल पड़ता था. मगर यह उबाल बासी कढ़ी में आए उबाल की ही तरह होता था.

सिनेमाघर में कलावती सुंदर और हरीश के बीच वाली सीट पर बैठती थी. उस के बदन में से निकलने वाली परफ्यूम की तीखी और मादक गंध दोनों के ही नथुनों में बराबर पहुंचती थी.

परफ्यूम की गंध ही क्यों, बाकी सारे एहसास भी बराबर ही होते थे. अंधेरे सिनेमाघर में अगर कलावती की एक मरमरी नंगी बांह रहरह कर सुंदर को छूती थी, तो वह इस खयाल से बेचैन हो जाता था कि कलावती की दूसरी मरमरी बांह हरीश की बांह को छू रही होगी.

सिनेमाघर में हरीश दूसरी गुस्ताखियों से भी बाज नहीं आता था. सुंदर से कानाफूसी के अंदाज में बात करने के लिए वह इतना आगे को झुक जाता था कि उस का चेहरा कलावती के उभारों को छू लेता था.

जब सुंदर उस दौर से गुजरता, तब मन में इरादा करता कि वह खुले शब्दों में हरीश को अपने यहां आने से मना करेगा, पर बाद में वह ऐसा कर नहीं पाता था. शायद उस में ऐसा करने की हिम्मत नहीं थी. वह शायद बुजदिल था.

हरीश की हिम्मत और बेबाकी लगातार बढ़ती गई. पहले तो सुंदर की मौजूदगी में ही वह उस के घर आता था, मगर अब वह उस की गैरमौजूदगी में भी आनेजाने लगा था.

कई बार सुंदर काम से घर वापस आता, तो हरीश उस को घर में कलावती के साथ चाय की चुसकियां भरते हुए मिलता.

हरीश को देख सुंदर कुछ कह नहीं पाता था, मगर गुस्से के मारे ऐंठ जाता. सुंदर को देख हरीश बेशर्मी से कहता, ''इधर से गुजर रहा था, सोचा कि तुम से मिलता चलूं. तुम घर में नहीं थे. मैं वापस जाने ही वाला था कि भाभीजी ने जबरदस्ती चाय के लिए रोक लिया.''

सुंदर जानता था कि हरीश सरासर झूठ बोल रहा था, मगर वह कुछ भी कर नहीं पाता. जो चीज अब सुंदर को ज्यादा डराने लगी थी, वह थी कलावती का हाथों से फिसल कर दूर होने का एहसास.

कुछ दिन तक सुंदर के अंदर विचारों की अजीब सी उथलपुथल चलती रही, पर हालात के साथ समझौता करने के अलावा उस को कोई दूसरा रास्ता नहीं सूझ रहा था.

सुंदर को मालूम था कि उस जैसे साधारण आदमी की सोसाइटी में जो शान एकाएक बनी थी, वह उस की हसीन बीवी के चलते ही बनी थी, वरना पांचसितारा होटलों, फार्महाउसों की महंगी पार्टियों में शिरकत करना उस के लिए एक हसरत ही रहती.

एक सच यह भी था कि पिछले कुछ महीनों से सुंदर को इन सब चीजों से जैसे एक लगाव हो गया था. यह लगाव ही जैसे कहीं न कहीं उसे उस की मर्दानगी को पलीता लगाता था.

कलावती भी जैसे अपने रूपरंग की ताकत को पहचानने लगी थी, तभी तो सुंदर के हरीश सरीखे दोस्तों से कई फरमाइश करने से वह कभी झिझकती नहीं थी. देखा जाए, तो शादी के बाद कलावती की ख्वाहिशें सुंदर की जेब से नहीं, बल्कि उस के दोस्तों की जेब से पूरी हो रही थीं.

सुंदर को यह भी एहसास हो रहा था कि झूठी मर्दानगी में खुद को धोखा देने से कोई फायदा नहीं. अगर उस का कोई दोस्त उस की बीवी के होंठों के लिए लिपस्टिक का रंग पसंद करता था, तो उस के असली माने क्या हो सकते थे?

अपनी खूबसूरत बीवी के खोने का डर सुंदर को लगातार सता रहा था. इस डर के बीच कई तरह की बातें सुंदर के मन में अचानक ही उठने लगी थीं. पति की जगह एक लालची इनसान उस के विचारों पर हावी होने लगा.

सुंदर को लगने लगा था कि उस की बीवी वास्तव में खूबसूरत थी और उस के यारदोस्त काफी सस्ते में ही उस को इस्तेमाल कर रहे थे. अगर उस की खूबसूरत बीवी अमीर दोस्तों की कमजोरी थी, तो उन की इस कमजोरी का फायदा वह अपने लिए क्यों नहीं उठाता था?

इस बात में कोई शक नहीं कि हरीश जैसे अमीर और रंगीनमिजाज दोस्त कलावती के कहने पर उस के लिए कुछ भी कर सकते थे.

सुंदर की सोच बदली, तो उस की वह तकलीफ भी कम हुई, जो दोस्तों के अपनी बीवी से रिश्तों को ले कर उस के मन में बनी हुई थी.

शर्म और मर्दानगी से किनारा कर के सुंदर ने मौका पा कर कलावती से कहा, ''क्या तुम को नहीं लगता कि हमारे पास भी रहने के लिए एक अच्छा घर और सवारी के लिए अपनी कार होनी चाहिए?''

इस पर कलावती के होंठों पर एक अजीब तरह की मुसकराहट फैल गई. उस ने जवाब में कहा, ''तुम्हारी 8 हजार रुपए की तनख्वाह को देखते हुए मैं इन चीजों के सपने कैसे देख सकती हूं?''

''कुछ कोशिश करने से सबकुछ हासिल हो सकता है.''

''वह कैसे?''

''अगर हमारी आमदनी का कोई ऐक्स्ट्रा जरीया बन जाए, तो कुछ दिनों में ही हमारे दिन भी बदल सकते हैं.''

''मगर, ऐसा कोई जरीया बनेगा कैसे?'' कलावती ने पूछा.

''हरीश का काफी अच्छा कारोबार है. अगर वह चाहे तो बड़ी आसानी से हमारे लिए भी कोई आमदनी का अच्छा सा जरीया बन सकता है,'' एक बेशर्म और लालच से भरी मुसकराहट होंठों पर लाते हुए सुंदर ने कहा.

सुंदर की बात पर कलावती की आंखें थोड़ी सिकुड़ गईं. पति उस से जो कहने के लिए भूमिका तैयार कर रहा था, उसे वह समझ गई थी.

जिस दिन सुंदर ने कलावती से आमदनी का अच्छा जरीया वाली बात की, उसी दिन कलावती काफी रात हुए घर आई. हरीश उस को अपनी गाड़ी से घर के बाहर तक छोड़ने आया था.

यह शायद पहला मौका था, जब हरीश घर के अंदर नहीं आया था.

कलावती अकेले ही अंदर आई थी. उस के होंठों की फीकी पड़ी लिपस्टिक और बिखरेबिखरे बाल जैसे खुद ही कोई कहानी बयान कर रहे थे.

सबकुछ समझते हुए भी सुंदर आज उसे अनदेखा करने के मूड में था. कलावती ने सुंदर को कुछ कहने या सवाल करने का मौका ही नहीं दिया.

होंठों के एक कोर पर फैली लिपस्टिक को हाथ के अंगूठे से साफ करते हुए कलावती ने कहा, ''मैं ने हरीश से बात की है. वह बिना किसी इंवैस्टमैंट के ही हमें अपने काम में 10 फीसदी की पार्टनरशिप देने को तैयार है. इस के लिए मुझे उस के दफ्तर में बैठ कर ही कामकाज में उस का हाथ बंटाना होगा.

''हरीश जो भी सामान बेचता है, वह सब औरतों के इस्तेमाल में आने वाला है, इसलिए उस को लगता है कि एक औरत होने के नाते मैं उस के कारोबार को बेहतर तरीके से देख सकती हूं. जब ऐक्स्ट्रा आमदनी रैगुलर आमदनी की शक्ल ले लेगी, तो मैं बेशक नौकरी छोड़ दूंगी. तुम को मेरे इस फैसले पर कोई एतराज तो नहीं'?''

''नहीं, बिलकुल नहीं,'' सुंदर ने उतावलेपन से कहा.

इस के बाद कलावती हरीश के दफ्तर में जाने लगी. कई बार कलावती खुद चली जाती और कभी उस को लेने के लिए हरीश की गाड़ी आ जाती. रात को कलावती अकसर 9-10 बजे से पहले घर नहीं आती थी. कभी रात को हरीश का ड्राइवर घर पर उसे छोड़ने आता था और कभी हरीश खुद.

कलावती अकसर खाना भी खा कर ही आती थी. अगर वह खाना खा कर नहीं आती, तो घर पर नहीं बनाती थी. सुंदर किसी ढाबे या होटल से खाना ले आता और दोनों मिल कर खा लेते थे.

कलावती के रंगढंग और तेवर लगातार बदल रहे थे. कई बार तो वह रात को घर आती, तो उस के मुंह से तीखी गंध आ रही होती थी. यह तीखी गंध शराब की होती थी.

कलावती के बेतरतीब कपड़ों और बिगड़ा हुआ मेकअप भी खामोश जबान में बहुतकुछ कहता था. मगर सुंदर ने इन सब चीजों की तरफ से जैसे आंखें मूंद ली थीं. उस का खून अब जोश नहीं मारता था.

जो दोस्त कभी सुंदर को घास नहीं डालते थे, वे अपनी की गई मेहरबानियों की कीमत वसूले बिना कैसे रह सकते थे?

अब तो सारा खेल जैसे खुला ही था. एक मर्द अपनी बीवी का इस्तेमाल अपने फायदे के लिए कर रहा था और बीवी सबकुछ समझते हुए भी अपनी खुशी से इस्तेमाल हो रही थी.

इस सारे खेल में हरीश भी खुद को एक बड़े और चतुर खिलाड़ी के रूप में ही देखता था. कारोबार में 10 फीसदी की साझेदारी का दांव खेल कर उस ने अपने दोस्त की खूबसूरत बीवी पर एक तरह से कब्जा ही कर लिया था. अब उस को कई बहाने से दोस्त के घर जाने की जरूरत नहीं रह गई थी. वह पति की रजामंदी से खुद ही उस के पास जो आ गई थी.

जल्दी ही कलावती अपने बैग में नोटों की गड्डियां भर कर लाने लगी थी. कहने को तो नोटों की ये गड्डियां साझेदारी में 10 फीसदी हिस्सा थीं, मगर असलियत में वह कलावती के जिस्म की कीमत थी.

दिन बदलने लगे. केवल एक साल में ही किराए के घर को छोड़ कर सुंदर और कलावती अपने खरीदे हुए नए मकान में आ गए. नया खरीदा मकान जल्दी ही टैलीविजन, वाशिंग मशीन, फ्रिज और एयरकंडीशन से सज भी गया.

दूसरे साल में उन के घर के बाहर एक कार भी सवारी के लिए नजर आने लगी.

लेकिन, इस के साथ ही साथ कलावती जैसे नाम की ही सुंदर की पत्नी रह गई थी. कलावती में घरेलू औरतों वाली कोई भी बात नहीं रह गई थी. अपने पति के कहने पर ही वह पैसा बनाने वाली एक मांसल मशीन बन गई थी.

लोग सुंदर के बारे में तरहतरह की बातें करने लगे थे. कुछ लोग तो पीठ पीछे यह भी कहने लगे थे कि कलावती बीवी तो थी सुंदर की, मगर सोती थी उस के दोस्त हरीश के साथ.

10 फीसदी की मुंहजबानी साझेदारी के नाम पर अगर हरीश उन को कुछ दे रहा था, तो बदले में पूरी शिद्दत से वसूल भी कर रहा था. कलावती के मांसल जिस्म को उस ने ताश के पत्तों के तरह फेंट डाला था.

सुंदर जब लोगों का सामना करता था, तो उन की शरारत से चमकती हुई आंखों में बहुतकुछ होता था. कुछ लोग तो इशारों ही इशारों में कलावती को ले कर सुंदर से बहुतकुछ कह भी देते थे, मगर इस से न ही तो अब सुंदर की मर्दानगी को चोट लगती थी और न ही उस का खून खौलता था. उस की सोच मानो बेशर्म हो गई थी.

हरीश जैसे रंगीनमिजाज रईस मर्दों और कलावती जैसी शादीशुदा औरतों के संबंध ज्यादा दिनों तक टिकते नहीं हैं और न ही इस की उम्र ज्यादा लंबी होती है.

हरीश का मन भी कलावती से भरने लगा था. उस ने कलावती से छुटकारा पाने के लिए उस के प्रति बेरुखी दिखानी शुरू कर दी थी.

कलावती ने उस की बदली हुई नजरों को पहचान लिया, मगर उस को इस की कोई परवाह नहीं थी. हरीश से साफतौर पर कलावती के लेनदेन वाले संबंध थे और वह काफी हद तक इन संबंधों को कैश कर भी चुकी थी. मकान, घर का सारा कीमती सामान और गाड़ी हरीश की बदौलत ही तो थी.

वैसे, कलावती की नजरों में भी हरीश बेकार होने लगा था. उस को और निचोड़ना मुश्किल था.

हरीश ने साफ शब्दों में कलावती से छुटकारा मांगा. इस के बदले में कलावती ने भी एक बड़ी रकम मांगी. हरीश ने वह मांगी रकम दे दी.

हरीश से संबंध खत्म करने पर सुंदर ने कलावती से कहा, ''हमारे पास अब सबकुछ है, इसलिए हमें पतिपत्नी के रूप में अपनी पुरानी जिंदगी में लौट आना चाहिए.''

सुंदर की बात पर कलावती खिलखिला कर हंस पड़ी और बोली, ''मुझ को नहीं लगता कि अब ऐसा हो सकता है. पतिपत्नी का रिश्ता तो इस मकान की बुनियाद में कहीं दफन हो चुका है. क्या तुम को नहीं लगता कि पति बनने के बजाय तुम केवल अपनी बीवी के दलाल बन कर ही रह गए? ऐसे में मुझ से दोबारा कोई सती सावित्री बनने की उम्मीद तुम कैसे कर सकते हो?''

कलावती के जवाब से सुंदर का चेहरा जैसे सफेद पड़ गया. कलावती ने जैसे उस को आईना दिखा दिया था.

कलावती वह औरत नहीं रह गई थी, जो अब घर की चारदीवारी में बंद हो कर रह पाती.

सुंदर भी जान गया था कि उस ने अपनी बीवी को दोस्तों के सामने चारे के रूप में इस्तेमाल कर के हासिल तो बहुतकुछ कर लिया था, मगर अपने जमीर और मर्दानगी दोनों को ही गंवा दिया था.

हरीश को छोड़ने के बाद कलावती ने सुंदर के एक और अमीर दोस्त दिनेश से संबंध बना लिए.

उधर कलावती बाहर मौजमस्ती कर रही थी, इधर सुंदर ने खूब शराब पीनी शुरू कर दी. कभीकभी शराब पी कर सुंदर इतना बहक जाता कि गलीमहल्ले के बच्चे उस का मजाक उड़ाते और उस पर कई तरह की फब्तियां भी कसते.

कुछ फब्तियां तो ऐसी कड़वी और धारदार होतीं कि नशे में होने के बावजूद सुंदर खड़ेखड़े ही जैसे सौ बार मर जाता.

जैसे शराब के नशे में एक बार जब सुंदर लड़खड़ा कर गली में गंदी नाली के पास गिर पड़ा, तो वहां खेल रहे कुछ लड़के खेलना छोड़ उसे उठाने के लिए लपकने को हुए, तो उन में से एक लड़के ने उन को रोक लिया और बोला, ''रहने दो, मेरा बापू कहता है कि यह अपनी औरत की घटिया कमाई खाने वाला एक गंदा इनसान है. इज्जतदार और शरीफ लोगों को इस से दूर रहना चाहिए.''

एक लड़के का इतना ही कहना था कि बाकी लड़कों के कदम वहीं रुक गए. शराब के नशे में लड़खड़ा कर सुंदर गिर जरूर गया था, मगर बेहोश नहीं था. लड़के के कहे हुए शब्द गरम लावे की तरह उस के कानों में उतर गए.

अपनी बुजदिली और लालच के चलते आज सुंदर कितना नीचे गिर चुका था, इस का सही एहसास गली में खेलने वाले लड़के के मुंह से निकले शब्दों से उसे हो रहा था.

वैज्ञानिकों को नया रंग मिलता है जो पहले कभी नहीं देखा गया है, इसे 'ओलो' कहें

विजय गर्ग

पैलेट पर एक नया रंग है और अभी तक किसी को इसके बारे में पता नहीं है। वैज्ञानिकों ने एक नया रंग खोजने का दावा किया है जिसे पहले किसी ने नहीं देखा है।

शोधकर्ताओं के एक जोड़े ने लेजर दालों को अपनी आंखों में निकाल कर अपनी आंखों की कोशिकाओं में हेरफेर किया, जिसने रेटिना को अपनी प्राकृतिक क्षमता से परे अनुकरण किया और मानव जाति के लिए अज्ञात रंग का उत्पादन किया।

हालांकि वे वास्तव में उनके द्वारा देखी गई छाया के गुणों का वर्णन नहीं कर सकते हैं, पांच लोगों ने कहा है कि यह ₹नीले-हरे₹ की तरह था, लेकिन उन्होंने कहा कि यह विवरण उनके अनुभव के पूर्ण सार को कैप्चर नहीं करता है।

वैज्ञानिकों को नया रंग मिलता है जो पहले कभी नहीं देखा गया है, इसे 'ओलो' कहें ज़मज़म कैंप पर आरएसएफ की छापेमारी में 300 लोग मारे गए, डारफुर में मानवीय तबाही मची

"किसी लेख में या मॉनिटर पर उस रंग को व्यक्त करने का कोई तरीका नहीं है। पूरी बात यह है कि यह वह रंग नहीं है जिसे हम देखते हैं, यह सिर्फ नहीं है। हम जिस रंग को देखते हैं, वह इसका एक संस्करण है, लेकिन यह ओलो के अनुभव के साथ तुलना करके बिल्कुल साफ है, "टीम के एक दृष्टि वैज्ञानिक ऑस्टिन रूर्डा ने द गार्जियन को बताया।

प्रयोग कैसे किया गया? रेटिना पर रंग-संवेदनशील कोशिकाओं पर प्रकाश गिरने के बाद मनुष्य हजारों रंगों को समझना शुरू कर देता है जिसे शंकु कहा जाता है। तीन प्रकार के शंकु, लंबे (एल), मध्यम (एम) और लघु (एस), जो प्रकाश की तरंग दैर्ध्य के आधार पर रंग के प्रति संवेदनशील होते हैं।

बर्कले की टीम ने इस चुनौती को दूर करने का लक्ष्य रखा। उन्होंने अपने एम शंकु के सटीक पदों का पता लगाने के लिए किसी व्यक्ति के रेटिना के एक छोटे से हिस्से को चार्टिंग करके शुरू किया। एक लेजर का उपयोग करते हुए, उन्होंने रेटिना को स्कैन किया, और हर बार लेजर ने एम कोन के साथ गठबंधन किया - किसी भी आंख की गति की भरपाई की - इसने अगले एक पर आगे बढ़ने से पहले उस व्यक्तिगत सेल को सक्रिय करने के लिए प्रकाश की एक संक्षिप्त, सटीक नाड़ी दी।

रंग प्राकृतिक दृश्य स्पेक्ट्रम के बाहर स्थित है क्योंकि यह एम शंकु के निकट-अनन्य उत्तेजना के परिणामस्वरूप होता है - कुछ ऐसा जो प्राकृतिक प्रकाश उत्पादन करने में असमर्थ है। नाम ₹olo₹ बाइनरी कोड 010 से लिया गया है, जिसका प्रतिनिधित्व एल, एम और एस शंकु के बीच होता है, केवल एम शंकु सक्रिय होते हैं।

बदलती जीवन शैली से संकटमय पशु आबादी

विजय गर्ग

अपने ही इस अखबार में एक बड़ी रपट छपी थी। जिसमें बताया गया था कि पंजाब में पशुओं की गणना से पता चला कि उनकी संख्या, पिछली गणना के मुकाबले कम हो गई है। पशुओं की गणना हर पांच साल में की जाती है। इनकी संख्या में 8.5 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई है। जिनकी गणना की गई उनमें भैंस, गाय, भेड़, बकरियां, घोड़े, टट्टू, खच्चर, गधे, ऊंट, सूअर, खरगोश, कुत्ते और हाथी शामिल हैं। क्या इस गणना में बिल्लियों, मुर्गियों, बैलों को भी शामिल किया गया था? इसी रिपोर्ट में कहा गया कि राज्य में अब बस सिर्फ 127 गधे, 77 ऊंट और 1 हाथी ही बचा है। एक अच्छी खबर यह है कि देसी गायों की संख्या बढ़ती जा रही है। दुधारू पशुओं की घटती संख्या का असर दूध उत्पादन पर नहीं पड़ा है। हालांकि 2019 की गणना में बताया गया था कि भारत में पशुओं की संख्या 2012 के मुकबले 4.6 प्रतिशत अधिक है। हो सकता है पांच साल में यह कम हो गई हो। 2022 में डब्ल्यूडब्ल्यूएफ की रिपोर्ट में बताया गया था कि पूरी दुनिया में जंगलों में रहने वाले पशु तेजी से कम हो रहे हैं। उनमें 69 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई थी।

पालतू पशुओं की संख्या कम होने का बड़ा कारण यह है कि लोग गांव छोड़कर शहरों की तरफ या विदेश जा रहे हैं। ऐसे में जब युवा ही नहीं होंगे साथ में तो पशुओं की देखभाल कौन करे। निःसंदेह, इनकी देखभाल में काफी समय और मेहनत भी लगती है। इनके रहने के लिए अतिरिक्त जगह भी चाहिए। शहरों के फ्लैट सिस्टम में तो दुधारू पशु पाले ही नहीं जा सकते। हां, सालों पहले कोलकाता में एक आदमी ने अपने आठवीं मंजिल के फ्लैट में गाय पाली थी।

पशुओं की हो रही कमी सिर्फ पंजाब की ही बात नहीं है, पूरे भारत की बात है। रिपोर्ट चाहे कुछ भी कहती हो, पशु पालने में बहुत मेहनत लगती है। एक बार पंजाब के लोगों का ही एक साक्षात्कार पढ़ रही थी, जिसमें बताया गया था कि अब ग्रामीण क्षेत्रों में भी जो महिलाएं विवाह करके आती हैं, उनकी रुचि खेती के कामों में नहीं है। हम जानते ही हैं कि पशुओं की देखभाल, उनकी सानी-पानी, उनका दूध दुहना आदि का काम बड़ी संख्या में महिलाएं ही करती रही हैं। लेकिन अब महिलाओं की यह पीढ़ी खत्म होने के कगार पर है। पढ़ी-लिखी लड़कियों की इस काम में इतनी दिलचस्पी भी नहीं। न ही उनमें इतनी मेहनत करने की ताकत है।

उत्तर प्रदेश में भी यही हाल है। बल्कि कहें कि पूरे देश में ही अब घरों में पशु पालने का चलन कम होता जा रहा है। हालांकि उत्तर प्रदेश के बारे में कहा जाता है कि वहां सबसे अधिक पशु हैं। पशुओं को धन कहा गया है। गो धन, गज धन, बाज धन। यानी कि गाय, हाथी और घोड़े धन जैसे ही होते हैं। गाय के दूध से ही दही, मक्खन, छाछ मिलता है। पहले खेती के कामों के लिए बछड़े भी देती थी, जिनकी इन दिनों दुर्दशा है। ट्रैक्टर के आने के बाद चूंकि बैलों की जरूरत नहीं रही, तो अब वे मारे-मारे फिरते हैं। कोई उन्हें नहीं पालता। वैज्ञानिकों ने भी बैलों की पूरी प्रजाति को खत्म करने की ठान ली है। कुछ साल पहले बताया गया था कि वैज्ञानिकों ने ऐसी प्रविधि विकसित कर ली है, जिनमें गायें अब बस बछियों को ही जन्म देंगी। हमारे देखते-देखते एक पूरी प्रजाति नष्ट हो जाएगी। सिर्फ म्यूजियम्स में बचेगी। मनुष्य की स्वार्थपरता का यह एक नमूना भर है।

दूसरे नम्बर का धन गज धन यानी कि हाथी। हाथी युद्ध से लेकर बहुत से कार्य में काम आता था। अमीर लोग अपनी अमीरी का प्रदर्शन करने के लिए दरवाजे पर हाथी बांधते थे। और घोड़े, उनकी उपयोगिता के तो कहने ही क्या। वे युद्ध में तो काम आते ही थे, परिवहन का साधन भी थे। माल की ढुलाई भी करते थे।

लेकिन बदलते वक्त के साथ अब बहुत कम लोग पशु पालना चाहते हैं। एक-दो किलो दूध के लिए कौन इन्हें पाले। जब आने-जाने के इतने त्वरित साधन मौजूद हों, तो भला घोड़े की क्या जरूरत। जैसा कि पंजाब की रिपोर्ट में बताया गया कि पशुओं की संख्या कम होने के बावजूद देश में दूध की कमी नहीं है। इसका बड़ा कारण यह भी है कि अपने यहां 1970 में ही दूध का उत्पादन बढ़ाने के लिए नेशनल डेयरी डेवलपमेंट बोर्ड की स्थापना की गई थी। इससे जुड़े डॉ. वर्गीज कुरियन का मुख्य उद्देश्य दूध के उत्पादन को बढ़ाकर भारत को इस मामले में आत्मनिर्भर बनाना था। यह दुनिया का सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादन प्रोग्राम था। गुजरात से शुरू हुआ यह प्रोग्राम पूरे भारत में छा गया था।

डॉ. वर्गीज कुरियन को मिल्कमैन आफ इंडिया भी कहा जाता था। उन्होंने न केवल गुजरात में बनाए दूध और उससे जुड़े तमाम उत्पादों को भारत के घर-घर पहुंचाया बल्कि इस आंदोलन से किसानों और विशेषकर स्त्रियों को भी बहुत लाभ हुआ। उनकी आय बढ़ी। इसे अमूल का नाम दिया गया था। आज भी बहुत से लोग इन उत्पादों का उपयोग करते हैं। अमूल के विज्ञापन भी बहुत चर्चित रहते आए हैं। इसका मालिकाना हक भी दूध उत्पादन करने वालों के पास था। इसी विषय पर उन दिनों श्याम बेनेगल ने मंथन नाम से फिल्म बनाई थी। इसमें स्मिता पाटिल ने शानदार अभिनय किया था।

इसके बाद तो बहुत-सी अन्य डेयरियां भी खुलीं। भारत की दस प्रमुख डेयरियों में अमूल (गुजरात), मदर डेयरी (दिल्ली), मिल्मा (केरल), दूधसागर (मेहसाणा, गुजरात), नंदिनी (कर्नाटक), पराग (महाराष्ट्र), स्रीबर (अमेरिका), वेरका (पंजाब) आवनि, (तमिलनाडु) आदि शामिल हैं। हालांकि, 1930 में ही अमूल के आने से पहले पोलसन ने भारत में दूध सप्लाई करने का काम किया था।

शायद दूध क्रांति का ही फल है कि देश में दूध और उससे जुड़े उत्पादों की कोई कमी नहीं है। इसी कारण अब गांवों में भी इक्का-दुक्का घरों में ही पालतू पशु दिखाई देते हैं। इस लेखिका के घर में भी बहुत से पशु पाले जाते थे। गांव के घर-घर में वे मौजूद थे। लेकिन अब कहीं-कहीं ही दिखाई देते हैं। शहरों में तो पशुओं के लिए टैक्स भी देना पड़ता है। अड़ोसी-पड़ोसी गंदगी की शिकायत भी करते हैं। ऐसे में पशु पाले भी कौन।

इसके अलावा इन दिनों भारत में जो पशु खास तौर से गायें और गो वंश जब बूढ़ा हो जाता है, तो उन्हें यों ही छोड़ दिया जाता है। वे भूखे मरते हैं। किसानों के लिए ये भारी समस्या भी है।

पचास-साठ के दशक में भारतीय रेल ट्रांसफर के वक्त अपने कर्मचारियों को मालगाड़ी के दो डिब्बे सामान ढोने के लिए देती थी। इसे किट-कैटल कहा जाता था। यानी कि अवधारणा यह थी कि कर्मचारियों के सामान में जानवर भी होंगे। अब ऐसा होता है कि नहीं, पता नहीं। तब सिर्फ गांव में ही नहीं, शहरों में भी खूब जानवर पाले जाते थे। यह शायद नौकरीपेशा लोगों और शहरों की तरफ पलायन करने वाले लोगों की दूसरी-तीसरी पीढ़ी रही होगी, जिसका सम्पर्क गांवों से भी था। अब पीढ़ियां बदल गई हैं, रहन-सहन के तौर-तरीके भी।

छात्र अपनी प्रतिभा को पहचान कर आगे की पढ़ाई के लिए विषय चुन सकते हैं

विजय गर्ग

दसवीं कक्षा जहां एक विद्यार्थी के शैक्षणिक जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ होती है, वहीं इस कक्षा की परीक्षा अच्छे या कम अंकों से उत्तीर्ण करने के बाद माता-पिता इस बात को लेकर चिंतित रहते हैं कि दसवीं कक्षा की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे अपने बच्चे को आगे की पढ़ाई के लिए कौन से विषय और स्ट्रीम में पढ़ाएं। माता-पिता और छात्र दोनों जानते हैं कि सही स्ट्रीम और फिर उसमें सही विषय चुनना बहुत कठिन काम है क्योंकि संबंधित बच्चे का भविष्य इन निर्णयों पर निर्भर करता है। यदि यह कार्य सही मानसिकता और मार्गदर्शन के साथ किया जाए तो सही निर्णय लेने की संभावना बढ़ जाती है।

अपनी रुचि के अनुसार विषय चुनें।

पहली बात जो संबंधित छात्र और उसके अभिभावकों के दिमाग में होनी चाहिए, वह यह है कि स्ट्रीम और विषयों का चयन छात्र द्वारा कक्षा 10वीं में प्राप्त अंकों के आधार पर नहीं, बल्कि छात्र की रुचि या सीखने की क्षमता के आधार पर किया जाना चाहिए। यह सुनिश्चित करने के लिए ध्यान रखा जाना चाहिए कि विद्यार्थी अपनी इच्छा, बौद्धिक क्षमता और रुचि के अनुसार विषयों का चयन करे, ताकि उसे जीवन भर उन विषयों को पढ़ने का बोझ न उठाना पड़े जिनमें उसकी रुचि नहीं है।

कौशल पहचानना

हमें यह याद रखना चाहिए कि दसवीं कक्षा की वार्षिक परीक्षा में विद्यार्थी द्वारा प्राप्त अंक उसके आगे के अध्ययन के लिए विषय या स्ट्रीम चुनने का मानदंड हो सकते हैं, लेकिन यह आवश्यक नहीं है कि इन अंकों को ही एकमात्र मानदंड माना जाए। आज के विज्ञान और प्रौद्योगिकी के युग में ऐसे कई परीक्षण उपलब्ध हैं, जिनकी मदद से हम बच्चे की आंतरिक प्रतिभा को पहचान कर उसे सामने ला सकते हैं। महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि प्रत्येक बच्चे की शिक्षा के लिए विषयों या पाठ्यक्रमों का चयन ग्रेड के बजाय उसके कौशल और रुचियों के आधार पर होना चाहिए। अब अगला महत्वपूर्ण पहलू यह है कि बच्चे को सही स्ट्रीम, सही विषय और भविष्य के कार्य क्षेत्र का चयन करने में मदद करने से पहले उसके माता-पिता और शिक्षक उसे और क्या सहायता प्रदान कर सकते हैं। यहां यह याद रखना चाहिए कि चार से दस वर्ष की आयु के बच्चों के समुचित और पूर्ण विकास के लिए मानसिक, भावनात्मक और शारीरिक सहायता बहुत महत्वपूर्ण है। यह उम्र बच्चों के आत्मविश्वास, विचारशीलता और उनके भविष्य की दिशा के निर्धारण के लिए मौलिक महत्व की है। यदि बच्चे को समय पर यह सहायता मिल जाए तो वह न केवल अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित कर सकता है, बल्कि सभी प्रकार की चुनौतियों से निपटने के लिए भी तैयार हो सकता है। वह कदम दर कदम सफलता प्राप्त करते हुए एक सफल व्यक्ति बन जाता है।

आत्मविश्वास के साथ काम करना मानसिक स्वास्थ्य बच्चे के आत्मसम्मान और समझ को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अगर किसी बच्चे को छोटी उम्र से ही सही रास्ता दिखाया जाए और शिक्षित किया जाए तो वह अपनी सोच को मजबूत और नई दिशा में विकसित कर सकता है। जब किसी बच्चे में अपने आंतरिक भय, दबाव या भ्रम को समझने और उन पर काबू पाने की क्षमता होती है, तो वे अपने जीवन में आगे बढ़ने के लिए आत्मविश्वास के साथ कार्य करते हैं। केवल मानसिक रूप से मजबूत बच्चा ही भावनात्मक रूप से मजबूत बनेगा।

असफलताओं को सीख के रूप में देखना

बच्चों की भावनात्मक स्थिरता उनके विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यदि उन्हें अपनी भावनाओं को प्रबंधित करना, उन्हें समझना, दूसरों को समझाना और उन पर नियंत्रण करना सिखाया जाए, तो वे जीवन की बाधाओं और असफलताओं को भी सीखने के रूप में देखना शुरू कर देते हैं। कई बार बच्चे सामाजिक दबाव, माता-पिता की अपेक्षाओं या किसी अन्य कारण से आंतरिक तनाव का अनुभव करते हैं, जो उनकी पढ़ाई और जीवन में प्रगति में बाधा डालता है। यदि उन्हें शुरू से ही भावनात्मक समर्थन मिले तो वे अपनी मानसिक शक्ति का भी विकास कर सकते हैं।

सक्षम नेतृत्व की आवश्यकता

शारीरिक फिटनेस हर बच्चे, युवा या बुजुर्ग व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उम्र के बदलते पड़ावों के कारण बच्चों का शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास होता है। इसलिए यदि उन्हें उनकी आवश्यकता के अनुसार उचित एवं संतुलित भोजन तथा स्वस्थ रहने के लिए उचित मार्गदर्शन प्रदान किया जाए तो उनका शारीरिक एवं मानसिक विकास निश्चित रूप से अच्छा होगा। यह शारीरिक और मानसिक विकास बच्चे को आत्म-अनुशासित होने, समय का सदुपयोग करने और स्वस्थ जीवन शैली अपनाने के लिए प्रेरित करता है।

वित्तीय आत्मनिर्भरता

जब बच्चे को माता-पिता और शिक्षकों से पूरा सहयोग मिलता है, तो वह अपने भविष्य के लिए आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के बारे में सोचना शुरू कर देता है। उनमें न केवल रोजगार खोजने की क्षमता है, बल्कि आय के नए स्रोत सृजित करने की भी क्षमता है। वह सोचने लगता है कि वह अपनी पढ़ाई जारी रखते हुए आय के रास्ते कैसे खोल सकता है। याद रखें कि वित्तीय स्वतंत्रता किसी भी बच्चे या व्यक्ति के सकारात्मक विकास में प्रमुख भूमिका निभा सकती है। बुद्धिमान लोग कहते हैं कि यदि किसी इमारत की नींव मजबूत है तो वह इमारत अपने आप ही मजबूत खड़ी रहेगी। इसी प्रकार, यदि किसी बच्चे को सही सलाह या परामर्श दिया जाए तो वह आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने में सक्षम हो जाता है। वह पढ़ाई, जीवन और भविष्य के बारे में सोचना शुरू कर देता है। यह एक वास्तविक तरीका है जो किसी भी बच्चे को बुद्धिमान, आत्मनिर्भर और सफल बनाने में कारगर साबित होता है।

अब और नहीं: मलेरिया को बनाएं इतिहास

इतिहास में दर्ज हो मलेरिया, वर्तमान से मिटे उसका नामो-निशान

एक छोटा-सा मच्छर, जिसे हम हल्के में लेते हैं, जब सभ्यता की नींव को हिला देता है, तो यह सिर्फ जीवविज्ञान की कहानी नहीं, बल्कि इंसानियत के लिए खतरे की घंटी है। एक काटने से शुरू होने वाला यह खतरा लाखों जिंदगियों को लील जाता है, समाज को कमजोर करता है और प्रगति को ठप करता है। मलेरिया—नाम सुनते ही मन में एक अदृश्य दुश्मन की तस्वीर उभरती है, जो आज भी हमारी दुनिया को अपनी चपेट में ले रहा है। 25 अप्रैल — यह कोई साधारण तारीख नहीं। यह विश्व मलेरिया दिवस है, एक ऐसा दिन जो हमें झकझोरता है, याद दिलाता है कि विज्ञान की चोटी पर पहुंचने के बावजूद हम एक ऐसी बीमारी से हार रहे हैं, जिसका इलाज संभव है। यह दिन सिर्फ जागरूकता का नहीं, बल्कि एकजुट होकर इस युद्ध को जीतने का संकल्प लेने का है। मलेरिया केवल शरीर को नहीं मारता; यह परिवारों को तोड़ता है, अर्थव्यवस्थाओं को चोट पहुंचाता है और बच्चों के भविष्य को छीन लेता है। यह एक स्वास्थ्य संकट से कहीं ज्यादा—यह गरीबी, अशिक्षा और सामाजिक असमानता का प्रतीक है। इस साल की थीम, ₹मलेरिया हमारे साथ समाप्त होगा: पुनर्निवेश, पुनर्कल्पना, पुनर्जीवन₹, हमें गहन प्रतिबद्धता, निरंतर निवेश और नवीन रणनीतियों के साथ इस दुश्मन को जड़ से उखाड़ फेंकने की प्रेरणा देती है।

मलेरिया कोई नई बीमारी नहीं। सदियों से यह मानवता को सता रही है। प्लाज़्मोडियम नामक परजीवी, जो मादा एनोफिलीज़ मच्छर के काटने से फैलता है, हर साल लाखों लोगों को अपनी गिरफ्त में लेता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के अनुसार, 2023 में लगभग 24.9 करोड़ लोग मलेरिया की चपेट में आए, और 6.08 लाख लोगों ने अपनी जान गंवाई। इनमें सबसे ज्यादा शिकार बच्चे और गर्भवती महिलाएं हैं। अफ्रीका के उप-सहारा क्षेत्र, दक्षिण-पूर्व एशिया और दक्षिण अमेरिका के कई हिस्से आज भी इस बीमारी के गढ़ बने हुए हैं। यह आंकड़े सिर्फ संख्या नहीं, बल्कि टूटे हुए सपनों और बिखरे हुए परिवारों की कहानियां हैं। 2007 में डब्ल्यूएचओ ने विश्व मलेरिया दिवस की शुरुआत की, ताकि इस बीमारी के खिलाफ वैश्विक लड़ाई को गति मिले। हर साल एक नई थीम के साथ यह दिन हमें प्रेरित करता है कि मलेरिया को हराना असंभव नहीं। लेकिन सवाल यह है—क्या हम वाकई इस जंग को गंभीरता से लड़ रहे हैं? क्या हमारी नीतियां, हमारा समाज और हमारी मानसिकता इस युद्ध के लिए तैयार है?

इस लड़ाई का सबसे बड़ा हथियार है—रोकथाम। मच्छरदानी का इस्तेमाल, कीटनाशकों का छिड़काव, जलभराव को रोकना, स्वच्छता को अपनाना और समय पर जांच व इलाज—ये छोटे-छोटे कदम मलेरिया को जड़ से मिटा सकते हैं। लेकिन विडंबना यह है कि जहां मलेरिया सबसे ज्यादा फैलता है, वहां स्वास्थ्य सेवाएं सबसे कमजोर हैं। ग्रामीण इलाकों में न तो पर्याप्त अस्पताल हैं, न ही दवाएं, और न ही जागरूकता। नतीजा? एक ऐसी बीमारी जो रोकी जा सकती है, वह लाखों जिंदगियां छीन रही है। मलेरिया सिर्फ मच्छरों से नहीं फैलता, यह हमारी उदासीनता से भी पनपता है। जब तक हर घर में मच्छरदानी नहीं पहुंचेगी, हर स्कूल में बच्चों को इसके बचाव के तरीके नहीं सिखाए जाएंगे, और हर सरकार इसे प्राथमिकता नहीं देगी, तब तक यह दुश्मन हम पर हावी रहेगा। शिक्षा और जागरूकता इस युद्ध के सबसे मजबूत सिपाही हैं। अगर हम हर बच्चे को सिखाएं कि मच्छरदानी जीवन रक्षक है, हर परिवार को बताएं कि साफ-सफाई बीमारी को दूर रखती है, तो हम मलेरिया को इतिहास की किताबों तक सीमित कर सकते हैं।

इस जंग में हमारे असली हीरो वे स्वास्थ्यकर्मी, डॉक्टर और स्वयंसेवक हैं, जो सीमित संसाधनों में भी दिन-रात मरीजों की सेवा में जुटे हैं। अफ्रीका के सुदूर गांवों से लेकर भारत के आदिवासी इलाकों तक, ये लोग उम्मीद की किरण बनकर उभरे हैं। लेकिन सिर्फ उनके कंधों पर यह जिम्मेदारी नहीं छोड़ी जा सकती। सरकारों को चाहिए कि वे मलेरिया उन्मूलन को राष्ट्रीय प्राथमिकता बनाएं। बजट बढ़ाएं, दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करें, और अनुसंधान में निवेश करें। साथ ही, निजी क्षेत्र और सामुदायिक संगठनों को भी इस लड़ाई में शामिल करना होगा। वैज्ञानिक प्रगति भी इस युद्ध में हमारा साथ दे रही है। मलेरिया के टीके, जैसे आरटीएस, एस और आर-21, ने नई उम्मीद जगाई है। ये टीके भले ही पूरी तरह से मलेरिया को खत्म न करें, लेकिन बच्चों में इसके गंभीर प्रभाव को कम करने में कारगर हैं। इसके अलावा, जीन-एडिटिंग तकनीक और पर्यावरण-अनुकूल कीटनाशकों पर काम चल रहा है। लेकिन तकनीक तब तक बेकार है, जब तक वह जरूरतमंदों तक न पहुंचे।

विश्व मलेरिया दिवस हमें एक मौका देता है—खुद से सवाल करने का। क्या हमने अपने आसपास स्वच्छता को बढ़ावा दिया? क्या हमने अपने बच्चों को मलेरिया से बचाव के तरीके सिखाए? क्या हमारी सरकारें इस बीमारी को खत्म करने के लिए पर्याप्त कदम उठा रही हैं? यह दिन सिर्फ जागरूकता फैलाने का नहीं, बल्कि ठोस कदम उठाने का है। मलेरिया को हराना कोई सपना नहीं, हकीकत है। भारत जैसे देश, जो कभी मलेरिया का गढ़ था, ने पिछले कुछ दशकों में इस बीमारी को काफी हद तक नियंत्रित किया है। 2016 से 2023 तक भारत में मलेरिया के मामलों में 80% से ज्यादा की कमी आई। यह संभव हुआ संगठित नीतियों, सामुदायिक भागीदारी और जागरूकता के दम पर। अगर भारत यह कर सकता है, तो पूरी दुनिया क्यों नहीं?

25 अप्रैल सिर्फ एक तारीख नहीं, बल्कि एक क्रांति की शुरुआत है। यह वह पल है, जब हम सबको एकजुट होकर कहना होगा— "अब और नहीं!" मलेरिया का अंत अब हमारा संकल्प है। इस दिन को एक वादे में बदल दें—एक ऐसी दुनिया का वादा, जहां कोई बच्चा मलेरिया के डर से न सोए, कोई मां अपने लाल को न खोए। यह हमारी जंग है, और जीत हमारी होगी। हर मच्छर की भनभनाहट को खामोश करने का वक्त आ गया है। आइए, मिलकर मलेरिया को इतिहास बनाएं, ताकि आने वाली पीढ़ियां इसे सिर्फ किताबों में पढ़ें, न कि अस्पतालों में झेलें।

-प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

पहलगाम पर्यटक हमला-35 में वर्षों पहली बार कश्मीर भी आतंकवाद के खिलाफ़ रोड पर उतरा- इंडियन आर्मी जिंदाबाद, हम हिंदुस्तानी है हिंदुस्तान हमारा है के नारे लगे

-दहशतगर्दी के विरोध में पूरा कश्मीर बंद सफ़ल-पहलगाम वासी सड़कों पर उतरे, विरोध प्रदर्शन किया-मस्जिदों के लाउडस्पीकरों में बंद में शामिल होने की अपीलें

-कश्मीरियों का साथ-पूरी दुनियाँ का हाथ-भारत की एक्शन पर तुरंत रिएक्शन की रणनीति लगातार चली तो नक्सलवाद की तरह आतंकवाद पर भी डेड लाइन 31 मार्च 2026 हो सकती है-

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर आतंकवाद आज हर देश के लिए सर दर्द बना हुआ है, परंतु इसका स्थाई समाधान दशकों से नहीं निकल पा रहा है। यही समस्या भारत के लिए भी दशकों से बनी हुई है, परंतु अगर मजबूत इरादे हो व संकल्पों को क्रियान्वयन करने का हौसला हो तो कुछ असंभव नहीं है, इसी फार्मूले पर चलकर भारत ने नक्सलवाद माओवाद को 31 मार्च 2026 तक जड़ से समाप्त करने की डेड लाइन दी है, इस क्रिया से रिएक्शन ऐसा हो रहा है कि लाखों रुपए के इनामी खूंखार नक्सली सरेंडर कर रहे हैं या फिर मुठभेड़ में मारे जा रहे हैं क्योंकि स्थानीय लोगों का साथ शासन प्रशासन को मिल रहा है। यह चर्चा आज हम इसलिए कर रहे हैं क्योंकि 22 अप्रैल 2025 को जो पहलगाम में पर्यटकों पर आतंकवादियों द्वारा हमला कर 27 सैलानियों को गोलियां चलाकर मार डाला गया है, यह घटना कश्मीर वासियों खासकर पहलगाम वासियों को नागवार गुजरी है और 35 वर्षों में ऐसा पहली बार हुआ है कि इस घटना के विरोध में करीब करीब सभी पक्षों, संगठनों, कश्मीरीयों लोकल निवासियों द्वारा 23 अप्रैल 2025 को बंद का आह्वान किया गया था यहां तक कि मस्जिदों के लाउडस्पीकर से भी बार-बार बंद में शामिल होने की गुजारिश है की जा रही थी, ऐसा प्रोटेस्ट का माहौल मैंने अपने 40 वर्षों के आर्टिकल लेखन द्वारा मीडिया से जुड़े अपने करियर में कभी नहीं देखा। कश्मीर घाटी में हमले तो आनेकों हुए हैं परंतु उस क्षेत्र के लोकल निवासियों का ऐसा प्रोटेस्ट मैंने कभी नहीं देखा। कश्मीर लालचौक निवासी प्रसिद्ध प्रिंट व डिजिटल मीडिया सीएनएन के चीफ एडिटर व मेरे परम मित्र राशिद भाई जो प्रिंट इलेक्ट्रानिक मीडिया का अच्छा अनुभव भी रखते हैं उनसे मैंने मोबाइल फोन पर बातचीत कर इस घटना के संबंध में जानकारी मांगी तो उन्होंने मुझे अनेकों वीडियो क्लिप भेजी जिसमें पहलगाम के लोकल निवासी इस घटना के विरोध में जोर-शोर से प्रोटेस्ट कर रहे हैं उन किल्पों में हम हिंदुस्तानी हैं, हिंदुस्तान हमारा है व इंडियन आर्मी जिंदाबाद इत्यादि अनेकों नारे आसानी से सुनें जा सकते हैं। राशिद भाई ने बताया कि यहां इस घटना से नागरिकों में काफी रोष भरा है, क्योंकि उनका रोजगार सैलानियों से जुड़ा है, इस तरह वहां के सीएम तथाविपक्षी नेताओं ने भी इस बारे में सरकार को पूरा सहयोग देने व घटना का जोरदार विरोध किया है व अपराधियों को कड़ी से कड़ी सजा देने की बात कही है, तो उधर केंद्र स्तर पर भी पूरे विपक्ष ने एकजुट होकर इस घटना की जोरदार भर्टस्ना की है, व दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा देने की बात कही है। मेरा मानना है कि अगर पूरे कश्मीर के निवासी, भारत सरकार, इंडियन आर्मी व दुनियाँ के सभी देश एक साथ हो जाएं तो आतंकवाद बच नहीं सकता, उसका भी डेडलाइन नक्सलवाद समाप्ति की तरह 31 मार्च 2026 निर्धारित किया जा सकता है। चूँकि दहशतगर्दी के विरोध में पूरा कश्मीर बंद सफ़ल हुआ पहलगाम वासी सड़कों पर उतरे तथा विरोध प्रदर्शन किया, मस्जिदों से भी लाउडस्पीकरों से बंद में शामिल होने की अपील की गई तथा 35 वर्षों में पहली बार कश्मीर भी आतंकवाद के खिलाफ रोड पर उतरा व इंडियन आर्मी जिंदाबाद, हम हिंदुस्तानी है हिंदुस्तान हमारा है, के नारे लगे इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, कश्मीर वासियों का साथ, पूरी दुनियाँ का हाथ, भारत कीएक्शन पर तुरंत रिएक्शन की रणनीति लगातार चली तो, नक्सलवाद की तरह आतंकवाद पर भी डेड लाइन 31 मार्च 2026 घोषित होने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता।

साथियों बात अगर हम 35 वर्षों में पहली बार कश्मीर वासियों का आतंकवाद के खिलाफ़ रोडपर उतरने प्रोत्सट करने की करें तो, श्रीनगर से दिल्ली तक हलचल के बीच कश्मीर घाटी भी इस आतंकी वारदात के खिलाफ खड़ी नजर आ रही है, इस जघन्य आतंकी वारदात के खिलाफ पहलगाम समेत कश्मीर के कई इलाकों में लोग प्रदर्शन करते नजर आए।ऐसा पहली बार है, जब कश्मीर के लोग आतंकियों के खिला खुलकर बोल रहे हैं, सत्ताधारी और विपक्षी, सभी दल इस वारदात के विरोध में एकजुट हो गए हैं तो वहीं हुर्रियत कॉन्फ्रेंस जैसा संगठन भी घाटी बंद का आह्वान कर रहा है। एक प्रमुख अंग्रेजी समाचार पत्र ने पहले पन्ने पर संपादकीय टिप्पणी में लिखा है कि यह जघन्य वारदात न सिर्फ निर्दोष लोगों पर हमला है, बल्कि कश्मीरकी पहचानऔर मूल्य, इसकेआतिथ्य, अर्थव्यवस्था और शांति पर किया गया प्रहार भी है। कश्मीर की आत्मा इस क्रूरता की निंदा करती है और पीड़ितों के परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करती है। (1) आतंकी घटना के खिलाफ बंद-पहलगाम हमले के खिलाफ घाटी बंद के आह्वान को आम जनता के साथ ही अलग-अलग राजनीतिक दलों, धार्मिक और व्यापारिक संगठनों और यहां तक कि अलगाववादी छवि वाले नेताओं ने भी समर्थन दिया है, सत्ताधारी नेशनल कॉन्फ्रेंस, विपक्षी पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी), पीपुल्स पार्टी, अपनी पार्टी समेत घाटी की सियासत में मजबूत मौजूदगी रखने वाली पार्टियों ने घाटी बंद का समर्थन किया है। घाटी बंद के आह्वान को हुर्रियत कॉन्फ्रेंस और इसके अध्यक्ष मीरवाइज उमर फारूक का भी समर्थन मिला है।(2) उलेमा संगठन

और हुर्रियत भी बंद के साथ धार्मिक निकायों के संगठन मुत्ताहिदा मजलिस उलेमा ने भी बंद का समर्थन करते हुए लोगों से आह्वान किया है कि घाटी बंद को सफल बनाकर इस जघन्य वारदात के खिलाफ अपना विरोध दर्ज कराएं। मीरवाइज उमर फारूक ने इस आतंकी वारदात में मारे गए लोगों के प्रति शोक संवेदना व्यक्त करते हुए कहा है कि जम्मू कश्मीर की इस्लामी बिरादरी शोक संतप्त परिजनों के साथ है, उन्होंने लोगों से शांतिपूर्ण विरोध का भी आह्वान किया (3) पीड़ितों की मदद के लिए बढ़े हाथ-जम्मू कश्मीर के लोगों ने भी इस घटना के बाद पीड़ितों की मदद के लिए हाथ बढ़ाए। पहलगाम की घटना के बाद टूरिस्ट टैक्सी स्टैंड यूनियन ने देर रात तक स्टैंड खोले रखा जो अमूमन छह से सात बजे तक खुले रखा. टूरिस्ट टैक्सी स्टैंड यूनियन से जुड़े लोग देर रात तक टैक्सी स्टैंड पर जमे रहे, वीडियो जारी करके भी टैक्सी यूनियन ने 24 घंटे मदद के लिए तैयार रहने की बात कही-टैक्सी यूनियन की ओर से ये भी कहा गया कि पर्यटकों को गाड़ियों की जरूरत हो, पैसे की जरूरत हो, अपनों से बात करने के लिए मोबाइल फोन की जरूरत हो, रुकने के इंतजाम की जरूरत हो या घायलों के लिए खून की जरूरत हो, हमसे संपर्क कर सकता है। टैक्सी यूनियन की ओर से इसके लिए नंबर भी जारी किए गए (4)- समाचार पत्रों ने काले रंग में छापे पहले पन्ने कश्मीर घाटी के कई प्रमुख समाचार पत्रों ने अपना पहला पन्ना काले रंग में छापकर पहलगाम की आतंकी घटना के खिलाफ अपना विरोध जाहिर किया. समाचार पत्रों ने काले पन्ने पर शीर्षक के लिए लिए लाल और सफेद रंग का इस्तेमाल किया. ग्रेटर कश्मीर, राइजिंग कश्मीर, कश्मीर उजमा, आफताब, तैमील इरशाद जैसे अंग्रेजी और उर्दू के प्रमुख दैनिक समाचार पत्रों ने अपने फॉर्मेट में भी बदलाव किया।आतंकी वारदात के खिलाफ पहलगाम से श्रीनगर तक दुकानें और पेट्रोल पंप बंद हैं, अधिकारियों के मुताबिक, पिछले 35 साल में पहली बार किसीआतंकी वारदात के खिलाफ कश्मीर की अवाम ने घाटी बंद का आह्वान किया है, पहलगाम अटैक पर कश्मीर कारिएक्शन इस बार अलग बताया जा रहा है और कुछ बातें पहली बार दिख रही हैं।

साथियों बात अगर हम पहलगाम में बाजरें बंद और प्रोटेस्ट की करें तो, 35 वर्षों में पहली बार आज कश्मीर पूरी तरह से बंद है। मस्जिदों में लगे लाउडस्पीकरों से लोगों से बंद में शामिल होने की अपील हो रही है और लोग खुद हमले के खिलाफ सड़कों पर विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। किसी आतंकी हमले पर 35 सालों में पहली बार कश्मीर उठ खड़ा हुआ है, एकजुट होकर विरोध कर रहा है। पहलगाम में, बाजार पूरी तरह से बंद हैं, आतंकी हमले में मारे गए 26 निर्दोष लोगों में सैयद आदिल हुसैन शाह भी शामिल है, जो पर्यटकों को घुड़सवारी कराता था और जब उसने हत्यारों का सामना करने की कोशिश की तो उसे गोली मार दी गई। मैं भारतीय हूं के नारे-दुकानदारों और होटल व्यवसायियों ने आज पहलगाम में विरोध मार्च निकाला और₹हिंदुस्तान जिंदाबाद₹ और ₹मैं भारतीय हूं₹ के नारे लगाए। उन्होंने कहा कि वे अभी भी वहां फंसे पर्यटकों को हर तरह की सहायता प्रदान करेंगे, जिसमें 15 दिनों के लिए फ्री में रहने की व्यवस्था भी शामिल है। घाटी में आतंकवाद के साथ लंबे संघर्ष के बाद शांति आई थी और पिछले कुछ सालों में पर्यटकों की भीड़ उमड़ रही थी, यह हमला शायद समय को पीछे ले जाएगा।

साथियों बात अगर हम कश्मीर के नेताओं द्वारा हमले की निंदा की करें तो, जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री ने इस हमले को ₹घृणास्पद₹ बताया है. उन्होंने कल हमले की खबर आने के बाद एक्स पर पोस्ट किया, मैं इस बात पर विश्वास नहीं कर सकता, हमारे यहां आए मेहमानों पर हमला एक घृणित घटना है, इस हमलेके अपराधी जानवर, अमानवीय और घृणा के पात्र हैं। निंदा के लिए कोई भी शब्द पर्याप्त नहीं है. मैं मृतकों के परिवारों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करता हूं।पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) की अध्यक्ष ने जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले को लेकर बुधवार को देशवासियों से माफी मांगी। महबूबा के नेतृत्व में पीडीपी नेता एवं कार्यकर्ता श्रीनगर में शेर-ए-कश्मीर पार्क के पास पार्टी मुख्यालय में एकत्र हुए और वहां से विरोध मार्च की शुरुआत की। प्रदर्शन के बाद मीडिया से बातचीत में महबूबा ने कहा, यह हमला सिर्फ मासूम पर्यटकों पर नहीं, बल्कि कश्मीरियत पर भी था. मैं देशवासियों से कहना चाहती हूं कि हम शर्मिंदा हैं. कश्मीरियों का दिल दुखी है और हम दुख की इस घड़ी में आपके साथ खड़े हैं, हम सरकार से मांग करते हैं कि दोषियों को जल्द से जल्द सजा दी जाए। यह हम पर हमला था, हम इसकी निंदा करते हैं और इसे बर्दाश्त नहीं किया जाएगा. गृह मंत्री यहां हैं और उन्हें इस हमले में शामिल आतंकवादियों का पता लगाना चाहिए, ताकि उन्हें जल्द से जल्द सजा दिलाई जा सके।

साथियों बात अगर हम 23 अप्रैल 2025 को देर शाम समाप्त हुई सुरक्षा कैबिनेट कमेटी (सीसीएस) द्वारा लिए गए निर्णयों की करें तो पीएम की अध्यक्षता में बुधवार शाम सुरक्षा पर सीसीएस की बैठक हुई। सीसीएस को 22 अप्रैल 2025 को पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई, जिसमें 25 भारतीय और एक नेपाली नागरिक मारे गए थे। कई अन्य घायल हुए थे। सीसीएस ने हमले की कड़े शब्दों में निंदा की और पीड़ितों के परिवारों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त की और घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की आशा व्यक्त की। इस आतंकवादी हमले की गंभीरता को समझते हुए, सुरक्षा मामलों की कैबिनेट समिति (सीसीएस) ने निम्नलिखित उपायों पर निर्णय लिए गए-(1)1960 की सिंधु जल संधि को तत्काल प्रभाव से स्थगित रखा जाएगा, जब तक कि पाकिस्तान विश्वसनीय और अपरिवर्तनीय रूप से सीमा पार आतंकवाद के लिए अपने समर्थन को त्याग नहीं देता। (2) एकीकृत चेकपोस्ट अटारी को तत्काल प्रभाव से बंद कर दिया जाएगा। जो लोग वैध अनुमोदन के साथ सीमा पार कर चुके हैं, वे 1 मई 2025 से पहले उस मार्ग से वापस आ सकते हैं।(3) पाकिस्तानी नागरिकों को (एसएएआरसी) वीजा छूट योजना वीजा के तहत भारत की यात्रा करने की अनुमति नहीं दी जाएगी। पाकिस्तानी नागरिकों को अतीत में जारी किए गए किसी भी एसवीईएस वीजा को रद्द माना जाएगा। एसवीईएस वीजा के तहत भारत में मौजूद किसी भी पाकिस्तानी नागरिक के पास भारत छोड़ने के लिए 48 घंटे हैं। (4) नई दिल्ली में पाकिस्तानी उच्चायोग में रक्षा, सैन्य, नौसेना और वायु सलाहकारों को अवांछित व्यक्ति घोषित किया जाता है। उनके पास भारत छोड़ने के लिए एक सप्ताह का समय है। (5) भारत इस्लामाबाद स्थित भारतीय उच्चायोग से अपने रक्षा, नौसेना और वायु सलाहकारों को वापस बुलाएगा। संबंधित उच्चायोगों में ये पद निरस्त माने जाएंगे। सेवा सलाहकारों के पांच सहायक कर्मचारियों को भी दोनों उच्चायोगों से वापस बुलाया जाएगा। 1 मई 2025 तक आगे की कटौती के माध्यम से उच्चायोगों की कुल संख्या को वर्तमान 55 से घटाकर 30 कर दिया जाएगा

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि पहलगाम पर्यटक हमला-35 वर्षों में पहली बार कश्मीर भी आतंकवाद के खिलाफ़ रोड पर उतरा- इंडियन आर्मी जिंदाबाद, हम हिंदुस्तानी है हिंदुस्तान हमारा है के नारे लगे।दहशतगर्दी के विरोधमें पूरा कश्मीर बंद सफ़ल-पहलगाम वासीसड़कों पर उतरे, विरोध प्रदर्शन किया-मस्जिदों के लाउड स्पीकरों में बंद में शामिल होने की अपीलें कश्मीरियों का साथ-पूरी दुनियाँ का हाथ-भारत की एक्शन पर तुरंत रिएक्शन की रणनीति लगातार चली तो नक्सलवाद की तरह आतंक वाद पर भी डेड लाइन 31 मार्च 2026 हो सकती है।

मारवाड़ी युवा मंच पर्ल महिला शाखा , सिकंदराबाद द्वारा अनाथ बच्चों को अल्पाहार दिया गया

जगदीश सीरवी

शाखा मंत्री सुमन घोड़ेला द्वारा प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार शाखा की अध्यक्षा शीतल जैन के नेतृत्व में वेस्ट मैरेडपल्ली स्थित ओरल फॉर डेफ्थ स्कूल में शाखा की सदस्या संतोषी जी कोठारी ने अपना जन्म दिवस अनाथ स्कूल के बच्चों के साथ केक कट करके मनाया , एवं बच्चों को समोसा ,चिप्स, कुल्फी खिलाकर उनके साथ मनोरंजन किया। और स्कूल में जरूर का सामान (मिक्सी) भी दिया गया।।55 बच्चों ने इसका लाभ लिया है। अवसर पर लाभार्थी परिवार का शाखा द्वारा सोल माला से सम्मान किया गया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में अनीता सुराणा, पुष्पा कोठारी, पूनम बोहरा, वीना जैन, मीना जैन, मोना वर्मा, संतोषी गूगलिया, खुशी कोठारी, चंदा मोदी, सरोज पौडवाल ,मंजू मखना, अर्चना बोरा ,ममता पवार, दुर्गा मालवीय, संजू सांखला, संतोष देवी आशा डफरिया, तन्मय वर्मा और अर्जुन वर्मा का सराहनीय सहयोग रहा।।शाखा कि सहमंत्री सुनीता डूंगरवाल ने सभी का आभार व्यक्त किया।।

प्रशांत सतपथी के परिवार के लिए आर्थिक सहायता की घोषणा, पत्नी को मिलेगी सरकारी नौकरी

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : आतंकवादी हमले में अपनी जान गंवाने वाले ओडिया लड़के प्रशांत सतपथी के परिवार को 5 लाख रुपये की वित्तीय सहायता मिलेगी। 20 लाख रु. उनकी पत्नी को सरकारी नौकरी मिलेगी और उनके बेटे की पढ़ाई का खर्च सरकार उठाएगी। इसके साथ ही अन्य सुविधाएं भी मुहैया कराई जाएंगी। मुख्यमंत्री मोहन माझी ने यह घोषणा की।प्रशांत का पार्थिव शरीर उनके गांव पहुंचने पर पूरा गांव शोक में डूब गया और मंत्रियों से लेकर मुख्यमंत्री मोहन चरण मांझी तक कई नेता प्रशांत को अंतिम श्रद्धांजलि देने पहुंचे। उनके साथ राज्य भाजपा अध्यक्ष मनमोहन सामल और कुछ अन्य पार्टी नेता भी थे। मुख्यमंत्री ने प्रशांत को श्रद्धांजलि अर्पित की। अंतिम दर्शन के दौरान मुख्यमंत्री स्वयं भावुक हो गए। मुख्यमंत्री ने ऐसी बर्बर घटना की कड़ी निंदा करते हुए शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की और वादा किया कि सरकार परिवार को हर संभव सहायता प्रदान करेगी।

जहरीले से जहरीला सांप पकड़ने में माहिर है राजकीय प्राथमिक पाठशाला बालक से रिटायर्ड मुख्य शिक्षक ईश्वर सिंह

बरवाला/ हिसार

जब भी किसी को किसी प्रकार का जहरीला जीव या कोबरा सांप दिखाई देता है तो लोग उन्हें मारने की तरफ दौड़ते हैं लेकिन बरवाला निवासी एवं राजकीय प्राथमिक पाठशाला बालक जिला हिसार से रिटायर्ड मुख्य शिक्षक ईश्वर सिंह जहरीले जीवों से भी इतना प्यार करता है कि वह उनको मारने की बजाय उन्हें पड़कर सुरक्षित स्थानों पर छोड़ने का कार्य कर रहे है, उन्होंने कहा कि जहरीले सांपों की भी अपनी एक विशेष जिंदगी होती है, प्रकृति के अंदर सभी जीवो को एक समान रूप से जीने का अधिकार है, यदि आज हम प्रकृति के साथ खिलवाड़ करेंगे तो आने वाले समय में अगर कोई भी जहरीला जीव लुप्त होता है तो यह प्रकृति के लिए भी खिलवाड़ होगा. उन्होंने आज पीएम श्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बालक जिला हिसार के स्कूल से एक किंग कोबरा सांप को पकड़ा, उन्होने कहा कि यह सांप बहुत ही खतरनाक है, जब स्कूल की टीम ने उनके पास फोन पर सूचित किया तो वह बिना देरी किये ही स्कूल में पहुंच गए. उन्होंने कहा कि जीव जंतुओं की रक्षा करना ही उनका कर्त्तव्य है. उन्होंने कहा कि वे निस्वार्थ भाव से यह सेवा कर रहे हैं.

ईश्वर सिंह, रिटायर्ड मुख्य शिक्षक

पहलगाम का काला दिन: जब वादियों में बहा लहू

यह शोक नहीं, यह शपथ है : आतंक के विरुद्ध भारत

22 अप्रैल 2025 का सूरज जब पहलगाम की वादियों में उतरा, तो किसी को नहीं पता था कि यह दिन खून से लाल हो जाएगा। हरी-भरी घाटियां, जहां सैलानी प्रकृति के रंगों में खोए थे, अचानक गोलियों की तड़तड़ाहट और चीखों से गूंज उठीं। यह आतंक का वह काला साया था, जो न सिर्फ मासूम जिंदगियों को लील गया, बल्कि हर भारतीय के दिल में गहरी चोट छोड़ गया। यह हमला सिर्फ एक जगह पर नहीं हुआ, यह हमारी एकता, हमारी शांति और हमारी मानवता पर वार था। लेकिन भारत, जिसकी रगों में सहनशीलता और साहस का लहू दौड़ता है, इस दर्द को अपनी ताकत में बदलेगा। यह कहानी सिर्फ शोक की नहीं, बल्कि उस अटल इच्छाशक्ति की है, जो हर तूफान में और मजबूत होती है।

उस दोपहर, जब लोग पहलगाम की ठंडी हवाओं में सुकून तलाश रहे थे, आतंकियों ने कायराना साजिश को अंजाम दिया। अंधाधुंध गोलीबारी, चुन-चुनकर किए गए हमले, और धर्म पूछकर मचाया गया कहर—यह सब कुछ मिनटों में एक खुशहाल घाटी को श्मशान में बदल गया। दर्जनों जिंदगियां खत्म हुईं—कोई अपने जीवनसाथी के साथ नई शुरुआत करने आया था, कोई परिवार के साथ हंसी-खुशी बांट रहा था, तो कोई अपने बच्चों के सामने आखिरी सांस ले गया। ये सिर्फ आंकड़े नहीं, ये वो कहानियां हैं जो अब कभी पूरी नहीं होंगी। एक मां की गोद सूनी हुई, एक बच्चे का बाप छिन गया, और एक पत्नी का सुहाग उजड़ गया। ये जख्म सिर्फ पहलगाम के नहीं, पूरे हिंदुस्तान के हैं।

यह हमला कोई आकस्मिक घटना नहीं थी। यह एक सुनियोजित साजिश थी, जिसके तार सीमा पार की उन ताकतों से जुड़े हैं, जो भारत की शांति और प्रगति को बर्दाश्त नहीं कर सकतीं। आतंकियों ने नकली वर्दियों में घुसपैठ की, रेकी की, और फिर उस जगह को निशाना बनाया जहां लोग सबसे ज्यादा निश्चिंत थे। उनका मकसद था कश्मीर की बढ़ती रौनक को मिटाना, पर्यटन की चमक को धूमिल करना, और भारत की एकता को तोड़ना। लेकिन वे भूल गए कि भारत का दिल इतनी आसानी से नहीं टूटता। यह वही धरती है, जिसने हर आघात को सहा है और हर बार और मजबूत होकर उभरी है।

हमले के बाद जो हुआ, वह भारत की ताकत का सबूत है। सुरक्षा बलों ने तुरंत मोर्चा संभाला, घाटी को घेरा, और आतंकियों की तलाश में कोई कोर-कसर बाकी नहीं छोड़ी। सैनिकों, पुलिस और अर्धसैनिक बलों ने जिस जज्बे से ऑपरेशन चलाया, वह दिखाता है कि भारत की रक्षा करने वाले कभी पीछे नहीं हटते। घुसपैठ की कोशिशें नाकाम की गईं, आतंकी ठिकानों पर छापे मारे गए, और खुफिया तंत्र को और तेज किया गया। यह त्वरित कार्रवाई सिर्फ प्रतिक्रिया नहीं, बल्कि उस रणनीति का हिस्सा है जो आतंक को जड़ से उखाड़ने के लिए प्रतिबद्ध है।

सरकार ने भी इस संकट में अपनी जिम्मेदारी निभाई। राहत कार्यों से लेकर घायलों के इलाज तक, और मृतकों के परिजनों को सहायता तक, कदम उठाए गए। लेकिन यह समय सिर्फ सरकारी कदमों की तारीफ करने का नहीं। सवाल उठते हैं—क्या खुफिया तंत्र और सतर्कता में अभी और सख्ती की जरूरत नहीं थी? क्या सीमा पार की साजिशों को पहले नहीं भांपा जा सकता था? ये सवाल इसलिए जरूरी हैं, क्योंकि हर भारतीय का भरोसा सरकार की नीतियों और उनकी अमल में लाने की क्षमता पर टिका है। आतंक के खिलाफ ज़ीरो टॉलरेंस की बातें अच्छी हैं, लेकिन असली इम्तिहान तब है जब ऐसी त्रासदियां रोकने की व्यवस्था पहले से तैयार हो।

पहलगाम का यह हमला सिर्फ एक जगह पर नहीं, बल्कि कश्मीर की आत्मा पर चोट है। यह वही कश्मीर है, जो पिछले कुछ वर्षों में शांति और समृद्धि की नई राह पर चल पड़ा है। पर्यटकों की बढ़ती भीड़, स्थानीय लोगों की मेहमाननवाजी, और विकास की नई किरणें—यह सब आतंकियों को खटकता है। वे चाहते हैं कि कश्मीर फिर से अंधेरे में डूब जाए। लेकिन कश्मीर के लोग, जो सदियों से हर तूफान में डटकर मुकाबला करते आए हैं, अब चुप नहीं रहेंगे। यह हमला उनकी मेहमाननवाजी और उनकी पहचान पर हमला है, और वे इसे कभी बर्दाश्त नहीं करेंगे।

इस दुख की घड़ी में देश एकजुट होकर खड़ा है। नेताओं, खिलाड़ियों, और आम लोगों ने एक स्वर में इस हमले की निंदा की। सोशल मीडिया पर गुस्सा और दर्द की लहर दौड़ रही है, लेकिन यह गुस्सा सिर्फ शब्दों तक सीमित नहीं। यह उस संकल्प का प्रतीक है, जो कहता है कि भारत आतंक को कुचलकर ही दम लेगा। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी इस हमले की गूंज सुनाई दी, जहां इसे मानवता के खिलाफ अपराध बताया गया। लेकिन सबसे जरूरी है कि हम इस दर्द को राजनीति का हथियार न बनने दें। टीवी डिबेटों की चीख-पुकार और दोषारोपण का खेल उन शहीदों का अपमान है, जिन्होंने अपनी जान गंवाई। हमें चाहिए कि हम एक राष्ट्र के रूप में खड़े हों, न कि बंटे हुए दलों के रूप में।

यह समय शोक का है, लेकिन यह समय संकल्प का भी है। सरकार ने राहत और सहायता का भरोसा दिया है, लेकिन असली न्याय तब होगा जब आतंक का हर रास्ता बंद हो। हमें ऐसी व्यवस्था चाहिए, जो आतंक को होने से पहले ही कुचल दे। हमें कश्मीर में शांति और समृद्धि को और मजबूत करना होगा, ताकि आतंक की कोई गुंजाइश न रहे। स्थानीय युवाओं को मुख्यधारा से जोड़ने, पर्यटन को बढ़ावा देने, और सीमा पर सतर्कता बढ़ाने के लिए और ठोस कदम उठाने होंगे।

भारत का इतिहास गवाह है कि हमने हर मुश्किल को अपनी ताकत बनाया है। पहलगाम की यह त्रासदी हमें तोड़ने की कोशिश थी, लेकिन यह हमें और मजबूत करेगी। यह आग, जो हमारे सीने में जल रही है, आतंक के हर चेहरे को जलाकर राख कर देगी। हमें विश्वास है कि हमारी एकता, हमारा साहस, और हमारा संकल्प आतंक को जड़ से मिटा देगा। यह उन मासूमों को सच्ची श्रद्धांजलि होगी, जिन्होंने अपनी जान गंवाई। आज हम शोक में डूबे हैं, लेकिन कल हम और मजबूत होकर उठेंगे। क्योंकि हम भारत हैं—एक ऐसी धरती, जो हर जख्म से नई ताकत पैदा करती है। आतंक का यह साया हमारी रोशनी को नहीं छीन सकता। हम एक साथ चलेंगे, एक साथ लड़ेंगे, और एक साथ जीतेंगे। जय हिंद।

-प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

कश्मीर में आतंकी हमला हमारे भाईचारे व एकजुटता पर प्रहार है

हरिहर सिंह चौहान

हमारा देश भारत जो कन्याकुमारी से कश्मीर तक है, इसकी संस्कृति तहजीब एकजुटता व भाईचारे सौहार्द से दुनिया भी मुरीद हैं भारत की तभी तो दुश्मनों की नजर हमारे कश्मीर को लग गई है। जम्मू कश्मीर की यहां केशर की क्यारियां में जो सकारात्मक ऊर्जा आ रही थी। वह एक बार फिर आतंक ने अपना खेल दिखा दिया। आज़ादी के इतने वर्षों के बाद जब जम्मू कश्मीर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का स्वाद चख रहा था। तभी काफिरों ने ऐसा साया फैला दिया। अब शब्द जो मौन हो गये। ऐसी खौफनाक मौत उन बहन बेटियों व महिलाओं व छोटे छोटे बेटियों बेटों ने मौत को समाने देखी । आज वह सुहागन स्त्रियों का सुहाग उनके समाने आतंकवादियों उजड़ दिया। उन विधवाओं ने जो देखा उनकी सात पुस्ते भी डर व भय में जिएंगे। बहुत हो चुका अब पड़ोसी दुश्मन पकिस्तान को आर पार की लड़ाई में जबाब देना होगा। निहत्थे लोगों को धर्म के आधार पर मरने वाले इन आतंकी को नेस्तनाबूद कर देना चाहिए। अपने देश भारत के लोग आतंक के काले साये के तले कब तक दबे रहेंगे। जम्मू कश्मीर के पहलगाम जो पर्यटकों से इन दिनों ज्यादा आबाद क्षेत्र रहता है। जिसके दम पर कश्मीर के स्थानीय लोगों को रोजगार मिलता है। एक और डल झील और पहलगाम सोनमर्ग बलटाल आदि क्षेत्रों में पर्यटन के लिए सबसे ज्यादा प्रभावित क्षेत्र रहता है। लेकिन बेगुनाह लोगों को पर्यटकों को मौत के घाट उतारने वाले नापाक इरादें रखने वालों ने बहुत कायराना हरकत की है।एक खुशहाल राज्य जम्मू-कश्मीर पर पहलगाम हमला एक काला दाग़ है। जो बहुत सालों तक नहीं मिटने वाला है। कश्मीर का लाल चौक में तिरंगा जो शान से लहराया रहा है लेकिन वह की फिजा में अब ना जाने कैसी हवा चल रही है ? ऐसा ना हो इन पर्यटकों की चहल-पहल खत्म ना हों जाये। इसकी चिंता करते हुए राज्य सरकार व भारत सरकार को मिलकर लोगों की सुरक्षा की मज़बूत व्यवस्था करनी चाहिए। जिससे यहां का करोबार बर्बाद ना हो जाए। कुछ साल पहले ही कश्मीर ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को सही अर्थों को करीब से देखा । वही कश्मीर के लोगों ने ज़ीना सीखा तब पड़ोसी दुश्मन देश के यह काले नाकबपोश आतंकीयो ने उन पर कहार बरपा । पहलगाम हमलें में आज देखने को मिला कि मौत बहुत सस्ती है। जब सुहागन महिलाओ के समाने उनके सुहाग को गोली मर दी और जब अपने पति के शव को देखकर रोती रही। इस बार आतंक ने धर्म को देखकर मौत दी । ऐसा लगता है हमारी एकता भाईचारे व भारतीय संस्कृति पर यह प्रहार किया आतंकवादियों ने। इन्हें सबक सिखाने का सही वक्त है। पाकिस्तान में बेठे इन आतंकवादियों के आकाओं को खत्म करना होगा। अब भारत की बात पर मुहर भी लग गई की धर्म के नाम भारत नहीं बांटता। हम भारतीयों को बांटने का काम दुश्मन देश पाकिस्तान और उनके यह आतंकी करते हैं। पहलगाम हमलें से उन नापाक लोगों के चेहरे समाने आ गये है। भारत कभी भी यह नहीं चाहता कि यहां का नागरिक आपास में लड़ें। हमें आपास में लड़ने की साज़िश दुश्मन कर रहा है। जम्मू कश्मीर के विकास व अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के पंख लगाने के बाद कुछ देश द्रोही लोग भी हैं जो उनका साथ अभी भी दे रहे हैं। हिन्दुओं को निकल निकल कर मारने वाले लोग इंसान नहीं बल्कि जानवर से भी गये बीते थे। मानवीय मूल्यों को धराशाई करने वाले ऐ आतंकवादीयो को चून चून कर मारने का समय अब आ गया है। बिहार में जनसभा में भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने साफ साफ कहें दिया अब जैसे को तैसा जबाब दिया जायेगा। अब भारत मकबुल जबाब देने की तैयारी में है। हमारे देश की एकता को खण्डित करने वाले इन आतंकी को मिटा देने का वक्त आ चुका है। सौहार्दपूर्ण वातावरण को खुशहाल जीवन को मिटाने वाले मानवीय मूल्यों को धराशाई करने वाले भारत के दुश्मन देश अब क्या बड़ा होगा वह जरूर देखेगा। अब भारत की ताकत विश्व देखेगा। कब तक हम सत्य अहिंसा भाईचारे से संवादों से मैत्रीपूर्ण संबंध रखे। जबकि वह आतंकवाद का बदनुमा चेहरे से लिप्त पाकिस्तान को सीधी बात समझ में नहीं आती है।अब भारत ईट का जवाब पत्थर से देने ही होगा।

झारखंड के मंत्री हाफिजूल अंसारी को मंत्रिमंडल से बर्खास्त करने हेतु भाजपा का प्रदर्शन

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची , झारखंड सरकार के मंत्री हफिजुल अंसारी के बिगड़े बोल सिरिया कानून को लेकर दी गयी ब्यक्तव्य पर भाजपा ने राज्य भर में किया प्रदर्शन एवं राज्यपाल के नाम ज्ञापन भी सौंपा । जिसमें मंत्री हाफिजूल को मंत्रिमंडल से बर्खास्त करने के नारे लगाए एवं मंत्री पद से हटाने लिखित शिकायत की गयी ।

राजधानी रांची मे पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी के नेतृत्व में राज्य पाल संतोष गंगवार को जहां ज्ञापन सौंपी गयी वहीं दोनों सिंहभुम में पूर्व मुख्यमंत्री मधु कोड़ा , पूर्व सांसद गीता कोड़ा , सांसद विद्युत वरण महतो ,विधायक गण समेत हर जिले के नेताओं ने अलग अलग ज्ञापन सौंपा । सरायकेला में भी अनुमंडल पदाधिकारी को राज्यपाल के नाम ज्ञापन सौंपी गयी । जिसमें जिला स्तर के भाजपाई का जमावाड़ा सरायकेला एस डी ओ के कार्यालय में देखा गया ।

बाबूलाल मरांडी के नेतृत्व में उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार से जा कर मुलाकात कर ज्ञापन सौंपा . वहीं राज्यपाल ने भाजपा प्रतिनिधिमंडल को आश्वासन दिया कि वे मुख्यमंत्री से बात करेगें बाबू लाल मरांडी ने कहा कि भारत की जनता ने बाबा साहब अम्बेडकर के संविधान को अंगीकार किया है.परंतु संविधान की शपथ लेकर मंत्री बने हफीजुल अंसारी राज्य में शरिया कानून के तहत शासन चलाने की बात कर रहें हैं. मामले में संविधान की बात करने वाले कांग्रेस झामुमो व राजद के लोग मौन हैं और सरकार के मंत्री खुलेआम संविधान की अवमानना कर रहे हैं. अंसारी ने अपने दिल की बात को जाहिर करते कहा कि पहले शरियत उनके दिल में है. फिर संविधान उनके हाथ में रहता है. उन्होंने कहा कि झारखंड को संविधान से चलाना मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की जिम्मेवारी है और अगर किसी को शरिया ज्यादा पसंद है तथा वह उसके हिसाब से चलना चाहते हैं, तो उसे मंत्रिमंडल से बाहर किया जाना चाहिए.

भाजपा सभी जिलों में राज्य सरकार के मंत्री हफीजूल हसन की बर्खास्तगी की मांग को लेकर प्रदर्शन किया और उपायुक्त के माध्यम से राज्यपाल के नाम ज्ञापन भी सौंपा . पूर्व में निर्णय लिया गया था कि जबतक हफीजुल का इस्तीफा हीं लिया जायेगा, भाजपा चुप नहीं बैठेगी. इससे पहले हजारों की संख्या में भाजपा नेता-कार्यकर्ता शहीद चौक से राजभवन तक मार्च करते हुए हेमंत सरकार विरोधी नारे लगाए. भाजपा द्वारा इस दौरान राज्य में शरिया कानून नहीं चलेगा और न ही भाजपा बाबा साहब का अपमान सहेगा. हिंदुस्तान-भारत में रहना है तो संविधान मानना ही होगा. संविधान विरोधी गठबंधन गद्दी छोड़ो. हेमंत सोरेन गद्दी छोड़ो तुष्टीकरण नहीं चलेगा. मंत्री हफीजूल हसन को बर्खास्त करो जैसे नारे लगाया जा गये .

उधर सिंहभूम पश्चिमी में मंत्री हफीजुल हसन के संविधान को लेकर दिए बयान पर पूर्व मुख्यमंत्री मधु कोड़ा और पूर्व सांसद गीता कोड़ा ने प्रतिक्रिया दी है. उन्होंने कहा कि यह ना केवल शर्मनाक है, बल्कि सीधे-सीधे देश की संप्रभुता और लोकतांत्रिक व्यवस्था पर हमला है.

पूर्व मुख्यमंत्री मधु कोड़ा ने तीखी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जो मंत्री शपथ लेकर संविधान की रक्षा की जिम्मेदारी लेते हैं, वे अब उसे पैरों तले रौंद रहे हैं. यह सीधा राष्ट्रद्रोह है.

प्रदेश प्रवक्ता अमरप्रीत सिंह काले ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा, "मंत्री का यह वक्तव्य केवल भारतीय संविधान का अपमान नहीं है, बल्कि यह देश की एकता, अखंडता और लोकतांत्रिक मूल्यों पर सीधा प्रहार है. संवैधानिक पद पर बैठा कोई व्यक्ति यदि संविधान की मर्यादा को चुनौती देता है, तो वह उस पद के योग्य नहीं रह जाता."

प्रतिनिधिमंडल में शामिल प्रदेश भाजपा के कार्यकारी अध्यक्ष रविंद्र कुमार राय ने कहा कि भाजपा ने एक देश में दो विधान का विरोध अपने स्थापना काल से किया है. राज्य में शरिया से शासन चलाने की साजिश करने वालों को पार्टी बर्दाश्त नहीं करेगी. केंद्रीय मंत्री अन्नपूर्णा देवी ने कहा कि राज्य सरकार तुष्टिकरण में आकंठ डूबी है. वोट बैंक की राजनीतिक परिणाम है कि संविधान की शपथ लेकर मंत्री बनने वाले संविधान की अवमानना करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं. केंद्रीय राज्य मंत्री संजय सेठ ने कहा कि शासन प्रशासन को शरिया के हिसाब से चलाने की सोच रखने वालों का प्रजातंत्र में कोई स्थान नहीं है. पूर्व प्रदेश अध्यक्ष सह सांसद दीपक प्रकाश ने कहा कि धर्म के आधार पर देश का विभाजन कराने की मानसिकता के लोग आज भी देश में शरिया कानून का का सपना देख रहे हैं.

झारखंड के पंद्रह डीईओं के वेतन पर निदेशक ने लगाई रोक

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची , झारखंड के रांची , सरायकेला , दोनो सिंहभूम समेत पंद्रह जिलों के जिला शिक्षा पदाधिकारी पर अप्रैल के वेतन पर रोक लग चुकी है । माध्यमिक शिक्षा निदेशक राजेश प्रसाद ने इन सभी जिला शिक्षा पदाधिकारियों को कारण बताओ नोटिस जारी कर तीन दिनों में ज़बाब तलब किया है ।

इन सभी जिलों के डीइओ से पूछा गया है कि क्यों नहीं आपके इस कार्य के लिए अनुशनात्मक कार्रवाई आरंभ किया जाए? माध्यमिक शिक्षा निदेशालय द्वारा जिलों को भेजे गये पत्र में कहा गया है कि निदेशालय द्वारा शिक्षकों के वेतन भुगतान को लेकर राशि उपलब्ध कराये जाने के बाद भी वेतन नहीं दिया गया. माध्यमिक शिक्षा निदेशालय द्वारा सात अप्रैल को ही राशि आवंटन से संबंधित पत्र सभी जिलों को भेज दिया गया था. यद्यपि 23 अप्रैल की शाम 5:00 बजे तक कोषागार से राशि की निकासी नहीं की गयी थी.

पर पंद्रह जिले रांची, खूंटी, गुमला, लोहरदगा, प सिंहभूम, पूर्वी सिंहभूम, सरायकेला, पलामू, चतरा, रामगढ़, गिरिडीह, गोड्डा जामताड़ा, पाकुड़ और साहिबगंज शामिल के डिईओं के वेतन पर रोक लगी है ।

आतंकवाद ,एक बहुत ही संवेदनशील और जटिल मुद्दा है.....

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह

किसी एक समाज विशेष पर सीधा आरोप लगाना अक्सर अनुचित और अन्यायपूर्ण हो सकता है, क्योंकि आतंकवाद और अपराध किसी एक समुदाय या धर्म के लिए विशिष्ट नहीं होते हैं।

तथ्यों की जांच,आरोप लगाने से पहले तथ्यों की जांच करना और सुनिश्चित करना कि आरोप सही हैं। निष्पक्ष रहना और किसी एक समुदाय या धर्म के प्रति भेदभाव नहीं करना।

सहानुभूति के साथ समझने की कोशिश करना कि आतंकवाद और अपराध के पीछे क्या कारण हो सकते हैं।समाधान की दिशा में,संवाद,समुदायों के बीच संवाद को बढ़ावा देना और समझने की कोशिश करना।

शिक्षा और जागरूकता, लोगों को आतंकवाद और अपराध के खतरों और इसके प्रभावों के बारे में शिक्षित करना।

न्याय और समानता, न्याय और समानता को बढ़ावा देना और सुनिश्चित करना कि सभी समुदायों के साथ न्यायपूर्ण व्यवहार किया जाए।

आतंकवाद और अपराध के मुद्दे पर हमें निष्पक्ष और सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

आतंकवाद को एक समाज या जाति विशेष के नाम से जोड़ना और उन्हें दोषी करार देना न्यायसंगत नहीं है।

मीडिया की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है, लेकिन उन्हें भी जिम्मेदारी से काम करना चाहिए। मीडिया को आतंकवाद के मुद्दे पर रिपोर्टिंग करते समय सावधानी बरतनी चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनकी रिपोर्टिंग से समाज में तनाव न बढ़े।

लोगों को आतंकवाद के खतरों और इसके प्रभावों के बारे में शिक्षित करना और उन्हें इसके खिलाफ लड़ने के लिए प्रोत्साहित करना।

समुदायों के साथ मिलकर काम करना और उन्हें आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में शामिल करना।

आतंकवाद एक जटिल समस्या है, जिसके लिए एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है। हमें आतंकवाद के कारणों को समझना और उन्हें दूर करने के लिए काम करना चाहिए।

सरकार को आतंकवाद के मुद्दे पर सख्त कदम उठाने चाहिए, लेकिन यह सुनिश्चित करना भी महत्वपूर्ण है कि ये कदम न्यायसंगत और मानवाधिकारों के अनुरूप हों। यहाँ कुछ सुझाव दिए गए हैं

पुलिस और खुफिया एजेंसियों को मजबूत करना और उन्हें आतंकवादी गतिविधियों की पहचान करने और उन्हें रोकने के लिए प्रशिक्षित करना।

आतंकवाद से निपटने के लिए एक मजबूत कानूनी ढांचा बनाना, जिसमें आतंकवादी गतिविधियों को परिभाषित करने और उन्हें दंडित करने के लिए स्पष्ट प्रावधान हों।

समुदायों के साथ मिलकर काम करना और उन्हें आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में शामिल करना।

लोगों को आतंकवाद के खतरों और इसके प्रभावों के बारे में शिक्षित करना और उन्हें इसके खिलाफ लड़ने के लिए प्रोत्साहित करना।आर्थिक विकास और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने से आतंकवाद के मूल कारणों को कम करने में मदद मिल सकती है।

सरकार को इन कदमों को उठाने के साथ-साथ यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि मानवाधिकारों का सम्मान किया जाए और अल्पसंख्यक समुदायों के साथ भेदभाव न किया जाए।

आओ हम पेड़-पौधों से मुहब्बत करें, हरियाली को बढ़ाएं,

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह

हरियाली यानी पेड़ों और पौधों का महत्व हमारे जीवन के लिए बहुत अधिक है। पेड़ और पौधे हमें ऑक्सीजन प्रदान करते हैं, वायु प्रदूषण को कम करते हैं, और जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित करने में मदद करते हैं। इसके अलावा, पेड़ और पौधे हमें फल, सब्जियां, और अन्य आवश्यक संसाधन प्रदान करते हैं।

पेड़ और पौधे हमें ऑक्सीजन प्रदान करते हैं, जो हमारे जीवन के लिए आवश्यक है। पेड़ और पौधे वायु प्रदूषण को कम करने में मदद करते हैं, जिससे हमारी सेहत बेहतर होती है।

पेड़ और पौधे जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित करने में मदद करते हैं, जिससे हमारे पर्यावरण को बचाया जा सकता है।पेड़ और पौधे हमें फल और सब्जियां प्रदान करते हैं, जो हमारे आहार के लिए आवश्यक हैं।

हम अपने आसपास के क्षेत्र में पेड़ लगा सकते हैं और उनकी देखभाल कर सकते हैं। हम अपने घर में पौधे लगा सकते हैं और उनकी देखभाल कर सकते हैं। हम दूसरों को हरियाली के महत्व के बारे में जागरूक कर सकते हैं और उन्हें पेड़ लगाने और पौधों की देखभाल करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। हरियाली यानी पेड़ों और पौधों का महत्व हमारे जीवन के लिए बहुत अधिक है। हमें पेड़ लगाने और पौधों की देखभाल करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, ताकि हम अपने पर्यावरण को बचा सकें और अपने जीवन को बेहतर बना सकें। आओ हम पेड़-पौधों से मुहब्बत करें, हरियाली को बढ़ाएं, जीवन को बचाएं, और खुशहाल बनाएं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023